जय गुरुजी

मेरे गुरुजी की महिमा

मेरे गुरुजी की महिमा

लेखक सेवादार: मधु मदान
अनुवादक सेवादार: गज़ल हंस

मात पिता तुम मेरे
गाँवा दिन रात गुण तेरे

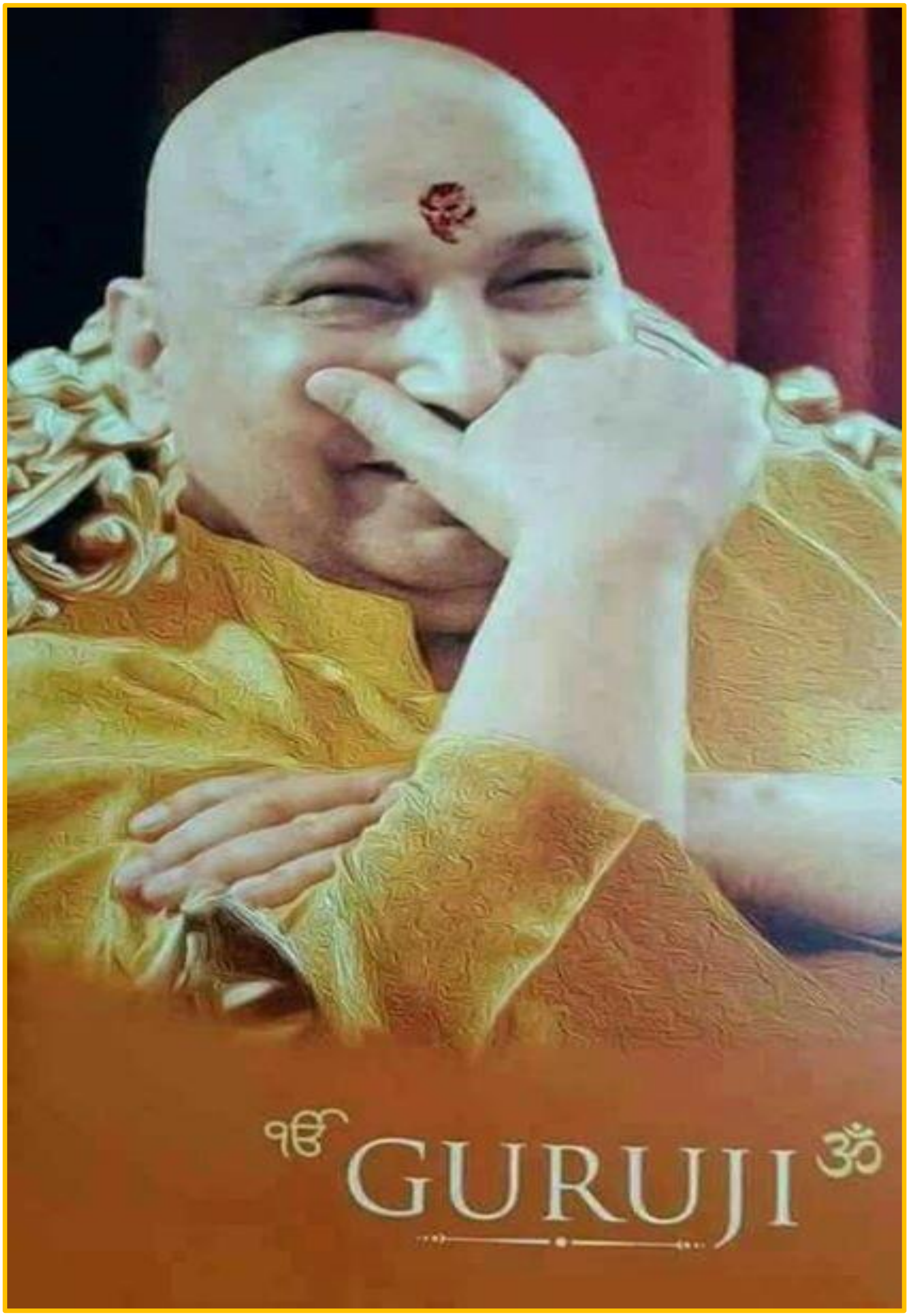
ੴ
GURUJI
ॐ

विषय – सूची

प्रस्तावना

- एक धन्य डायरी (मेरे सत्संग को संकलित करने के लिए गुरुजी का हुकुम) 1
- बड़े मंदिर में मेरी पहली यात्रा 3
- पहली बड़े मंदिर यात्रा के बाद दर्शन और विशेष अनुभव (पहली रात पर) 6
- मेरी बेटी पर गुरुजी की मेहर! 7
- गुरुजी के मुस्कराते हुए स्वरूप की इच्छा 9
- गुरु कृपा से सर्वोत्तम नौकरी 11
- मेरे व्यावसायिक जीवन में गुरूजी की असीम कृपा 13
- **गुरुजी का प्रभाव 15**
- आरती की थाली 16
- गुरूजी के आशीर्वाद का प्रतीक: दिव्य गणेश प्रतिमा 18
- करवाचौथ पर मुझे गुरुजी ने कैसे आशीर्वाद दिया 20
- गुरुजी ने मेरे पति के पीठ दर्द को ठीक किया 23
- **गुरुजी और मेरा प्यार 25**
- दयालु गुरूजी महाराज की कृपा से घर का हीटर ठीक हुआ 26
- लंगर प्रसाद और सेवा से जोड़ों का दर्द गायब हुआ 27
- **नये साल की पहली अमृतवेला 29**
- खरीदारी में मेरे साथ - मेरी सबसे अच्छी खरीदारी 31
- गुरूजी हमें स्वस्थ करते हैं जब हम उनके लिए नृत्य करते हैं 32

- गुरूजी का पलक झपकाना: आशीर्वाद का प्रतीक 33
- हमारी शादी की सालगिरह पर गुरुजी का अद्भुत आशीर्वाद। 34
- **सालगिरह पे गुरूजी के लिए खास 36**
- मेरे व्यवसायी जीवन में गुरुजी का आशीर्वाद 37
- गुरुजी के जल प्रसाद और मन्त्र जाप में शक्ति 38
- 3 में 1 दिव्य स्वरूप (शिवजी-गुरुजी-गुरु नानक देवजी) 39
- गुरुजी की दिव्य ज्योत 42
- गुरुजी की दिव्य सुगंध-अनोखा संरक्षण 43
- गुरुजी के आशीर्वाद से जन्मदिन बना सबसे मनोहर और यादगार 45
- **मेरी चाहत - मेरे गुरुपा, मेरे गुरुजी 46**
- गुरूजी के संरक्षण में (कैसे गुरूजी ने मुझे बचाया) 47
- गुरुजी से अमृतवेला में संदेश 48
- गुरूजी से जन्मदिवस का उपहार 49
- **तू मेरा रब, तू मेरा साईं 50**
- गुरूजी और उनकी अद्भुत योजनाएँ 51
- गुरुजी के आशीर्वाद से यात्रा बनी तीर्थ यात्रा (सबसे यादगार) 53
- गुरुजी ने रास्ते को बाधा मुक्त बना दिया 58
- हमें गुरुजी का बुलावा - छोटे मंदिर में 60
- कैसे गुरुजी हमारी छोटी छोटी इच्छाओं को भी पूरा करते हैं 62
- गुरुजी समय नियंत्रित करते हैं : एक अविश्वसनीय आशीर्वाद 64
- चमत्कारी उपचार 65

- गुरुजी नकारात्मकता / बुरी शक्तियों को दूर करते हैं 68
- गुरूजी की कृपा से रिश्ते में तनावों से मुक्ति 71
- **न छोड़ना मेरा हाथ गुरूजी 73**
- गुरूजी के चरन कमल स्वरुप 74
- गुरूजी अपने स्वरूप से उत्तर देते हैं 75
- गुरुजी केवल भाव को देखते हैं और वे इसे स्वीकार भी करते हैं 76
- गुरुजी का आशीर्वाद: प्रस्तुतीकरण में सजीवता 77
- कार की खरीद में गुरुजी का आशीर्वाद 78
- गुरुजी: हमारे पिता, हमारे रक्षक और जीवन दाता। 80
- मेरे यात्रा कार्ड पर गुरुजी की मेहर 82
- इस पुस्तक के दौरान गुरूजी की प्रेरणा, मेहर और मार्गदर्शन 85
- आभारव्यक्ति 85

प्रस्तावना

मैं अपने रब, मेरे देवता, पिता और अपने सबसे प्रिय एवं आदरणीय गुरूजी के सम्मान में इस पुस्तक को लिखना शुरू कर रही हूं। यह पुस्तक 'मेरे गुरुजी की महिमा' मेरे सत्संगों (धन्य अनुभवों) को पाठकों के साथ साझा करने का मेरा सच्चा और ईमानदार प्रयास है। इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य सकारात्मकता फैलाना और गुरुजी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता अर्पित करना है। इस पुस्तक रूपी आशीर्वाद के लिए गुरुजी को शुकराना।

गुरुजी की महिमा के बारे में लिखना असंभव है। मैं सब भक्तों को केवल इतना बताना चाहती हूँ कि गुरुजी कितने दयालु हैं और उनकी महिमा और कृपा कितनी अविश्वसनीय है। मै आशा करती हूँ कि इन सत्सगों से पाठकों को गुरुजी पर पूर्ण विश्वास रखने और उनसे बिना शर्त प्यार करने की प्रेरणा मिलेगी।

मैं अपनी बहन मंजू भाटिया को धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने मुझे जीवन का सबसे बड़ा उपहार दिया और मुझे गुरुजी से जोड़ा। इस अद्भुत आध्यात्मिक यात्रा में मेरा समर्थन करने के लिए मेरी मां को मेरा अनन्त प्यार।

किसी भी सत्संग को साझा करना हमेशा एक सुखदयी अनुभव होता है क्योंकि यह गुरुजी को शुक्राना करने का, सब के साथ आशीर्वाद साझा करने का और उन सुनहरे पलों को ताज़ा करने का एक अवसर प्रदान करता है। गुरुजी ने अपने भक्तों को अपने अनुभव (जिन्हें सत्संग कहा जाता है) साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया क्योंकि यह किसी की मदद कर सकता है। गुरुजी ने कहा कि जो लोग सत्संग साझा करते हैं और जो सत्संग सुनते हैं वे दोनों ही सौभाग्यशाली हैं और गुरुजी के आशीर्वाद और उनकी कृपा के पात्र हैं॥

मैंने दुनिया भर की संगतों के सत्संगों को सुनकर और पढ़कर बहुत ताकत हासिल की है और हमेशा सकारात्मक महसूस किया है। मुझे पूरी उम्मीद है कि इन सत्संगों को पढ़ाकर गुरुजी आप सभी को भी बहुत आशीर्वाद देंगे।

मुझे आशा है कि गुरुजी इन सत्संगों के माध्यम से आपका मार्गदर्शन करेगे। मैं यह भी आशा करती हूं कि ऐसे सत्संगों को पढ़कर हमारा वैश्विक गुरुपरिवार और संगत समुदाय बड़ेगा । मैं गुरुजी और आप सभी से इस पुस्तक के दौरान अनजाने में हुई गलतियों के लिए माफी माँगती हूँ ।

सबसे पहले उनके प्यार के लिए ओर इस पुस्तक की प्रेरणा स्रोत बनने के लिए हमारी सबसे प्यारी अविनाश आंटी जी को मेरा हार्दिक प्यार भरा धन्यवाद। वह मुझे गुरुजी द्वारा माँ के रूप में ब्लैस की गई हैं। प्यार ओर ईमानदार सेवा की देवी मेरी प्रिय अविनाश आंटी जी के प्रति मैँ बहुत आभारी हूं।

महत्वपूर्ण ज़रिया बनने के लिए जोय आंटी, अलका आंटी और सुनंदन अंकल के लिए मेरा हार्दिक आभार । डिंपल रूपानी और आरती कपूर आंटी को (अपनी किताबों के माध्यम से प्रेरणा के लिए), नीती चोपड़ा आंटी को उनके प्रोत्साहन के लिए, पवन और आरुषि को उनके समर्थन , और पूरे ब्रिटेन के वेस्ट मिडलैंड्स गुरुपरिवार को उनके प्यार के लिए मेरा दिल की गहराई से प्यार और धन्यवाद।

गजल हंस आंटी को उनकी बहुमूल्य अनुवाद सेवा के लिए हार्दिक धन्यवाद और गहरा आभार। अनुवाद मे सहयोग के लिए मानस अंकल, शिवांगी आँटी, रोहित अंकल को बहुत धन्यवाद।

इस पुस्तक में मेरी मदद करने के लिए मैं संज्योति आँटी की भी आभारी हूँ।

सोनिया कथूरिया आँटी के प्यार ओर समर्थन के लिए आभार व गहरी कृतज्ञता।

इसके अलावा गौरव कुमार अंकल का योगदान भी सराहनीय है और मैं उनकी ईमानदार सेवा और सहयोग के लिए आभारी हूं।

इस पुस्तक में मेरी मदद करने और उनके अनमोल सहयोग के लिए के लिए मेरे भाई सुनील अरोड़ा की मै बहुत आभारी हूँ । उनके बिना शायद यह किताब संभव नहीं होती।

पूरी विनम्रता में, शुरू करने से पहले, मैं यह कहना चाहूंगी कि गुरुजी की कृपा की अभिव्यक्ति, उनके शिष्यों के प्रति उनके प्रेम को व्यक्त करना और उनकी महिमा का शब्दों मे वर्णन करना असंभव है।

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।

सबसे प्रिय, पूजनीय एवं आदरणीय गुरूजी,
ब्रह्मांड के विधाता और रचयिता को समर्पित

सूरज भी तूँ, चँदा भी तूँ, मेरी इन आँखों का तारा है तूँ;
गुलाब भी तूँ, मोर भी तूँ, इस जग में सबसे प्यारा है तूँ।

एक धन्य डायरी: (मेरे सत्संग को संकलित करने के लिए गुरुजी का हुकुम)

जब मै बर्मिंघम (इंग्लैंड) मे थी तब 2018 मे गुरूजी ने मुझे दिल्ली बुलाया था। बड़े मंदिर में मेरी पहली यात्रा पर मैंने गुरुजी की उपस्थिति को महसूस किया और पाया कि मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया जा रहा है।

मैंने महसूस किया कि हर दिन एक सत्संग है जब आप उनकी शरण में हैं और उनकी कृपा के अनगिनत अनुभव हैं। अक्सर, मैंने उन सत्संगों को एक डायरी में लिखने की और संकलित करने की आवश्यकता महसूस की, लेकिन मैं सुनिश्चित नहीं थी कि गुरुजी चाहते है कि मैं उन्हें लिखूँ या उन्हें सत्संगो मे सुनाऊं (इंग्लैंड मे साप्ताहिक / मासिक सत्संग हुआ करते है) ।

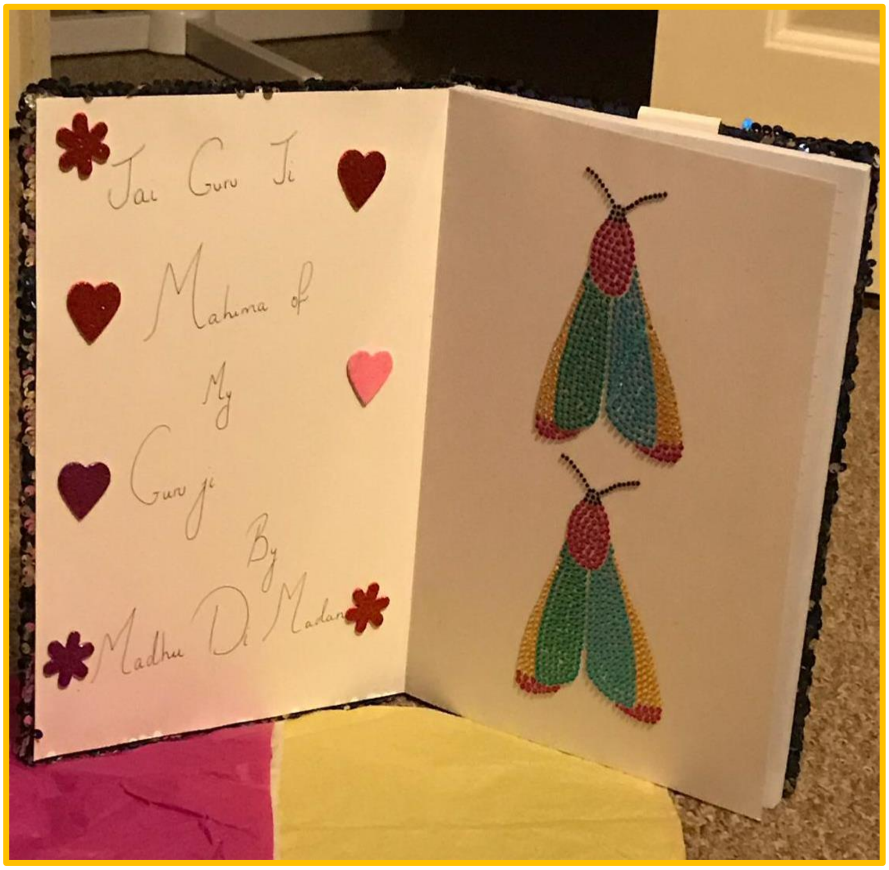

मार्च 2019 में, मैंने गुरुजी से प्रार्थना की, अगर उन्होंने आशीर्वाद दिया मुझे एक डायरी के साथ, मैं इसको उनका संकेत समझूंगी कि वह चाहते है कि मैं अपने सत्संगों को लिखूँ । मुझे अपनी प्रार्थना का अद्‌भुत उत्तर मिला ।

मैने मध्य सितंबर मे दुबई और भारत जाने की योजना बनाई । मैं बडे मंदिर, डुगरी, छोटा मंदिर जाना चाहती थी और दुबई और भारत में रहने के दौरान अधिकतम सत्संगों में भाग लेना चाहती थी ।

31 अगस्त को अपनी दुबई यात्रा की योजना बनाते समय, मैने दुबई संगत को संपर्क किया ओर मुझे पता चला वहाँ गुरूजी से बहुत लोग जुड़े हुए है । मुझे यह जानकर खुशी हुई कि मैं दुबई में अपने 4 दिनों के प्रवास के दौरान 3 सत्संगों में जा सकूंगी । मैंने दुबई संगत को खुशी से पुष्टि की कि मैं गुरुजी का आशीर्वाद लेने के लिए उन 3 सत्संगों में भाग लूंगी । दुबई संगत चाहती थी कि मै अपने सत्संगों को उनके साथ साझा करूं । फिर मैंने मुख्य बिंदुओं को लिखना शुरू किया ताकि मुझे याद रहे कि किन सत्संगों को साझा करना है । इसने मुझे गुरुजी को डायरी के साथ आशीर्वाद देने के लिए याद दिलाया ।

जैसे मैं उनके स्वरूप के आगे बैठी, मैने उनको बोला कि आपके आशिर्वाद रुपी डायरी पाने की मेरी इच्छा अभी भी पूरी नहीं हुई है । अगर उनकी सहमती हो तो, मैं वास्तव में अपने सत्संगों को लिखना चाहती थी ।

उसी शाम को, मैंने एक सत्संग में भाग लिया, जहाँ एक संगत, जॉय आंटी ने सभा/ संगत को बताया कि गुरुजी के कहने पर उन्होंने मेरे लिए एक डायरी खरीदने के लिए महसूस किया था। गुरुजी ने उन्हें मधु के लिए डायरी सजाने के लिए भी कहा था ।

मुझे अपने सत्संग लिखने के लिए एक आशिर्वाद रुपी धन्य डायरी के रूप में गुरुजी से आज्ञा मिली। केवल इतना ही नहीं बल्कि गुरुजी ने मुझे 'मेरे गुरुजी की महिमा' नामक पुस्तक लिखने के लिए सेवा भी दी ।

गुरुजी ने पुस्तक को 'मेरे गुरुजी की महिमा' शीर्षक देने का संकेत दिया। जब मैंने वह सब सुना, तो मैं मंत्रमुग्ध थी क्योंकि मेरी वह इच्छा मेरे और गुरुजी के बीच थी।

यह एक स्पष्ट संकेत था कि गुरुजी चाहते थे कि मैं अपने सत्संगों को लिखना शुरू कर दूं। मुझे जानकर बहुत खुशी हुई कि जोय आंटी के रूप में गुरूजी ने संकेत दिया कि गुरुजी चाहते हैं कि मैं इसे एक पुस्तक के रूप में लिखूं, जिसका शीर्षक हो 'मेरे गुरुजी की महिमा'।

Just a little
something
for someone
Special

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

बड़े मंदिर में मेरी पहली यात्रा

2018 में, मैंने अपनी बड़ी बहन के व्यवहार और स्वभाव मे सकारात्मक/ बहुत अच्छा परिवर्तन देखा। मंजू (मेरी बहन) आंटी जो मुझे बहुत प्रिय है। जब उन्होंने मुझे बताया कि एक गुरुजी उनके ऐसे सकारात्मक स्वाभाव का कारण हैं, मैंने हँसते हुए कहा, “आप जैसी शिक्षित महिला कैसे किसी गुरु की शिकार बनी, यह गुरुजी कौन हैं?” उन्होंने मुझे बताया और बल्कि विनम्रता से मुझे उनके गुरूजी के बारे मे मजाक न करने की चेतावनी दी। इससे मुझे गुरुजी के बारे में और जानने की उत्सुकता हुई। उन्होंने मुझे बताया कि "गुरुजी शारीरिक रूप में नही है और एक मंदिर है " बडे मंदिर ‘’, जो दिल्ली में है, जो कि धरती पर स्वर्ग है और गुरुजी की उपस्थिति वहां महसूस होती है।

लगभग एक हफ्ते बाद, मुझे अपनी वार्षिक छुट्टी के लिए जुलाई भारत यात्रा की टिकट बुक करनी थी। अपनी बहन से बात करते हुए मैंने उन्हें भारत आने का बताया और कहा कि मैं भी बड़े मंदिर जाना चाहूंगी। उन्होंने मुझे बताया 7 जुलाई को गुरुजी का जन्मदिन होता है और वहाँ जन्मदिन का समारोह होता है । मैंने तब उन्हें बोला कि मैं 7 जुलाई को भी जा सकती हूँ। उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं एक सामान्य दिन में जाऊँ तकि मै दिव्य आभा को महसूस कर सकू चूंकि ७ जुलाई को बड़े मंदिर मे भीड़ होती है । मैं प्रेरित हो गयी ओर मैने जुलाई के पहले हफ़्ते की टिकट बुक की ताकि मैं ५ जुलाई को बडे मंदिर जा सकूँ और उसके बाद गुरुजी के जन्मदिन पर । यह सब गुरुजी का बुलावा था।

मैं 2 जुलाई (सोमवार) को दिल्ली पहुंची और 4 जुलाई को नोएडा मंजू आंटी (मेरी बहन) से मिलने गयी। मुझे उनके चेहरे पर चमक देखकर सुखद आश्चर्य हुआ और तब जब उन्होंने मुझसे कहा वह किसी भी फेस क्रीम का उपयोग नहीं कर रही। मुझे बताया गया कि गुरुजी की कृपा से उनके चेहरे पर गुरुजी का नूर चमक रहा है।

उन्होंने मुझे आगे बताया कि उनकी सभी शारीरिक बीमारियाँ दूर हो गई हैं और कहा कि पहले गुरजी आपकी शारीरिक बीमारी, फिर भावनात्मक ओर बाद मे आर्थिक स्थिति को ठीक करते है। तन-मन और फिर धन।

उनके चमकते चेहरे ने मुझे गुरुजी को आजमाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने मुझे गुरजी की सभी अच्छी बातें (उनके आशीर्वाद) के बारे में बताया और गुरुजी का एक स्वरूप दिया। अगर मैं सच कहूं तो मुझे तब कुछ भी महसूस नहीं हुआ (कोई कनेक्शन महसूस नही हुआ।) लेकिन मेरा अगले दिन बड़े मंदिर जाना निश्चित था।

मुझे पता चला, मेरे पति के चचेरा भाई नवीन तनेजा भी गुरुजी को बहुत मानते है ओर मुझे 5 जुलाई को उनके साथ, बड़े मंदिर जाने का सौभाग्य मिला। मैं मंदिर के अनुशासन, शांति और सुंदरता से बहुत प्रभावित थी ।

जब मैं मंदिर मे "चाय प्रसाद" का इंतजार कर रही थी, उस समय मेरे दिमाग मे बहुत तरह के विचार चल रहे थे। मैंने सोचा “गुरुजी, मुझे मंजू आ़टी और नवीन अंकल दोनों ने बताया है कि आप भक्तों के सवालों का जवाब देते है, आप उनसे बात करते हैं, आप मंदिर में मौजूद हैं और यह आपके और संगत का 1-1 कनक्शन होता है। इसलिए, कृपया मुझे दिखाएँ कि आप यहाँ हैं, और आप मेरी बात सुन रहे हैं। कृपया मुझे अपनी उपस्थिति दिखाएं ”।

जब ये विचार मेरे दिमाग में चल रहे थे, मैंने देखा अचानक से एक अजनबी महिला ने प्यारी सी मुस्कान के साथ मेरी तरफ देखा ओर, उन्होने चुपचाप से गुरुजी का लॉकेट स्वरूप मेरे हाथ में दे दिया ओर मेरी मुट्ठी बंद करदी। मुझे

गुरूजी ने अपनी उपस्थिति का इतना सुहाना एहसास दिलाया। मेरी आंखों में आंसू थे और मैं गदगद थी। ऐसा लगा जैसे गुरुजी ने मुझे स्वीकार कर लिया था।

गुरुजी ने मुझे उस दिन अपनी शरण में लिया, जो मेरे लिए नए जीवन की शुरुआत की तरह था। 5 जुलाई, जब मैं उनकी शरण में आई, वो मेरे जीवन का सबसे अच्छा दिन रहेगा।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

पहली बड़े मंदिर यात्रा के बाद दर्शन और विशेष अनुभव (पहली रात पर)

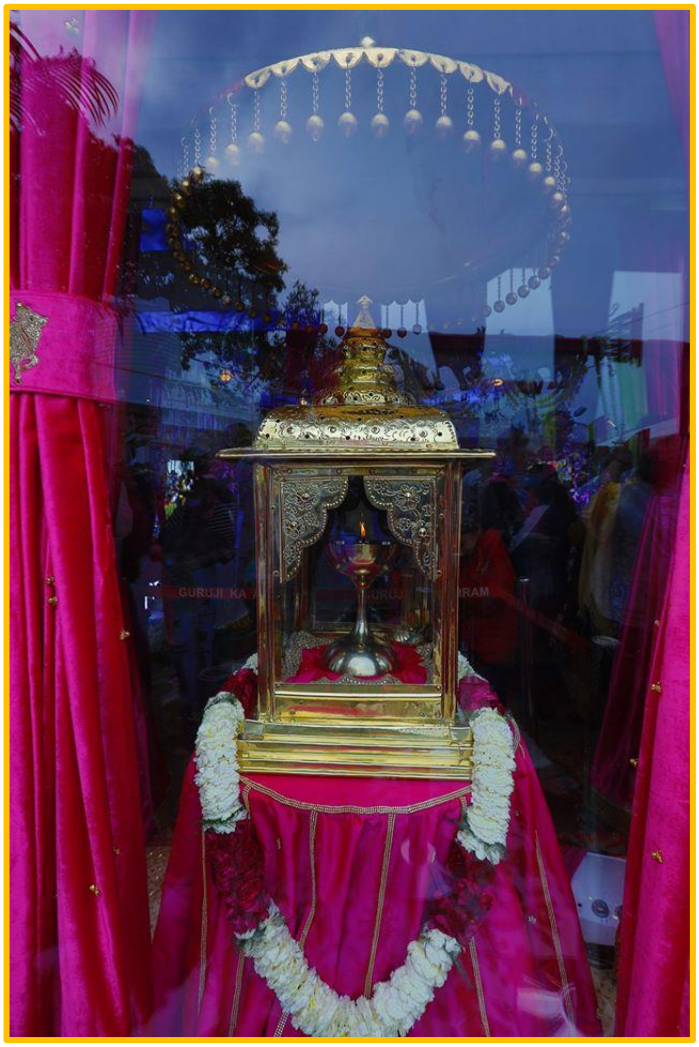

मुझे आशीर्वाद के रूप मे गुरूजी का लॉकेट (स्वरूप) मिलने पर बहुत खुशी हुई । मैं घर लौट आई और रात में जब मैं सोने लगी तो मेरा बहुत तेज़ सरदर्द होने लगा । वो बहुत बुरा था, इतना बुरा कि मैं पूरी रात सो नहीं सकी।

उसी रात, जब सोने का संघर्ष कर रही थी तो मैंने मच्छर भगाने वाले प्लग की रोशनी से मंदिर का रूप / आकार देखा। वह बहुत स्पष्ट था और यहां तक कि मैने अपने पति को भी दिखाया। मैंने उसे दो बार, तीन बार, और हर बार जब मैंने देखा, मैंने केवल एक अच्छा उज्ज्वल छोटा मंदिर देखा लेकिन मैं यह नहीं बता सकी कि मैं ऐसा क्यों देख रही थी। वो मंदिर बिल्कुल वैसा ही दिख रहा था जैसा चित्र मे यहां दिखाया गया है ।(यह बाडे मंदिर के अंदर से है)

जब मैं अगली सुबह उठी, मेरा सिरदर्द दूर हो गया था, और फिर कभी नहीं हुआ। पहले अक्सर मुझे सिरदर्द होता था (थकान या थायराइड के कारण) ।

मुझे यकीन है कि गुरुजी ने मुझे बलेस किया है और मुझे मेरी बिमारी से छुटकारा दिलाया है।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

मेरी बेटी पर गुरुजी की मेहर!

मैं अपने मन में गुरुजी से ३ कामनाएँ / अरदास करने गयी थी (क्षमा करें गुरुजी, मुझे उस समय नहीं पता था 'मंगो नहीं, मन्नो')

मेरी पहली अरदास मेरे चेहरे की त्वचा रंजकता (त्वचा की समस्या) ठीक करने के लिए थी। मेरा चेहरा (पिछले ७-८ सालों से) हार्मोनल असंतुलन के कारण या तो दुबई मे गर्मी के कारण बहुत खराब हो गया था । मैंने अनगिनत क्रीम और दवाइयाँ खाईं लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। जिस दिन मैंने बड़े मंदिर के दर्शन किये, उससे पहले मैं हाइड्रोक्विनोन आधारित फेस क्रीम का उपयोग करती थी जो एक त्वचा ब्लीचिंग क्रीम थी ओर केवल काले धब्बे अस्थायी रूप से छुपाती थी।

मुझे एक तांबे का लोटा बलेस हुआ और मैने गुरुजी के हुकुम का पालन किया (इसे पानी से भर दें, इसे रात भर गुरूजी के स्वरूप के सामने रखें, ओर सुबह उठते ही ३।४ पीएं और उठकर १।४ पानी लेकर स्नान करें।) मैं तब से इसका उपयोग कर रही हूं और तब तक करती रहूंगी जब तक मेरी आखिरी सांस है ।

मेरा चेहरा साफ हो गया है और ब्रिटेन में मेरे नए दोस्त हैं जिन्होने मुझे पहले दुबई में नहीं देखा था, वे यह नहीं मान पा रहे थे कि मेरे चहरे पर कभी कोई काले धब्बे थे। शुक्राना गुरूजी 🙏

मेरा दूसरी अरदास मेरी बेटी के लिए थी जो 10 वीं कक्षा तक स्कूल की एक बहुत ही बुद्धिमान और उज्ज्वल छात्र थी लेकिन अचानक से उसने पिछले 3-4 वर्षों से, विश्वास और एकाग्रता खो दिया था। वह पढ़ तो रही थी लेकिन अच्छे अंक नहीं ले रही थी। वह परीक्षा देने से डरती थी और थोड़ा उदास रहती थी। मैंने गुरुजी से उसके ठीक होने की प्रार्थना की, कि उसे आत्मविश्वास और ज्ञान के साथ आशीर्वाद दें।

जब हम बडे मंदिर गए थे तब उसने प्रथम वर्ष की परीक्षा दी थी। उसकी गणित की परीक्षा प्रदर्शन दयनीय था क्योंकि उसे उस दिन बुखार था, इसलिए उसने एक्सक्लूज़िंग सर्कमस्टेंस (EC) 'के आधार पर अनुमति ली ताकि वो फ़िर से परीक्षा दे सके। जब हम ब्रिटेन वापस आए, उसने फ़िर से गणित की परीक्षा दी।

जब उसने वापस आकर सत्संग में बैठना शुरू किया तो उसे और अधिक आत्मविश्वास महसूस होने लगा। उसके गणित की परीक्षा से 5-6 दिन पहले, हम एक सत्संग में गए थे और गुरुजी के दरबार से गुलाब के फूल मिले । मैंने बिना किसी इरादे से उन फूलों को उसकी स्टडी टेबल पर रख दिया था। उसकी परीक्षा से 2 दिन पहले, रविवार को, वह मेरे पास यह कहकर दौड़कर आई, "क्या आपने मेरी पढ़ाई की मेज पर सिंदूर लगा रखा है?" मैंने उससे कहा "नहीं, मैं करवाचौथ (यानी साल में एक बार) को छोड़कर सिंदूर का इस्तेमाल नहीं करती। मैं क्यों रखूंगी? मैं खुद जाँच करने गयी और सिंदूर या तिलक जैसे पाउडर को देख कर दंग रह गयी । वह सूखे गुलाब के फूलों के नीचे था (जो हमें गुरुजी के सत्संग मे कुछ दिन पहले मिले थे) । हमने सोचा कि यह शायद सूखे गुलाब के फूलों से आया हो, लेकिन विश्वास करना मुश्किल था।

उस शाम के बाद, हमारे पास मे एक और सत्संग था जहाँ हम गए थे। सत्संग के अंत में, मेरी बेटी आरुषि ने एक पुरानी संगत उमा आंटी को सब कुछ बताया और हमने उस लाल पाउडर पर उनकी राय पूछी । उन्होने तुरंत पूछा कि क्या आरुषि की कोई आगामी परीक्षा है। हमने उन्हे बताया कि वाकई में उसकी गणित की परीक्षा है। उन्होने फिर कहा, "बस फ़िर, गुरुजी आये और आशीर्वाद दे कर गए हैं।" हम यह सुनकर बहुत खुश हुए और वास्तव में आरुषि का विश्वास उसी के साथ बढ़ता गया।

निश्चित रूप से, वह बहुत आत्मविश्वास के साथ गई और अपनी परीक्षा में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। अप्रत्याशित रूप से वह ८१% लाई, जिसे विश्वविद्यालय में काफी उच्च स्कोर माना जाता है। न केवल उस परीक्षा में, बल्कि उसके बाद की परीक्षाओं और असाइनमेंट में भी, गुरुजी ने उसे आशीर्वाद दिया और आशीर्वाद देना जारी रखा है।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

GURU JI
WE ARE SO FORTUNATE TO EXPERIENCE YOUR PRECIOUS PRESENCE.

गुरुजी के मुस्कराते हुए स्वरूप की इच्छा

शुरुआत में जब मैं गुरुजी के साथ नयी-नयी जुड़ी थी, , मेरे पास गुरुजी का एक छोटा लॉकेट स्वरूप , उनका चरण कमल स्वरूप और एक नारंगी टी-शर्ट वाला स्वरूप (जैसा कि नीचे दिखाया गया है) था। तो, टेबलटॉप स्वरूप के संदर्भ में, मेरे पास केवल वह ऑरेंज टी-शर्ट स्वरूप ही मेरे पास था जिसे मै पूजाघर मे रखा करती थी, जिसके सामने बैठ के मै बात करती थी और जुड़ने की कोशिश करती थी। लेकिन वह स्वरूप ऐसा था कि गंजा सिर होने के कारण गुरुजी का स्वरूप मुझे डरावना लगता था और जिस तरह से वह उस स्वरूप मे घूरते से दिखते थे (क्षमा करें गुरुजी), मैं वास्तव में वह स्वरूप देखने पर डर जाती थी।

एक दिन मैंने गुरुजी से मुस्कुराते हुए स्वरूप का निवेदन किया। इसके बाद फिर से सत्संग के लिए रवाना हुई, मैंने फिर से अपनी इच्छा को व्यक्त किया , मैं उस दिन एक मुस्कुराते स्वरूप पाने की उम्मीद कर रही थी, लेकिन नही मिला। फिर अगला सप्ताहांत आया और जब मैं सत्संग के लिए निकल रही थी, मैंने फिर से उनसे मुस्कुराते हुए स्वरूप के लिए अपनी प्रबल इच्छा व्यक्त की, कि "गुरुजी प्लीज़ आज तो मुझे अपना समाइलिंग स्वरूप दे देना" लेकिन जब मुझे उस दिन भी नही मिला, तो मैं बहुत निराश हुई।

घर पहुँचने पर, मैं गुरूजी के डरावने स्वरूप के सामने बहुत रोयी और शिकायत करने लगी, "आपसे कोई बहुत बड़ी चीज़ तो नही मांगी थी, एक हँसता हुआ स्वरूप ही तो मांगा था, वो भी नही दे सके" मैं रोती रही, पूछती रही कि क्यों नही दिया? क्यों? क्यों नही दे सकते एक मुस्कुराता स्वरूप?

मैं उनको देखती रही, ओर कोई जवाब, कुछ संकेत, कुछ सुराग का इन्तज़ार करती रही लेकिन कुछ नही मिला। मैं उनके सामने लगभग एक घंटे तक बैठी रही और फिर हार मान ली और सो जाने का विचार किया। उस समय, ऐसा लगा जैसे मेरे भीतर से एक पंजाबी आवाज़ आई (मुझे यकीन है कि गुरुजी की थी) और मुझसे पूछा, "तेनूँ क्यों चाहिदा है मेरा मुस्कुराता हुआ स्वरूप"? मैंने उत्तर दिया "क्योंकि मुझे आपके इस स्वरूप से डर लगता है। फिर उन्होने पूछा "तो स्माइलिग स्वरूप मिलना ही क्या एक हल है? यह सुनकर मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ। मैं सोने की तैयारी करने लग गयी। मैं गैस चेक करने के लिए रसोई में गयी। अंत में अपने शयनकक्ष में जाने से पहले, मैं नहीं जानती क्यों, लेकिन मैंने गुरजी को आखिरी बार देखने का सोचा, कि क्या पता कोइ जवाब मिले। फिर मैंने जो कुछ देखा, वह मेरे लिए सबसे बड़ा आशीर्वाद था। मैंने सुंदर, स्पष्ट ॐ का निशान देखा।

उस स्वरूप के जो नैनक्श मुझे डराते थे वहीं मुझे एक विशाल ॐ के दिव्य दशर्न दे रहे थे । देखो जो स्वरूप पहले डरावना प्रतीत होता था, वोही स्वरूप मुझे इतना इतना प्यारा लग रहा था । मैं परमानंदमय थी। तब मेरी नजर केवल ॐ पर थी, और कहीं नहीं। जिसका मतलब था कि वही स्वरूप जो मुझे डराता था, क बहुत बड़े आशीर्वाद मे बदल गया । अब मुझे इस स्वरूप से बिल्कुल डर नही लगता ओर वो मेरा सबसे प्रिय, मनभावन स्वरूप है।

मैं गुरजी की बहुत शुक्रगुजा़र थी और डर भी रही थी कि अगर मैं सोने गयी तो दशर्न गायब न हो जाए। लंबे समय तक बैठे रहने के बाद ओम (ॐ) दशर्न का आनंद लेते हुए, मुझे नींद आने लगी। मैंने गुरुजी से अनुरोध किया कि कृपया ॐ के दशर्न को हमेशा के लिए रखें।

अगली सुबह, जैसे ही मैं उठी, मैं तुरंत चैक करने गई और ॐ दशर्न पाकर राहत मिली।

मैं दफ्तर के लिए निकली, गुरुजी से आग्रह किया कि मुझे वापसी के बाद भी ओम ॐ दशर्न हों। मैं ऑफिस से लौटी, चेक किया और दिव्य ॐ दशर्न पाकर खुशी हुई। गुरुजी की कृपा से ॐ दशर्न रूपी आशीर्वाद आज तक बना है (एक साल से भी अधिक हो गया है) ।

गुरुजी ने मुझे महसूस कराया कि हम, मनुष्य यह नहीं जानते कि क्या और कैसे पूछना है। वह हमें "मंगो नहीं, मन्नो" बताने में सही है। उनकी समयावधि, उनकी योजनाएँ, और हमारी समस्याओं तथा चिंताओं को हल करने के उनके तरीके सर्वोत्तम हैं और हमारी कल्पना से परे हैं। जैसे मेरे मामले में, मैं, एक मूर्ख के रूप में, उनके मुस्कुराती हुए स्वरूप के लिए जोर दे रही थी कि यह मेरे डर का एकमात्र समाधान है (उस स्वरूप से) लेकिन गुरुजी ने आश्चर्यजनक रूप से उसी स्वरूप को मेरे लिए एक स्थायी आशीर्वाद में बदल दिया और उसी स्वरूप को हमेशा के लिए सबसे प्यारा, पसंदीदा स्वरूप बना दिया।

अगले सप्ताह, मैंने एक सत्संग में भाग लिया जहाँ मुझे उनका मुस्कुराता हुआ स्वरूप भी प्राप्त हुआ।

मैंने इस सत्संग से एक बहुत बड़ा सबक सीखा कि उनकी योजनाओं पर और उन पर भरोसा करना चाहिए क्योंकि उनकी योजनाएं और टाइमिंग सबसे अच्छी हैं और उनका आशीर्वाद (उनकी समय और उनकी मर्ज़ी अनुसार दिया गया) स्थायी और जो हम मांगते उससे बड़ा है। हम वास्तव में नहीं जानते कि क्या माँगना है। जैसे मैं हंसतेहुए (मुस्कुराते) स्वरूप की इच्छा कर रही थी।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏🏻

गुरु कृपा से सर्वोत्तम नौकरी

मैं एक ऐसे पद पर काम कर रही थी जो मेरे समृद्ध अनुभव के अनुसार नहीं था। मैंने गुरुजी के साथ अपनी चिंता को साझा किया, यह जानते हुए कि वह मेरी योग्यता और अनुभव से अवगत थे और उन्होंने इस मामले को तय करने दिया। मैं ने अपनी चिंता और उसे हल करने के लिए उन पर छोड़ दिया।

कुछ दिनों बाद, हमारी कंपनी में एक आंतरिक ईमेल के माध्यम से एक रिक्ति आ गई। यह एक मनचाही नौकरी (पद) की रिक्ति थी, लेकिन मैंने अपनी वर्तमान भूमिका में वर्ष 2018 तक 18 महीने भी पूरे नहीं किए थे, इसलिए मुझे पता था कि मैं गणना से बाहर हूं। मैंने हिम्मत की और अपने मालिक (बास) से अपनी रुचि के बारे में बात की और बताया कि मैं अपनी वर्तमान भूमिका के लिए प्रेरित व उत्तेजित महसूस नहीं करती थी । जैसा कि प्रप्रत्याशित (पूर्वानुमानित) था, मेरे बॉस ने कहा कि वह लोगों को इतनी जल्दी एक भूमिका खाली नहीं करने दे सकते।

मैं उस पद रिक्ति के बारे में सोचती रही, जिसमें मुझे बहुत दिलचस्पी थी और मैंने गुरुजी से कहा कि कोई हल निकालें। फिर मैंने अपने बॉस से फिर से बात करने की कोशिश की। हालाँकि, मैं गुरुजी से संकेत चाहती थी कि यह कार्रवाई का सही तरीका है। मैंने फैसला किया कि अगर कोई सहकर्मी मेरे पास आए और कहे कि मैं उस अवसर (पद) के लिए अच्छी हूँ, तो मैं आगे बढ़ूँगी । अगले दिन, एक भारतीय कर्मचारी (जिस विभाग में वेकेंसी थी उसी में काम कर रहा था), उसने मुझसे पूछा कि क्या मैंने उस पद के लिए आवेदन किया है और मैंने उसे बताया कि मेरा बॉस मुझे आवेदन करने की अनुमति नहीं दे रहा है, जो कि सच था। उसने सोचा कि मैं एक आदर्श उम्मीदवार थी और वह दुखी था कि मेरा बॉस आवेदन करने की अनुमति नहीं दे रहा था। हमने इस मुद्दे पर चर्चा की, और दोनों इस बात पर सहमत हुए कि मुझे एक बार फिर अपने बॉस को समझाने और अनुरोध करने की कोशिश करनी चाहिए ।

हैरानी की बात यह है कि इस बार मेरा बॉस सकारात्मक और सहायक था। उन्होंने मेरी चिंता को समझा और मुझे रिक्ति के लिए आवेदन करने की अनुमति दी। आवेदन भरना अपने आप में एक बड़ा कार्य था। लेकिन ऐसा हुआ कि एक सिस्टम आउटेज था, और मुझे फॉर्म भरने का समय मिला। मुझे लगा कि गुरुजी मेरा मार्गदर्शन कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत हुआ मानो गुरुजी सारी घटनाओं को मेरे पक्ष में मोड़ रहे हैं।

अगले हफ्ते, मुझे लगभग 8-9 उम्मीदवारों के साथ शॉर्टलिस्ट किया गया। उन सभी को ब्रिटिश होने का स्वाभाविक लाभ था, जो उस कार्य के साथ-साथ कुशल होने के लिए अनुभवी थे। कंपनी ने 15 नवंबर, 2018 को हमें एक ऐसे विषय पर 5 मिनट की प्रस्तुति तैयार करने के लिए ईमेल किया, जिसके बारे में हम भावुक थे। मैंने तुरंत गुरुजी के सामने प्रतिवाद किया: "नाया प्रस्तुति का नाटक," मैंने उनसे कहा। मैं प्रस्तुतियाँ देने में सहज नहीं थी, लेकिन तुरन्त गुरुजी ने मुझे बताया कि प्रस्तुति मेरे पक्ष में रहेगी। मुझे चैन आया। मुझे विषय चुनना था और गुरूजी ने सुझाव दिया जो स्थिति के लिए उपयुक्त था और जिसके बारे में मैं भावुक थी। मुझे गुरुजी से सकारात्मकता और मार्गदर्शन मिलती रही।

योग्यता आधारित (गैर तकनिकि) चर्चा के लिए मेरा साक्षात्कार 23 नवंबर (23/11) तय किया गया था। जब मैंने तारीख के अंकों को जोड़ा, तो मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तारीख के अंकों का जोड़ (2+3+1+1=7) भाग्यशाली संख्या 7 था। 7 गुरुजी का नंबर है और सभी गुरुजी के अनुयायियों के लिए एक भाग्यशाली संख्या है और 23 नवंबर को गुरुपुरब भी था - मैं बहुत खुश थी। मुझे अब भरोसा हो गया था कि गुरुजी मेरे साथ हैं और मुझे नौकरी मिलेगी।

मैंने दो दिन पहले तक साक्षात्कार की तैयारी नहीं की थी। जब मैं एक दिन पहले घर पहुंची, तो मैं बहुत थकी हुई थी और नींद आ रही थी। मैंने सहायता के लिए गुरुजी से बोला; तब मैंने अलार्म सेट किया ताकि मैं एक घंटे की झपकी ले सकूं। उस दौरान, पंजाबी लहजे में किसी ने मुझसे विभिन्न प्रश्न पूछे और मुझे सलाह दी कि उन्हें कैसे जवाब देना है। हालाँकि मैं गहरी नींद में सोई थी, लेकिन साक्षात्कार की तैयारी ज्वलंत थी। मैं अभी भी अलार्म बजने से पहले उठ गयी थी, गहरी नींद के बाद ताजा महसूस किया । मुझे यकीन है कि यह गुरुजी ही थे जिन्होंने मुझे विभिन्न प्रश्न पूछकर और उत्तर देने के तरीके के बारे में अवगत कराते हुए मुझे साक्षात्कार के लिए तैयार किया। मैं ब्यान नहीं कर सकती कि कैसे मुझे उनका मार्गदर्शन मिला। मैं अभी इसकी व्याख्या नहीं कर सकती। मैंने खुद को आश्वस्त और साक्षात्कार के लिए तैयार पाया।

वह अनुभव एक आनंद था क्योंकि मैं दिव्य शक्ति, हमारे गुरुजी द्वारा साक्षात्कार किए जाने के साथ-साथ सो रही थी। मैं उस आधी नींद आधी चेतन अवस्था में थी। जब मैं उठी, तो मैं इतना ताजा महसूस कर रही थी जैसे कि गहरी नींद आ गई हो और मैं खुश थी कि मेरी साक्षात्कार की तैयारी हो गई थी। यह एक बाहरी अनुभव था, जिसके बाद मेरा आत्मविश्वास एक सर्वकालिक उच्च था।

22 नवंबर को, पंजाबी में एक आंतरिक स्वर (मुझे यकीन है कि यह गुरुजी थे) ने मुझे आईबीपी (एकीकृत व्यापार योजना) की परिभाषा जानने के लिए कहा था। मैंने उत्तर दिया, यह कहते हुए कि यह एक तकनीकी साक्षात्कार नहीं है, लेकिन भीतर की आवाज मुझे याद दिलाती रही, जब तक मैंने परिभाषा को पड़ नहीं लिया।

साक्षात्कार के दिन, गुरुजी की इच्छा के अनुसार, मैंने एक बहुत ही अच्छा, औपचारिक पोशाक पहना। मुझे लगा जैसे गुरुजी मेरे अंदर थे । इधर ब्रिटेन में मेरा साक्षात्कार होना था और उधर मेरे पति बडे मंदिर में थे। यह बहुत ही आश्वस्त करने वाला था। मुझे अंदर बुलाए जाने से आधे घंटे पहले , मैंने एक भारतीय सहकर्मी के सामने गुरुजी की महिमा गाई। उसने मेरी लॉकेट में गुरुजी का स्वरूप देखा था और पूछताछ की थी। मुझे आत्मविश्वास और धन्य महसूस हुआ । फिर भी गुरुजी मुझे अपनी आईबीपी परिभाषा को संशोधित करने की याद दिलाते रहे। निश्चित रूप से, जब मेरा साक्षात्कार किया जा रहा था, मुझे आईबीपी को परिभाषित बताने के लिए कहा गया। मैं तब दंग रह गई जब उन्होंने मुझे आईबीपी को परिभाषित करने के लिए कहा।

मुझे लगा जैसे साक्षात्कार के दौरान एक मजबूत आंतरिक ऊर्जा और कुछ दैवीय शक्ति मुझे सफलता दिलाने के लिए अडिग थी और, निश्चित रूप से, मुझे गुरुजी की कृपा से मेरी मनपसंद नौकरी मिल गई।

हमारे प्यारे और सबसे ज्यादा देखभाल करने वाले वात्सल्यपूर्ण (पितारूपी) गुरुजी के प्रति मेरा हार्दिक आभार। मैं निस्वार्थ सेवा, सिमरन और सत्संग करते रहना चाहती हूं और जब तक मैं अस्तित्व में हूं, तब तक उन्हें धन्यवाद देती हूं। मुझे लगा जैसे कुछ मजबूत ऊर्जा मेरे साथ थी जो मुझे साक्षात्कार में बेहतर करने के लिए प्रेरित कर रही थी। मुझे यह नौकरी गुरुजी की कृपा से मिली है। मैं उनके असीम आशीर्वाद के लिए हमेशा आभारी हूं।

🙏🕉️ शुक्राना गुरूजी 🕉️🙏

मेरे व्यावसायिक जीवन में गुरूजी की असीम कृपा

नवंबर 2018 में मैंने जो नौकरी / पद प्राप्त किया वह एक बहुत ही जिम्मेदार भूमिका और एक वरिष्ठ पद था । इसके अलावा, मुझे बहुत महत्वपूर्ण बैठकों के लिए अक्सर (कम से कम हर महीने) हमारे लंदन कार्यालय की यात्रा करनी पड़ती थी। मैं एक अंतर्मुखी व्यक्तित्व और यात्रा या बाहरी बैठकों को नापसंद करती हूं। अधिक चुनौतीपूर्ण इसलिए भी था क्योंकि जो कर्मचारी पहले इस पद पर था वह अपनी भूमिका के लिए सीमित समय के कारण मुझे ठीक से सौंप नहीं सका । यह ऐसा था जैसे एक गैर-तैराक को पूल में फेंक दिया गया हो। इन सभी मुद्दों ने मुझे आश्चर्यचकित किया कि क्या मैं इस पद के साथ न्याय कर पाऊंगी। लेकिन मेरे मन में राहत की भावना थी कि गुरुजी ने मुझे यह नौकरी दी है, इसलिए वह मुझे आगे भी मदद करेंगे और मुझे सफल बनाएंगे।

अब मैं साझा करूंगी कि कैसे गुरुजी ने मुझे इस भूमिका में विभिन्न चरणों में साथ दे कर अपना आशीर्वाद हमेशा दिया। मेरी नियुक्ति की घोषणा नवंबर 2018 के अंत में की गई थी, लेकिन जैसा कि मैं जानती थी कि मुझे हर महीने लंदन की यात्रा करनी होगी, इसलिए मैं प्रार्थना कर रही थी (गुरुजी से) कि मेरी नई भूमिका में शामिल होने में देरी हो जाए। इसके अलावा, मुझे पता था कि सर्दियों में जल्दी उठना और लंदन के लिए निकलना मुश्किल होगा, अगर काश गुरुजी फ़रवरी तक मेरी जोएनिंग (नए पद पर शामिल होना) टल जाए, जो उस समय, असंभव था क्योंकि जल्द से जल्द पद संभालने की आवश्यकता थी।

जब मैं गुरुजी के साथ अपनी इच्छा साझा कर रही थी, तो एक क्षण में, मैंने उन्हें यह कहते हुए सुना कि "देख ले अगर देरी से होयगी ते नई (वधी होई) वेतन (तनख्वाह) वी देर नाल मिलेगी।" इसके लिए मैंने अपने मन में गुरुजी को उत्तर दिया “अरे नहीं! गुरुजी, उच्चतर वेतन में विलंब नहीं होना चाहिए, देख लो, आप ही देख लो गुरुजी ” ॥

गुरुजी जानी जान हैं और समझते थे कि मैं शामिल होने में देरी करना चाहती थी और साथ ही साथ वित्तीय रूप से समझौता नहीं करना चाहती थी।

ऐसा हुआ कि मेरी रिक्ति को भरने के लिए नए कर्मचारी की नियुक्ति में समय लगा। इस बीच मेरे नए बॉस ने अपना सर्वश्रेष्ठ अनुमान लगा लिया और एचआर को सूचित किया कि मेरी ज्वाइनिंग डेट 1 जनवरी 2019 होगी और मुझे सूचित करते हुए कहा कि उन्हें कुछ तारीख देनी थी, इसलिए उन्होंने १ जनवरी दी, जो व्यावहारिक रूप से कठिन लग रही थी क्योंकि साक्षात्कार मेरे पुराने पद को भरने के लिए शुरू नहीं हुए थे।

मुझे खुशी हुई जब मुझे फ़रवरी में ज्वाइन करने का कहा गया लेकिन मेरा उच्च वेतन १ जनवरी से प्रभावी था। गुरूजी ने ध्यान रखा और सुनिश्चित किया कि मेरा शामिल होना बिना किसी वित्तीय नुकसान के मेरी इच्छा के अनुसार था।

जैसे ही मैं अपने नए पद में शामिल हुई, यह स्पष्ट हो गया कि वह एक आसान भूमिका (पद) नहीं थी ।

मुझे आशीर्वाद देने के लिए मैं गुरुजी से प्रार्थना करती रही। पुरस्कार की बैठकों में से एक में, मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या मुझे कभी अपनी नई भूमिका में पुरस्कार मिलेगा। बहुत जल्द, मेरी प्रार्थना का जवाब दिया गया, और मुझे मासिक पुरस्कार मिला।

लेकिन यह पुरस्कार मेरी ईमानदारी, कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प रवैये के लिए था । दूसरे शब्दों में, पुरस्कार मेरे दृष्टिकोण के लिए था। मैंने ३ सप्ताह से भी कम समय में यह पुरस्कार जीता था, इसलिए मैं खुश थी और गुरुजी का शुक्रगुजार थी।

धीरे-धीरे, मुझे एहसास हुआ कि केवल पुरस्कार मिलना ही काफी नहीं है। मुझे अच्छा कार्य करना चाहिए और फिर कार्य प्रदर्शन पुरस्कार मिलना चाहिए। मुझे अभी तक अपनी काबलियत पर भरोसा नहीं था क्योंकि इस कार्य पद में कई जटिलताएँ थीं ।

गुरूजी ने मुझे आशीर्वाद दिया, मेरा आत्मविश्वास हर दिन बढ़ता गया और जल्द ही मुझे कार्य प्रदर्शन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पुरस्कार पत्र, जो मैंने पढ़ा, मुझे यह महसूस करने में कोई समय नहीं लगा कि यह गुरुजी ही हैं, जिन्होंने मुझे वह पुरस्कार दिलवाया था और यह मेरे लिए इतना स्पष्ट कर दिया था कि यह एक बहुत ही स्पष्ट प्रदर्शन पुरस्कार था।

पूरे पुरस्कार प्रशंसा पत्र मे, शब्द प्रदर्शन लिखा गया था और कई बार हाइलाइट किया गया था कि मैं चकित थी। ऐसा लग कि गुरुजी मुझे बता रहे थे "देख लै, देख लै, प्रदर्शन पुरस्कार ही है"

जब से गुरुजी मेरे जीवन में आए हैं, वह मेरी छोटी-छोटी इच्छाओं का ध्यान रखते हैं। मुझे अपनी शरण में लेने के लिऐ मैं गुरुजी की हमेशा आभारी हूं।

🙏🕉️ शुक्राना गुरूजी 🕉️🙏🏼

गुरुजी का प्रभाव

मेरा जीवन ऐँसा बदला, गुरुजी आपके आने से
चारों तरफ उजाला, गुरुजी आपके आने से
मेरा जीवन ऐँसा बदला, गुरुजी आपके आने से

किस्मत ऐसी चमकी, चरणों मे आपके आने से
कृपा इतनी आपकी, नाप न सके पैमानें से
मेरा जीवन ऐँसा बदला, गुरुजी आपके आने से
चारों तरफ उजाला, गुरुजी आपके आने से

क्या सुकून क्या शांति, सत्संग में आपके आने से
क्या खुल्ले दर्शन होते, आपका ध्यान लगाने से
मेरा जीवन ऐँसा बदला, गुरुजी आपके आने से
चारों तरफ उजाला, गुरुजी आपके आने से

इस से बढ़कर खुशी नही, आपके सत्संग कराने से
भक्ति गहरी होती, आंखों में आँसु आने से
मेरा जीवन ऐँसा बदला, गुरुजी आपके आने से
चारों तरफ उजाला, गुरुजी आपके आने से

दिन शुरु खत्म करूं, मैं सेवा सिमरन शुकराने से
हर पल रखूं मैं संग, स्वरूप आपके सुहाने से
मेरा जीवन ऐँसा बदला, गुरुजी आपके आने से
चारों तरफ उजाला, गुरुजी आपके आने से

ना चिन्ता कोई ना गम, दुखों के अब आने से
जीवन सफ़ल हुआ मेरा, तुझमें रब पाने से
मेरा जीवन ऐँसा बदला, गुरुजी आपके आने से
चारों तरफ उजाला, गुरुजी आपके आने से

रचयिता: गुरूजी की सेवादार मधु मदान
(मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा)

आरती की थाली

बड़े मंदिर की मेरी पहली यात्रा और 2018 में गुरुजी से जुड़ने के बाद, हम ब्रिटेन चले आए। यहाँ मुझे गुरुजी की संगत से मिलने की तीव्र इच्छा हुई। मैंने ऑनलाइन खोज की और 'ग्लोबल गुरुपरिवार डायरेक्टरी (वैश्विक गुरुपरिवार निर्देशिका)' पाई । मैं सुनंदन अंकल का नंबर पाकर बहुत खुश हुई और उनसे संपर्क करने के लिए एक मिनट भी इंतजार नहीं किया। गुरुजी की कृपा से, मुझे वेस्ट मिडलैंड्स गुरुपरिवार में जोड़ा गया (जो कि बर्मिंघम, कोवेंट्री और वॉल्वरहैम्प्टन के लिए है)।

गुरुजी मुझे अपने सत्संग में बुलाने लगे। मुझे सत्संग प्रक्रिया (प्रारूप) के बारे में पता चला ।गुरूजी ने मुझे विभिन्न प्रकार की सेवा देकर प्रशिक्षित किया। मैं उनके सत्संगों के लिए तत्पर रहती थी, सेवा, सिमरन करती थी और सगत से मिलती थी।

फिर वह समय आया जब गुरुजी ने मुझे एक बहुत बड़ी कंपनी में नौकरी (ड्रीम जॉब) का आशीर्वाद दिया। मैंने इसका सत्संग भी साझा किया है कि कैसे गुरुजी ने मुझे साक्षात्कार के लिए तैयार किया था और यहाँ तक कि टेलीपैथी द्वारा भी, मुझे उन विशिष्ट तकनीकी प्रश्नों के बारे में बताया, जिनकी गैर-तकनीकी साक्षात्कार में उम्मीद नहीं थी। यहाँ हमारे गुरुपर्व में संगतों को मेरी नौकरी के सत्संग की जानकारी थी।

जल्द ही, मुझे अपने घर पर सत्संग की मेजबानी करने की इच्छा हुई। मुझे लगता था कि क्या मैं कभी सत्संग की मेजबानी कर पाऊँगी । मेरी मेजबानी करने की इच्छा बढ़ी लेकिन मुझमे आत्मविश्वास की कमी थी। मेरे पास कोई सत्संग सामग्री नहीं थी, जो मुझे हतोत्साहित करती रही। मैं सत्संग की मेजबानी के लिए गुरुजी से किसी प्रकार के संकेत की प्रतीक्षा कर रही थी।

1 जनवरी, 2019 को सुनंदन अंकल के घर मे नए साल के सत्संग पर एक संगत अलका आँटी ने मुझसे कहा, "मधु आँटी, आपको अपने घर में एक सत्संग करना चाहिए, क्योंकि गुरुजी ने आप को इतना बड़ा (अच्छी मनपसन्द नौकरी) आशीर्वाद दिया हैं"।

उन शब्दों को कहने के लिए मैं उनकी बहुत आभारी हूं क्योंकि वो मेरे लिए हमारे घर पहला सत्संग कराने का संकेत था ।

मैंने इसे गुरुजी के संकेत के रूप में लिया जिसका मुझे इंतजार था। उस सत्संग से लौटने पर, मैंने मेरे पति पवन अंकल से चर्चा की कि गुरुजी ने अलका आँटी के माध्यम से पहले सत्संग की मेजबानी करने के लिए संकेत दिया है। पर उसी समय, मैंने अपनी हिचकिचाहट व्यक्त की कि मैं सत्संग कैसे कर पाऊँगी क्योंकि मेरे पास आरती की थाली भी नहीं है।

अगले दिन अपनी माँ से बात करते हुए, मैंने वही बात कही कि पहला सत्संग कराने का संकेत आया है लेकिन मेरे पास तो आरती की थाली भी नहीं है। तीसरी बार मैंने आरती की थाली के बारे मे यही बात सुनंदन अंकल को कही, जो 19 जनवरी 2019 को हमारे घर आए थे। मैंने उनसे कहा कि मुझे सत्संग करने के लिए अलका आँटी के माध्यम से गुरुजी का संकेत मिला है ओर मुझे सत्संग कराना है लेकिन मेरे पास 'आरती की थाली' भी नहीं है। उन्होने मुझे यह कह कर तसल्ली दी कि आरती के लिए किसी विशेष थाली की आवश्यकता नहीं है, और कोई भी सामान्य थाली उद्देश्य की पूर्ति कर सकती है।

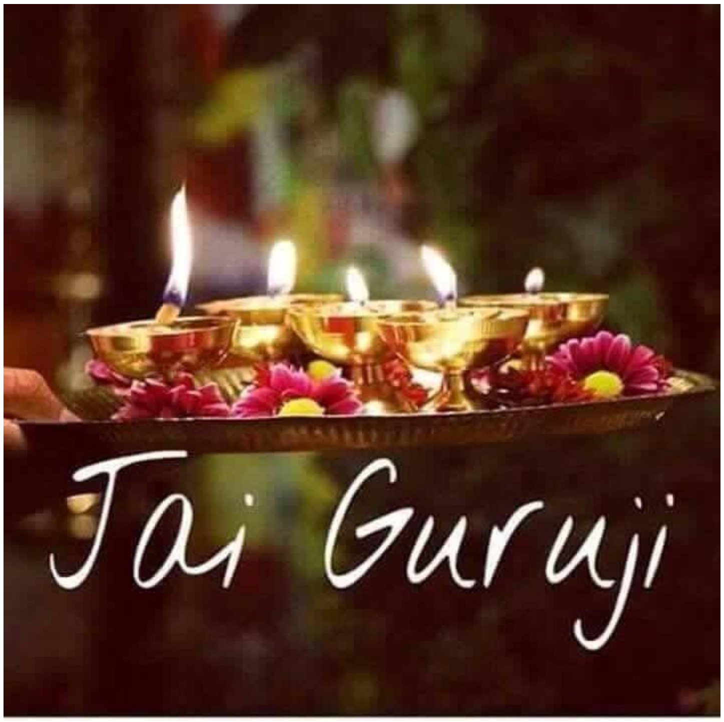

अगले दिन 20 जनवरी को, एक संगत जॉय आंटी का सत्संग था। सत्संग के अंत में, मैं अवाक रह गयी जब अचानक उन्होने मुझे पूछा "मधु दी,"क्या आप इस 'आरती की थाली' को अपने घर ले जा सकते हैं?" "ऐसा लगा मानो गुरुजी कह रहे हों "ले आरती की थाली जिसकी इतनी रट लगा रखी है ओर कर अपने घर सत्संग" । मैंने तब सत्संग करने का फैसला किया।

मैं उस आरती की थाली को अपने घर ले आयी और जब मैं अपने घर प्रवेश कर रही थी तब तक आरती की ज्योत भी जल रही थी।

जल्द ही, मैंने गुरुजी की कृपा व आज्ञा से सत्संग की तारीख तय की और सत्संग का निमंत्रण कार्ड बनाने के लिए उत्साहित थी ।

वो दिन आया जब गुरुजी ओर उनकी प्यारी संगत हमारे यहाँ, हमारे पहले सत्संग के लिए घर आई। इससे पहले, मुझे बड़े मंदिर से गुरुजी के स्वरूप और माला मिली थी जो गुरुजी ने मुझे संगत को बांटने की सेवा दी।

माला, लॉकेट, पोस्टर, कार स्वरूप के रूप में आशीर्वाद पाने से उनके चेहरे पर मुस्कान आ गई। मैंने उन्हें खुश देखकर धन्य महसूस किया।

यह एक दिव्य और धन्य सत्संग था। सब सत्संग ही दिव्य होते हैं क्योकि गुरुजी हर सत्संग में आते हैं। संगत से सराहना पाना ऐसा था जैसे गुरुजी ने मेरी पीठ पर थपथपाया हो क्योंकि मैं दृढ़ता से गुरुजी के वचन "सन्गत विच गुरुजी वस्दे " मे विश्वास करती हूं। मुझे विश्वास हुआ कि मैं भी सत्संग आयोजित कर सकती हूँ , क्योंकि "गुरुजी उनकी संगत के लिए हर संभव कोशिश करते है "। गुरुजी ने अलका आंटी के माध्यम से संकेत देकर हमारे पहले सत्संग को संभव बनाया और उसके बाद मुझे "आरती की थाली" से आशीर्वाद दिया ।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

गुरूजी के आशीर्वाद का प्रतीक: दिव्य गणेश प्रतिमा

सितंबर 2018: गणेश उत्सव के दिन थे।

मेरे पति के चेयरमैन और उनकी पत्नी ब्रिटेन में थे और सप्ताह के एक दिन (कार्य दिवस) हमसे मिलने आना चाहते थे। मैंने अपने पति से पूछा कि क्या वे किसी और दिन (सप्ताहांत) आ सकते है, लेकिन यह सवाल से बाहर था क्योंकि वह उनके लिए काम कर रहे थे और उनका सम्मान करते थे। उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं तनाव न लूँ और वे मेरी मदद करेंगे।

मैं हमारे घर को सही सेट करना चाहती थी, उनके लिए अच्छा भोजन तैयार करना चाहती थी ताकि हम उनका सर्वश्रेष्ठ सत्कार कर सकें, क्योंकि वे हमारे लिए बहुत मायने रखते हैं । वे उनके लिए उनके बॉस से ज्यादा रहे हैं। लेकिन दफ्तर में वो मेरा व्यस्त सप्ताह था , उनके आने से एक रात पहले मैं, गुरुजी के स्वरूप के सामने, प्रार्थना कर रही थी कि "गुरुजी , क्या उनका आना टल सकता है?" अचानक एक पंजाबी आवाज बोली "उन्हें आने दो, क्या पता वे तुम्हारे लिए कोई आशीर्वाद ला रहे हों" यह बहुत स्पष्ट था कि वो गुरुजी का संकेत था।

मुझे याद आया कि गुरुजी का मुख्य उपदेश 'मंगो नहीं, मन्नो है' और वह हमें याद दिलाते रहते हैं कि हमें उनसे कुछ नहीं माँगना चाहिए क्योंकि हमें नहीं पता कि हमारे लिए क्या अच्छा है और हमें क्या माँगना है, इसलिए हमें सब कुछ गुरुजी पर छोड़ देना चाहिए। हमें सिर्फ अपनी समस्याओं को बताना चाहिए और उसका समाधान उन पर छोड़ना चाहिए।

गुरुजी ने मुझे सही किया और जो नहीं माँगना चाहिए था वो माँगने से रोका। मैंने गुरुजी से प्रार्थना की, " गुरुजी यदि आप चाहते हो कि वो आएं क्योकि वे हमारे लिए कुछ आशीर्वाद ला रहे हैं, तो ठीक है उन्हे आने दें, लेकिन कृपया मुझे आशीर्वाद व बुद्धिमत्ता दें ताकि मैं उनकी पूरी क्षमता के साथ सेवा कर सकूं।कृपया मुझे आशीर्वाद दें कि मैं सब आसानी से संभाल पाऊँ "। मेरी प्रार्थना के बाद, मैंने अपने मूड में एक अच्छा बदलाव महसूस किया, और मुझे काफी राहत महसूस हुई।

अगले दिन, वे हमसे मिलने आए, और आँटी (चेयरमैन की पत्नी) को देखकर मै अवाक रह गई क्योंकि वो एक अतिसुंदर और बहुत दिव्य गणपति की मूर्ति ला रही थीं। मैं चकित थी और जान गई कि गुरुजी के एक रात पहले संकेत का क्या मतलब था। वे वास्तव में हमारे लिए आशीर्वाद लाए (गणेश जी का रूप मे) और वह भी गणेश उत्सव के दौरान। वाह! क्या आशीर्वाद था! मैंने गणेशजी को उपहार के रूप मे पाने के बारे में खोजा और पढ़ा की गणेश जी की मूर्तियाँ प्रसन्नता के रत्न हैं और समृद्धि लाती है । गणेश जी की मूर्तियों को उपहार के रूप में प्राप्त करना वास्तव में बहुत शुभ है क्योंकि वे सकारात्मक ऊर्जा आकर्षित करते हैं और सकारात्मकता उत्पन्न करते हैं।

हम अपने कमरे के मुख्य द्वार के बाहर गणेशजी की मूर्ति रखते हैं जब भी हम अपने घर पर सत्संग करते हैं, तो ठीक उसी तरह दिखते है जैसे कि बडे मंदिर के बाहर हैं। गणेश जी की मूर्ति को सब बहुत पसंद करते है और हमेशा इसकी सराहना करते हैं।

यह सत्संग एक बार फिर हमें सिखाता है कि हमें गुरुजी पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए ओर गुरुजी के वचन " मंगो नही मन्नो " का पालन करना चाहिए। क्योंकि हम नहीं जानते कि क्या और कैसे पूछना है। गुरुजी जानते हैं कि हमारे लिए सबसे अच्छा क्या है और वह भविष्य का पूर्वाभास कर सकते है जो हम नहीं कर सकते। गुरुजी सर्वज्ञाता हैं।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

करवाचौथ पर मुझे गुरुजी ने कैसे आशीर्वाद दिया

यह करवाचौथ 2019 का एक सुंदर सत्संग है।

करवाचोथ से कुछ दिनों पहले मैं सोच रही थी कि २ साल हो गए हैं इंग्लैंड शिफ्ट हुए। ओर पहले के २ करवाचौथ बोरिंग रहे क्योंकि मै समूह पूजा नही कर सकी, जिसका मैंने पिछले २० वर्षों से पालन किया था। मैंने गुरुजी से प्रार्थना की कि वह करवाचौथ २०१९ को मस्ती भरा, धन्य ओर यादगार बना दें।

मेरी प्रार्थनाओ का खूबसूरती से जवाब मिला। एक महिला भक्त जिनके मैं बहुत करीब हूं और उनको माँ मानती हूं , अविनाश आँटी , उन्होने मुझे एक लाल रंग का पर्स दिया जिसमें गुरुजी का स्वरूप था ओर वो पर्स मेरे सूट से मैचिंग (मेल) था जो मुझे करवाचौथ पर पहनना था, जबकि आँटी को नहीं पता था कि मैं कौन सा रंग पहनूँगी। जैसे कि सबको पता होगा कि इस त्यौहार के दिन महिलाएॅ पति की लंबी उमर के लिए उपवास रखती हैं ओर, वे इस दिन सात श्रृंगार करती हैं।

करवाचौथ से दो दिन पहले, मैंने अपना करवाचौथ सूट (ड्रेस) ट्राई करने का सोचा, जो मेरी भाभी ने उपहार में दिया था। मैंने पाया कि लाल (मरूनी सा) दुपट्टा जो उसके साथ आया था वह सादा था और जो मेरे पास एक वैकल्पिक गोल्डन (सुनहरा) दुपट्टा था जो मुझे अच्छा लगा, लेकिन पहनने के लिए बहुत भारी था। इस सुनहरे दुपट्टे को सत्संग मे गुरुजी (स्वरूप) को ओड़ाया था। इसलिए समस्या यह थी कि मेरे करवाचौथ सूट के साथ करने के लिए मेरे पास उचित दुपट्टा नहीं था । मैंने अपनी समस्या गुरुजी से साझा की और हलके से उन्हे कोइ हल निकालने के लिए कहा।

करवाचौथ से एक शाम पहले, एक संगत 'जॉय आंटी' अचानक से मेरे घर पर एक बड़े सरगी हैमपर (जिस पर गुरुजी का स्वरूप भी रखा था जैसे कि गुरुजी की ओर से भेजे गए का संकेत) आई ।

मुझे बहुत सुखद आश्चर्य हुआ जब मैंने जॉय से कहा कि उपहार हैम्पर (टोकनी) की जरूरत नहीं थी; ओर उन्होने कहा कि यह "गुरुजी से माईकी की सरगी" है। मुझे बहुत अच्छा लगा। शायद यह पर्याप्त नहीं था, मैंने पाया कि वो एक बैग भी लाईं जिसमे एक पोशाक जैसा कुछ था। उन्होने उस बैग की ओर इशारा करते हुए कहा कि आपके लिए कुछ ऐसा है जिसे आपको कल (करवाचौथ पर) पहनना होगा। मैं देख कर दंग रह गई कि वो मेरी करवाचौथ पोशाक से मैचिंग चमकदार लाल, सुनहरा बॉर्डर वाला दुपट्टा था। मैं बहुत चकित थी; आखिरकार, जॉय को मेरे सूट का रंग पता नहीं था। यह बहुत अच्छा और सुंदर था और पहनने के लिए हल्का भी, ठीक वैसा ही, जिसकी मुझे जरूरत थी और वांछित थी। जाहिर है, गुरुजी ने उनको मेरे लिए भेजा था। मुझे गुरुजी पर बहुत प्यार महसूस हुआ।

अगले दिन, करवाचौथ पर, अमृता आँटी, जसवीर आँटी, आरुषि आँटी और मैं, हम हमारी मेहंदी लगवाने के लिए स्पार्क हिल (बर्मिंघम के अंदरूनी शहर क्षेत्र) के पार्लर मे साथ गए। घर से बाहर निकलते समय, मैंने गुरुजी की सरगी हैम्पर से मेहंदी केन ले लिया और दो अन्य जो मै मैं भारत से लाई थी। स्पार्कहिल में एक पार्किंग स्थल प्राप्त करना कठिन है, लेकिन उस दिन हमें मिल गया वो भी सिमी के पार्लर के सामने (जहाँ हमे जाना था)।

उन अन्य २ महिलाओं और फिर आरुषि ने मेहंदी लगवाई।

जब मैं अपनी मेहंदी के लिए बैठी, हम सबने देखा कि मेरी मेहंदी का रंग अलग था । मैंने ब्यूटीशियन से पूछा और उन्होनें बताया कि २ कोन (जो मैं भारत से लाई थी) का अन्य ३ महिलाओं पर मेहंदी लगाने के लिए उपयोग किया गया था। इसलिए उन्हे मेरे हाथ पर मेहन्दी लगाने के लिए नया कोन खोलना पड़ा (हैम्पर में गुरुजी का भेजा हुआ कोन)। ऐसा लगा जैसे गुरुजी चाहते थे कि मैं अपनी मेहंदी के लिए उनके भेजे हुए कोन का उपयोग करूं।

शाम को, कई महिलाएं (गुरुपरिवार से) समूह पुजा के लिए मेरे घर आईं, उसके बाद बहुत मज़ा आया और हमने खेल खेले। बाद में हम स्मृति के लिए एक तस्वीर क्लिक करने के लिए इकट्ठे हुए। जब हमने तस्वीर देखी, तो हम हैरान थे कि मुख्य प्रवेश स्थान जहाँ पर हमने तस्वीर क्लिक की थी, उसके ठीक ऊपर गुरुजी का स्वरूप था, जैसे कि गुरुजी हमें 'सदा सुहागन रहो' का आशीर्वाद दे रहे थे।

गुरुजी ने मेरी प्रार्थना का जवाब दिया और मेरे करवाचौथ 2019, निश्चित रूप से, मस्ती से भर दिया और एक यादगार बना दिया था। गुरुजी ने इस अवसर को अधिक उत्सवमय बना दिया।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏🏼

गुरुजी ने मेरे पति के पीठ दर्द को ठीक किया

गुरुजी की शरण में आने के बाद गुरुजी की दुनिया और जीवन एक आनंद है। मेरे लिए, यह एक ऐसा सकारात्मक बदलाव है, संतोष की भावना है और स्वयं भगवान द्वारा संरक्षित होने की भावना है।

शुरुआत में, जब मैंने सत्संग में भाग लेना शुरू किया, तो मैं सत्संग की हर एक चीज़ से प्यार करती थी (और हमेशा करूँगी) जैसे सेवा अवसर से लेकर, ध्यान / सिमरन, गुरुपरिवार से मिलना, पवित्र लंगर/चाय प्रसाद, मंत्र जाप करना, आरती करना और सत्संगों को साझा करना/सुनना ।

मेरे पति पवन अंकल अभी तक गुरुजी से नहीं जुड़े थे। वह और उनका परिवार राधास्वामी के अनुयायी हैं। मैं कभी नहीं चाहती थी कि वह राधास्वामी का अनुसरण न करे, लेकिन मैं चाहती थी कि वह मेरे साथ सत्संग में भी आएँ, सकारात्मक आभा महसूस करें और धन्य हों। मैं उनको गुरूजी से जुड़ने के लिए गुरुजी को अरदास करने लगी। जल्द ही, गुरूजी ने मेरे अरदास को सुना और न केवल सत्संगों में बल्कि पवन अंकल को बडे मंदिर में भी बुलाया।

पहला सत्संग जिसमे उन्होंने भाग लिया था, वह सुनंदन अंकल के घर पर था। अगले दिन, वह दुबई और भारत की व्यापारिक यात्रा के लिए रवाना हुए। दुबई में उनकी एक व्यावसायिक बैठक में, उनके बाहरी ऑडिटर ने उनके साथ साझा किया कि उनकी बेटी कला में अच्छी थी। मेरे पति ने उनसे पूछा कि उनकी बेटी ने क्या क्या स्केच बनाए हैं। उस ऑडिटर ने उन्हें अपनी बेटी द्वारा बनाए हुए केवल 2 कला / चित्र दिखाए। एक गुलाब का फूल था और दूसरा 'ओम 'का चिन्ह था जो उनकी बेटी ने अपने पिता की बांह पर बना रखा था (नीचे देखें)।

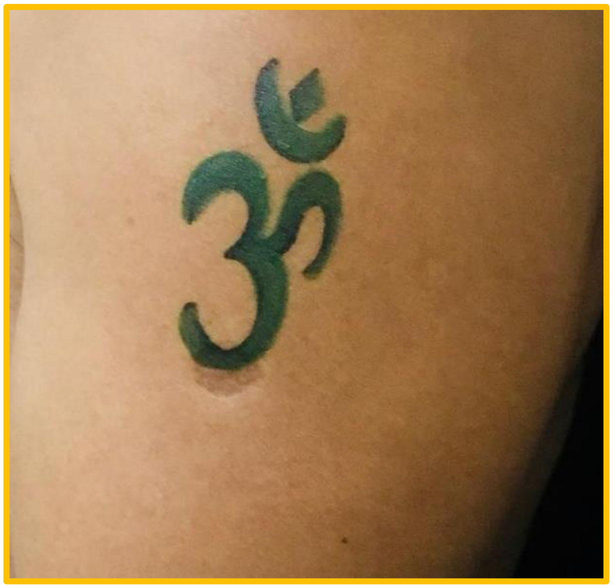

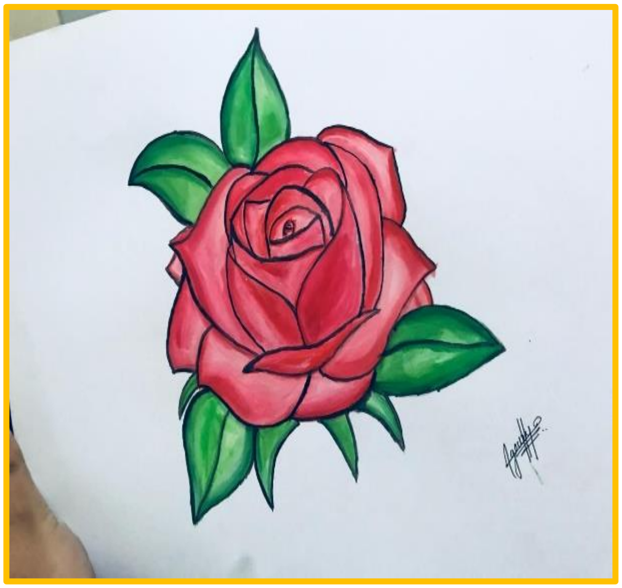

यह एक संयोग नहीं हो सकता है और वह भी एक के बाद एक।

एक कलाकार द्वारा बनाई जा सकने वाली कई चीजों के बीच, उन्होंने मेरे अंकल को केवल वो ही २ दिखाइ जो गुरुजी के प्रतीक हैं।

हम बेहद हैरान थे। मुझे एहसास हुआ कि गुरुजी वास्तव में उन्हें बुला रहे थे।

जल्द ही, मेरे अंकल को बडे मंदिर बुलाया गया। यद्यपि उनके अनुसार, वह मेरे अनुरोध पर सेवादार प्रवीण अंकल से गुरुजी का स्वरूप प्राप्त करने जा रहे थे, मुझे यकीन था कि यह गुरुजी थे जो वास्तव में उन्हें खींच रहे थे और आशीर्वाद दे रहे थे।

वह कई वर्षों से लगातार पुराने पीठ दर्द से पीड़ित थे। उन्होंने हर्निया का ऑपरेशन करवाया था फिर भी दर्द कम नहीं हुआ था। यह उनके लिए बहुत दर्दनाक हुआ करता था और उनकी व्यापारिक यात्राओं में सामान उठाने के कारण वह दर्द बढ़ जाती थी ।

18 अक्टूबर 2018 को, बड़े मंदिर में प्रवेश करते समय, उनकी पीठ में दर्द शुरू हो गया और बहुत गंभीर हो गया। वह किसी तरह लंगर प्रसाद के लिए अंदर जाकर बैठ गए। लंगर प्रसाद के लिए बैठने पर दर्द और बढ़ गया। उन्होंने प्रसाद खाया और अपने घर के लिए गुड़गांव रवाना हो गए। वह पूरी रात दर्द में थे लेकिन अगली सुबह, जब वह उठे तो उन्हें बहुत हल्का महसूस हुआ और दर्द हमेशा के लिए गायब हो गया। उनको फिर कभी पीठ में दर्द नहीं हुआ। शुकराना गुरुजी का उनका इलाज करने के लिए और उन्हें आपका आभारी बनाने के लिए।

जल्द ही, मेरे अंकल ने मेरे साथ सत्संग में जाना शुरू कर दिया। पवन अंकल जब भी भारत जाते हैं, गुरुजी उन्हें बडे मंदिर में बुलाते हैं। उन्हें पूरे गुरुपरिवार से बहुत प्यार मिलता है और जिस तरह से सत्संग में सेवा के रूप में वे बच्चों की देखभाल करते हैं, वह सराहनीय है। कोई भी यह नहीं बता सकता है कि वह केवल एक वर्ष से गुरुजी की शरण में है। मेरी अरदास को सुनने और इतनी जल्दी पूरा करने के लिए शुकराना गुरुजी।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

गुरुजी और मेरा प्यार

मेरे गुरुजी अपरम्पार, ते क्यूं न करूं मैं प्यार
भरते सबकी झोलियां, करते बेडा पार
मेरे गुरुजी पालनहार, ते क्यूं न करूं मैं प्यार

सब जगह से गई मैं हार, इक एहिओ सच्चा दरबार
मेरे गुरुजी दा सजया दरबार, मैं आँवाँ बारम्बार
मेरे गुरुजी पालनहार, ते क्यूं न करूं मैं प्यार

साडे अंग संग रेहदें गुरुजी, आर या पार
सत्संग बुलाके देते रहमताँ बेशुमार
मेरे गुरुजी अपरम्पार, ते क्यूं न करूं मैं प्यार

दर्शन देदो गुरुजी, सुनलो मेरी पुकार
बटरफ्लाई, गुलाब या मोर किसी वी रूप आकार
आसाँ लेके आई, मैं आई तेरे द्वार
दर्शन देदो गुरुजी, शुकराना करो स्वीकार
मेरे गुरुजी पालनहार, ते क्यूं न करूं मैं प्यार

रचयिता: गुरुजी की सेवादार मधु मदान
(मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा)

दयालु गुरूजी महाराज की कृपा से घर का हीटर ठीक हुआ

मार्च 2019 में, हमने देखा कि हमारे ड्राइंग रूम में हीटर काम नहीं कर रहा था। कमरा ठंडा और बहुत असहज था। मैंने संपत्ति प्रबंधक से शिकायत करने के लिए अपने पति (पवन अंकल) से कहा, लेकिन इससे कोई मदद नहीं मिली। गर्मियां आ गईं और मुद्दा दब गया।

सितंबर में, मेरे पति ने संपत्ति के मालिक को याद दिलाया और उन्हें कार्रवाई का आश्वासन दिया गया। कुछ नहीं हुआ। मैंने मामलों को हाथ में लिया और संपत्ति के प्रभारी से बात की। तकनीशियनों ने आकर निष्कर्ष निकाला कि हीटर को बदलने की जरूरत है। कुछ दिनों बाद जब मैंने पूछा, मुझे बताया गया कि वे विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं से कोटेशन प्राप्त करने की प्रक्रिया में हैं और जल्द ही हमारे लिए एक नया हीटर भेजा जाएगा। एक हफ्ता बीत गया और मैंने फिर उनसे पूछा। मुझे आश्वासन दिया गया था कि नए हीटर के लिए एक आदेश दिया गया था और इसे कुछ हफ़्ते के भीतर वितरित कर दिया जाएगा।

तब तक सर्दी आ गई थी, लेकिन हीटर नहीं चला। मैंने संपत्ति प्रबंधक के साथ पूछताछ की और कहा गया कि तकनीशियनों को हीटर की स्थापना और विशिष्टताओं के लिए आवश्यक आयामों को मापने के लिए मेरे घर पर फिर से आने की जरूरत है। मैंने सोचा कि इस जानकारी के बिना एक नए हीटर के लिए ऑर्डर कैसे रखा जा सकता है। क्या वे अभी तक हमे बेवकूफ बना रहे थे?

मैंने तकनीशियन को एक दिन घर आने के लिए कहा जब मैं काम से छुट्टी ले लूंगी। लेकिन वह नहीं आया क्योंकि फील्ड कॉल में उम्मीद से ज्यादा समय लगा था। मैं गुस्से में थी और मामले को फिर से उठाया। मुझे हीटर के लेबल का एक स्नैपशॉट लेने के लिए कहा गया था ताकि उन्हे इसकी विशिष्टताओं की जांच करने के लिए शारीरिक रूप से न आना पड़े। यह सिलसिला नवंबर तक चलता रहा।

एक शाम, काम से लौटने के बाद, मैं अपने पति के साथ ड्राइंग रूम में बैठी थी। ठंड बढ़ रही थी और हम कांप रहे थे। मैं गुरुजी के स्वरूप के सामने बैठी थी और उनसे निवेदन किया "गुरुजी, हीटर कब ठीक कराओगे? बहुत थंड लगती है।" अगली सुबह, तकनीशियन आ गया और फिर से सेटअप की जांच करना चाहता था। कुछ ही मिनटों में, उसने हीटर को ठीक कर दिया था। मैं हैरान थी। हीटर को प्रतिस्थापित किया जाना था, तो फिर अचानक तकनीशियन हमारे घर पर फिर से पुराने हीटर को जांच करने के लिए कैसे आया जब कि यह पहले से ही निष्कर्ष निकाला गया था कि हीटर खराबी के कारण काम नहीं कर रहे थे।

यह सब गुरूजी के हस्तक्षेप से हुआ था। निस्संदेह, यह हमारे प्रिय गुरुजी थे, जो अपनी बेटी की कंपकंपी सहन नहीं कर सके, इसलिए हमारे हीटर को ठीक करके हमें आशीर्वाद दिया। तब से, हमारा कमरा पूरी तरह से गरम और आरामदायक है।

इससे साबित होता है कि गुरुजी हमारी छोटी-मोटी समस्याओं का भी कैसे ख्याल रखते हैं। गुरुजी के साथ अपनी समस्याओं को साझा करें, उनके स्वरूप के सामने बैठे और वह सुनते हैं और हल निकालते हैं। गुरुजी से प्यार करो और वह तुम्हें प्यार करते हैं और एक पिता की तरह आपकी रक्षा करते हैं।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

लंगर प्रसाद और सेवा से जोड़ों का दर्द गायब हुआ

पिछले जुलाई में, मेरे जोड़ों में इतना दर्द हुआ कि मैं अपने हाथों में चाकू भी नहीं पकड़ सकती थी। मैंने हाथों से चीजों को पकड़ने की क्षमता खो दी। मैंने नेट खोजा और यह जान कर व्यथित थी कि कैल्शियम की कमी की सबसे अधिक संभावना थी और मुझे हरी पत्तेदार सब्जियों और दूध के साथ-साथ दूध उत्पादों की खपत में वृद्धि करनी चाहिए। मेरे पति उस समय भारत में थे, कुछ दवाइयाँ लेकर वापस आए। मेरी बेटी ने जोर दिया और मुझे रक्त परीक्षण के लिए ले गई। डॉक्टरों ने मुझे एक्स-रे करवाने, कुछ और परीक्षण करने और कम से कम 8 सप्ताह तक कैल्शियम की भारी खुराक लेने को कहा।

मैं गुरुजी के स्वरूप के सामने बेबसी का रोना रोती थी। गुरुजी से प्रार्थना करते हुए, मैंने उनसे दर्द को ठीक करने के लिए कभी नहीं कहा क्योंकि मैं गुरुजी के वचन को मानती हूँ कि "मांगो नहीं, मानो", हमें मांगना नहीं आता, हम नहीं जानते कि क्या मांगना सही है।

मैंने गुरुजी को मुझे हिम्मत देने के लिए अरदास की। मैं संगत से बात करना चाहती थी और गुरुजी से पूछा कि मुझे किससे बात करनी चाहिए। मैंने अंदर से पंजाबी में सुना "व्हाट्सएप खोल, जो इस वक्त (ऑनलाइन) दिखे, ओन नाल फ़ोन ते गल कर।" मैंने शैला आंटी को ऑनलाइन पाया और मुझे खुशी हुई कि गुरुजी ने उन्हें मुझसे बात करने के लिए चुना क्योंकि उन्हें ताकत का एक स्तंभ माना जाता है जिस तरह से उन्होने कैंसर से अपनी लड़ाई बहादुरी से लड़ी और मजबूत होकर उभरी । मैंने उन्हे फोन किया, उनके साथ बात की, और जैसा कि उम्मीद थी, उनसे मुझे ताकत और साहस की खुराक मिली। गुरुजी उनपर अपना भरपूर आशीर्वाद बनाए रखें।

कुछ दिनों बाद, 27 जुलाई को, हमने मोहित अंकल के घर वोलवरहैम्पटन में एक सत्संग में भाग लिया। मुझे पूरा यकीन था कि गुरुजी मुझे उस सत्संग में ठीक कर देंगे। उस सुबह, मैंने बहुत बेहतर महसूस किया। बाद में शाम को जब मैं सत्संग में गई, तो मैं लंगर प्रसाद में खीर और सरसों का साग देखकर चकित थी। मैं आश्चर्यचकित था कि मुझे हरी सब्जी (साग) और दूध उत्पाद (खीर) मिल रही थी, जिसे खाने की मुझे चिकित्सकीय सलाह दी गई थी। इससे मेरा विश्वास मजबूत हुआ कि गुरुजी मुझे उस सत्संग के दौरान पूरी तरह से ठीक कर देंगे। निश्चित रूप से, मैं लंगर प्रसाद के साथ पूरी तरह से ठीक हो गई थी। तब से, मुझे अपने जोड़ों में कभी दर्द नहीं हुआ। कल्पना कीजिए कि मैंने कभी कोई दवा नहीं ली लेकिन उनके आशीर्वाद के साथ उनके लंगर प्रसाद के माध्यम से मै बिल्कुल ठीक हो गई।

एक और बात जो मैंने हाल ही में देखी कि पिछले साल से मुझे रोटियां बनाने की सेवा मिल रही है। लगभग हर सत्संग के लिए, जिसमें हमने भाग लिया था, मुझे यही रोटी की सेवा मिल रही थी, जो निस्संदेह मुझे खुश कर रही थी क्योंकि कोई भी सेवा एक आशीर्वाद है॥

हालांकि, मुझे आश्चर्य था कि मुझे एक विशिष्ट सेवा ही क्यों मिल रही थी। ऐसा होता था कि यद्यपि मैं रोटियों के लिए पर्याप्त आटा गूंधने की पूरी कोशिश करती थी लेकिन कुछ चपातियों के लिए आटा हमेशा कम पड़ जाता था और मुझे हमेशा आटा दोबारा गुनना पड़ता था।

हाल ही में, जब मैं दूसरी बार आटा गूंथ रही थी, तो एक अंदरूनी पंजाबी आवाज ने कहा: "एह करा करा के मैं तेरा जोड़ों दा दर्द ठीक कीता है "। (ऐसा लगा जैसा गुरुजी कह रहे थे कि उन्होंने मुझे आटा गूंथने (रोटी की) सेवा देकर मेरे हाथों के जोड़ों के दर्द को ठीक किया है। जैसे ही मैंने वो पंजाबी आवाज़ सुनी, जो शबद मेरे मोबाइल पे प्लेलिस्ट मे उस वक्त बज रहा था, वह सेवा की ही थीम (विषय) पर था। कीर्तनी या पाठी (रागी जी) इस बात पर जोर दे रहे थे कि सेवा, चाहे वह बड़ी हो या छोटी, बहुत शक्तिशाली है , सेवा सर्वोच्च है और हमारे द्वारा प्राप्त की सेवा के पीछे हमेशा एक विशिष्ट कारण होता है। ये सह-घटनाएं नहीं हो सकतीं, जैसा कि गुरुजी खुद कहते हैं।गुरूजी की दयालुता अद्भुत और मर्मस्पर्शी है।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

नये साल की पहली अमृतवेला

नया साल है, नई सुबह है, नया है अमृतवेला
रहो गुरुजी अंग संग मेरे, हर पल हर इक वेला
नया साल है, नई सुबह है, नया है अमृतवेला

दूर करो मन मैल, करो मन मेरा साफ
पुराना साल बीता, पुरानी गलतियाँ माफ़
नया साल है, नई सुबह है, नया है अमृतवेला
रहो गुरुजी अंग संग मेरे, हर पल हर इक वेला

लूँ हर साँस में तेरा नाम, शुकराना हर इक वेला
बख्श दो सारे पाप, जिनको आपने झेला
नया साल है, नई सुबह है, नया है अमृतवेला
रहो गुरुजी अंग संग मेरे, हर पल हर इक वेला

हर सोच काम विचार में, रहे आपकी रज़ा
भूल कभी हो जाए, तो देना ना सज़ा
नया साल है, नई सुबह है, नया है अमृतवेला
रहो गुरुजी अंग संग मेरे, हर पल हर इक वेला

सत्संग यूँही आता रहूं, भाए न अब कोइ मेला
गुरुपरिवार से जुड़ा रहूं, न रहूं कभी अकेला
नया साल है, नई सुबह है, नया है अमृतवेला
रहो गुरुजी अंग संग मेरे, हर पल हर इक वेला

रचयिता: गुरूजी की सेवादार मधु मदान
(मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा)

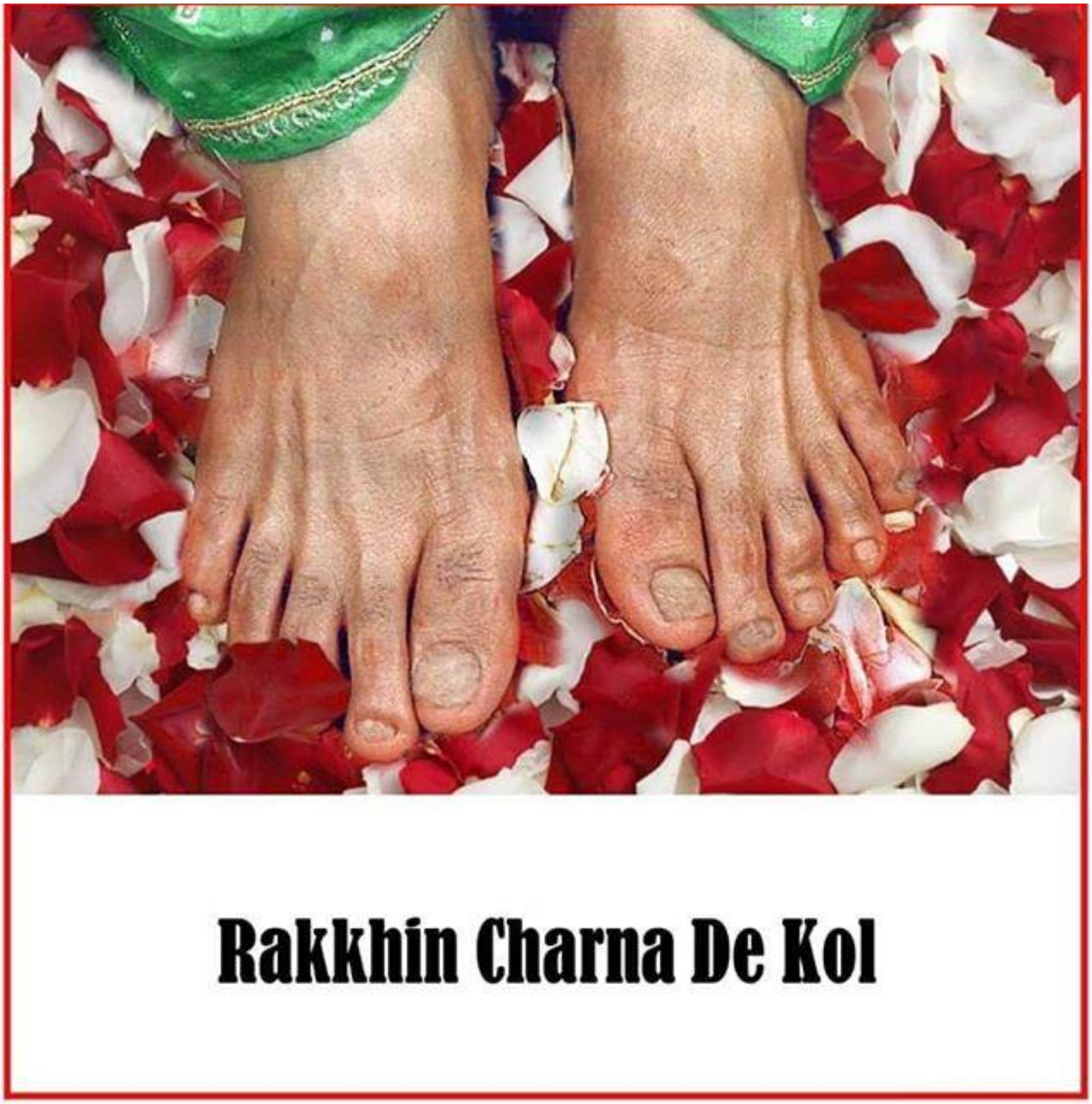
Rakkhin Charna De Kol

खरीदारी में मेरे साथ - मेरी सबसे अच्छी खरीदारी

एक रविवार को, मुझे अपने ऑफिस वियर ट्राउजर की खरीदारी के लिए जाना था। हमेशा की तरह, मैं बाहर जाने के लिए थोड़ी आलसी थी। इसलिए, खरीदारी करने के लिए घर से निकलने से पहले, मैंने पूरे दिल से गुरुजी को मेरे साथ खरीदारी के लिए साथ चलने को और मेरी कपड़े खरीदने में मदद करने को कहा! मैंने गुरुजी से अनुरोध किया कि वो मेरी खरीदारी शीघ्र करा दें, और सुनिश्चित करें कि मैं वो कपड़े ही खरीदू जिसकी वास्तव मे जरुरत हो और जिन्हे खरीद कर मुझे बाद में पछताना ना पड़े।

हमने 'X' स्टोर से खरीदने के बारे में सोचा था लेकिन गुरुजी हमें 'Y 'स्टोर (एक प्रीमियम ब्रांड में ले गए जिसे मैं आमतौर पर नहीं खरीदती) । जब हमने प्रवेश किया, हमने एक बड़ी बिक्री (भारी छूट) देखी, तो हमने महसूस किया कि गुरुजी ने हमें उस स्टोर में ले जाकर सही मार्गदर्शन किया। हालाँकि मैं ऑफिस वियर खरीदने गयी थी, फिर भी मैंने केवल एक ऑफिस वियर और 2 जीन्स खरीद डाली। मेरा जीन्स खरीदने का कोई इरादा नहीं था क्योंकि उन्हें हमारे दफ्तर मे केवल शुक्रवार को पहना जा सकता था (शुक्रवार को ड्रेस डाउन पालिसी हुआ करती थी) बाद में, मुझे 2 जीन्स खरीदने का पश्चाताप हुआ। मेरे मन में गुरुजी से बात होने लगी "गुरूजी, आपने मुझे 2 जींस क्यों खरीदवाई ?, उनका उपयोग केवल शुक्रवार के लिए किया जाएगा। " सोमवार को जब मैं ऑफिस पहुंची और अपना इनबॉक्स खोला, तो मै सर्कुलर पढ़कर हैरान हो गई। उसमे लिखा था कि आज के बाद हर दिन शुक्रवार होगा जिसका अर्थ है कि कर्मचारी हर दिन (पूरे सप्ताह) जीन्स पहन सकते हैं। मुझे आश्चर्य हुआ कि गुरुजी ने किस तरह से मुझे कपड़े खरीदवाए, वह जानते थे कि वो जीन्स ही मेरे बहुत काम आयेंगी, मुझे याद है कि मैंने गुरुजी को अपने साथ चलने का अनुरोध किया था और वास्तव में गुरुजी खरीदारी के दौरान हमारे साथ थे।

जब मैं इस पुस्तक के लिए सत्संग संकलन के बीच में थी, एक शाम मुझे अचानक इस जींस सत्संग की याद आ गई और मैने मेरे अंकल से पूछा "क्या मुझे इसे किताब में लिखना चाहिए?" उन्होंने जवाब दिया "नहीं, यह जींस व खरीदारी के बारे मे पढ़ना थोड़ा अजीब लगेगा"। मैंने उनसे कहा कि यह एक बहुत ही प्यारा सत्संग है और मैं वास्तव में अपने दिल से इसे साझा करना चाहती हूं। मैं उस सत्संग को शेयर करना चाहती थी लेकिन मेरे अंकल ने मुझे सलाह दी कि नहीं, इसलिए मैंने उसे लिखने का विचार छोड़ दिया। इसके तुरंत बाद, मैने अपना मोबाइल उठाया ओर डिंपल आँटी द्वारा एक पोस्ट पढ़कर हैरान हो गई जिसमें उन्होंने लिखा था "यह मंच (सत्संग साझा करने का मंच) न ही छाप छोड़ने के लिए है और न ही दिखावे के लिए तो कृपया अपने गुरु के बारे मे हर तरह का शुक्राना सत्संग लिखो ओर अपने गुरु की सीधेपन से, सच्चाई से, हृदय से प्रशंसा करना कुछ गलत नही है "। मुझे एक बार फिर यह देखकर आश्चर्य हुआ कि गुरूजी मुझे उस जीन्स सत्संग को लिखने के लिए कैसे निर्देशित कर रहे थे।

हमारे गुरुजी इतने दिव्य हैं और उनके मार्गदर्शन देने के तरीके कल्पना से परे हैं। ऐसे सत्संगों के साथ, मेरा भरोसा, गुरुजी के प्रति मेरा विश्वास और मजबूत हो रहा है।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

गुरूजी हमें स्वस्थ करते हैं जब हम उनके लिए नृत्य करते हैं

नवंबर 2018 में, मैं सोच रही थी कि 23 नवंबर को एक वर्ष हो जाएगा जब गुरुजी ने मेरी नौकरी के लिए मुझे अविश्वसनीय आशीर्वाद दिये थे (जिसके बारे मे मैंने विस्तार से इसी पुस्तक में एक अलग सत्संग (गुरु कृपा से सर्वोत्तम नौकरी) मे साझा किया है)। मैं उन खूबसूरत यादों को फिर से ताज़ा महसूस कर रही थी कि कैसे मुझे अद्भुत, कभी न भूलने वाला आशीर्वाद गुरुजी से 23 नवंबर 2018 को मिला जिस दिन गुरुपुरब (गुरु नानक गुरुपुरब । गुरु नानक जयंती) भी था।

मेरे पास शब्द नहीं है धन्यवाद देने के लिए जो गुरुजी ने मेरे लिए किया और अभी भी कर रहे हैं। मैं अपने दिल में गुरुजी से पूछती रही "क्या विशेष करूं आपके लिए, क्या खास करूँ आपके लिए, आपको शुक्राना के रूप में?"

मैं २३ नवंबर को एक सत्संग करना चाहती थी ताकि संगत के साथ मैं अपने शुकराना को गुरुजी को अर्पित कर सकूं। गुरुजी हमारी पूजनीय अविनाश आंटीजी को सपना दिखा कर इसे संभव बनाया, जो आंटीजी ने एक सप्ताह पहले विधु आंटी के अमृतवेला सत्संग में साझा किया था।

हम सभी ने सोचा कि सपना सत्संग की मेजबानी के लिए गुरुजी के संदेश को दृढ़ता से व्यक्त करता है। हम ज्यादातर सप्ताहांत में सत्संग करते हैं। अगला उपलब्ध सप्ताहांत 23 नवंबर (रविवार)का था।

उन्हे तुरंत विचार आया कि चूंकि वह १९-२९ नवंबर को अपनी वार्षिक छुट्टी पर होंगी (ऐसे लगा जैसे कि गुरुजी ने पूर्व नियोजित कर रखा था), इसलिए वह आसानी से घर पर सत्संग रख सकेगीं और सत्संग की तैयारी कर सकेगीं । उन्होने तुरंत अपना मन बना लिया और गुरुजी ने मुझे सत्संग के लिए निमंत्रण कार्ड बनाने का आशीर्वाद दे दिया।

देखिए कैसे गुरुजी ने सब कुछ प्लान किया। मैं उस विशेष दिन पर सत्संग करना चाहती थी और गुरूजी ने अविनाश आंटी के यहाँ सत्संग कराया, जो मेरी माँ की तरह है (मैं उन्हें अपनी यूके की माँ कहती हूँ) ।

उस सत्संग से एक दिन पहले 22 नवंबर 2018 को, मेरे दिमाग में गुरुजी के लिए नृत्य करने का एक विचार आया (गुरुजी का संकेत था समझो) । मुझे याद आया कि कैसे गुरुजी उनके सामने संगत को नृत्य करवाते थे ताकि वह उनके शरीर को एक्स-रे की तरह स्कैन कर सकें और उनकी बीमारी ठीक कर दें ।

इसलिए, मैंने हर संगत के लिए बारी बरसी बोलियां (या टप्पे) बनाने का फैसला किया ताकि जब उनके नाम वाली विशिष्ट टप्पी आएगी तो वे गुरुजी के सामने आकर नृत्य करेंगे। मुझे पता था कि हमारे कुछ संगत स्वास्थ्य मुद्दों से गुजर रहे थे।

कमाल की बात यह है कि २३ वें नवंबर (शाम को सत्संग से पहले) के अमृतवेला समय में, मैंने फिर से गुरुजी से पूछा कि आपने बताया नहीं कि क्या खास करूँ आपके लिए, गुरु कृपा व आपके आशीर्वादों का शुक्राना करने के लिए क्या पेश करूँ? और पंजाबी में तुरंत जवाब आया "तूँ कर ते रही हें बारी बरसी टप्पे ते, संगत दे कल्याण वास्ते।"

यह गुरुजी का समर्थन करने जैसा था। अंत में, हमने २३ नवंबर को सत्संग में 'हीलिंग डांस' किया। हमने न केवल अपने प्रिय गुरुजी के लिए नृत्य का आनंद लिया, बल्कि उनका आशीर्वाद भी प्राप्त किया।

अगले दिन, मुझे हमारे कई संगतों ने बताया कि उनकी बीमारी ठीक हो गई है। जैसे मेरी पेट की समस्या दूर हो गई, एक आंटी की सिस्ट पिघल गई (एक साल की समस्या हल हो गई), एक और आंटी की टांग का दर्द ठीक हो गया, मेरी बेटी आरुषि की गर्दन का दर्द ठीक हो गया और एक अंकल की पीठ लगभग ठीक हो गई। अद्भुत हैं गुरुजी के तरीके, कैसे उन्होंने हमें उपचार नृत्य द्वारा आशीर्वाद दिया!

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏🏻

गुरूजी का पलक झपकाना: आशीर्वाद का प्रतीक

जनवरी 24, 2020 को अमृतवेला का समय था और मैं गुरुजी के स्वरूप के सामने बैठी थी, उनसे बात कर रही थी और उनसे पूछ रही थी कि “गुरुजी कृपा करके कभी तो बात करो, दर्शन दो, अपनी उपस्थिति महसूस कराओ, आंखे झपकाओ, मैं भी आपके करोड़ों भक्तों में से एक हूँ। " एक दिन पहले भी शाम को मैं गुरुजी से यही पूछ रही थी।

👇 नीचे देखें 👇 क्या आया मेरे इनबॉक्स (संदेश।मैसेज) मे- चित्र जिसमें गुरुजी अपनी आँखें झपका रहे हैं।

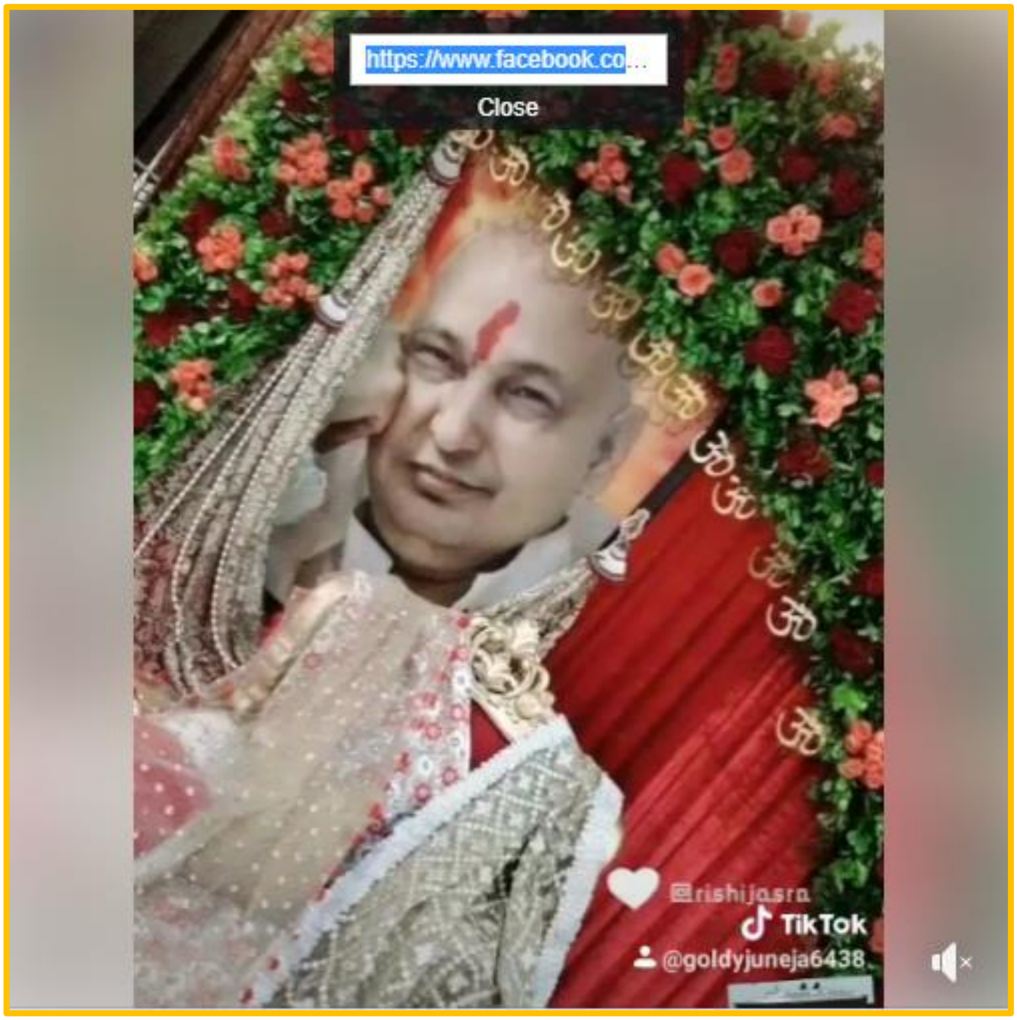
https://www.facebook.co...
Close
@rishijasra
TikTok
@goldyjuneja6438

गुरुजी की झपकती आँखों को देखने के लिए आप नीचे क्लिक कर सकते हैं: https://www.facebook.com/neeti.chopra.3/videos/2565701373527012/

सूरज भी तूँ, चँदा भी तूँ, मेरी इन आँखों का तारा है तूँ;
गुलाब भी तूँ, मोर भी तूँ, इस जग में सबसे प्यारा है तूँ।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

हमारी शादी की सालगिरह पर गुरुजी का अद्भुत आशीर्वाद।

8 मार्च 2020

कल (7 मार्च) को हमारी शादी की सालगिरह थी और हमने गुरुजी और उनकी सगंत के साथ सालगिरह मनाने के लिए अपने घर पर गुरुजी के सत्संग का आयोजन किया था। मैं गुरुजी को अपनी वर्षगांठ पर विशेष आशीर्वाद देने के लिए कह रही थी और मैं चाहती थी कि गुरुजी हमें अलग तरह से आशीर्वाद दें, जिसे मैं हमेशा याद रखूं। गुरुजी ने यह कैसे पूरा किया यह अद्भुत है!

Happy Anniversary Madhu & Pawan Ji - T

कल सुबह 5-5.30 बजे जब मेरे पति पवन अंकल और मैं सो रहे थे, एक बहुत अच्छा सुखदायक संगीत बजा जिसने हमें जगाया। बहुत अच्छा और शांत, आरामदायक संगीत। ऐसा लगा जैसे हम स्वर्ग में लाइट ऑफ और अच्छी आत्मा को छूने वाले संगीत के साथ हैं। हम दोनों उस के स्रोत को खोजते रहे पर नहीं जान पाए। यह उनके फोन सनहीं था।

तब यह मेरे फोन से होना था और यह वास्तव में मेरे फोन का अलार्म था। लेकिन हम सोच रहे थे कि जब मैने या किसी ने भी मेरे फोन में कोई टोन सेटिंग नहीं बदली तो वह आवाज, टोन कैसे आई। विशेष रूप से जब आपके घर पर सत्संग हो और इतनी तैयारी करनी हो तो रिंग टोन बदलने का समय किसके पास है? यह, निस्संदेह, गुरुजी थे। हमारे विशेष दिन पर इस विशेष आशीर्वाद के लिए शुकराना गुरुजी।

वह मेरी याद में हमेशा ताज़ा बना रहेगा। यह शादी की वर्षगांठ हमेशा मेरे लिए यादगार रहेगी।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

सालगिरह पे गुरूजी के लिए खास

क्या भेंट दूँ गुरुजी, क्या करूँ मैं खास
परोसूँ श्रद्धा आपको, जो है मेरे पास
क्या भेंट दूँ गुरुजी, क्या करूँ मैं खास

सत्संग सेवा के सिवा, अब नहीं कुछ आता रास
अंग संग रहते हमारे, है यह अहसास
क्या भेंट दूँ गुरुजी, क्या करूँ मैं खास

लूँ हर वेले तेरा नाम, ना खाली जाए कोई सांस
कभी न छोड़ना साथ, बस यही इक अरदास
क्या भेंट दूँ गुरुजी, क्या करूँ मैं खास

सालगिरह, जन्मदिन हो या कोई त्योहार
आप ही के साथ, मनाऊँ खुशी हर बार
आप ही के नाम से हो दिन का आगाज़
आप के चरणों में, लूँ मैं आखरी सांस
क्या भेंट दूँ गुरुजी, क्या करूँ मैं खास

पवन, आरुषि, मेरी और संगत की, तरफ़ से, शुकराना है ये खास
रखीं चरणा दे कोल, बस यही इक अरदास
क्या भेंट दूँ गुरुजी, क्या करूँ मैं खास

रचयिता: गुरूजी की सेवादार मधु मदान
(मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा)

मेरे व्यवसायी जीवन में गुरुजी का आशीर्वाद

मुझे खुशी हुई है (और मै हमारे प्यारे गुरुजी के लिए आभारी हूं) यह हाल ही का सत्संग साझा करते हुए, जो कुछ समय पहले हुआ । हर महीने हमारे देश के सभी कार्यालयों से कर्मचारियों की मासिक बैठक (सभा) होती है। आमतौर पर यह हमारे लंदन हेड ऑफिस में होती है लेकिन इस मौजूदा स्थिति । कोविड 19 के कारण, हम इस महीने की बैठक में आभासी तौर पर शामिल हो रहे हैं। यह बैठक बस अभी खत्म हुई है और जिस तरह से गुरूजी ने मुझे आशीर्वाद दिया, मैं गुरुजी की बहुत आभारी हूँ।

हमारी इस मासिक सभा में एक 'जश्ने लम्हे' नामक एक सेगमेंट है, जिसमें अति उत्कृष्ट कर्मचारी जो कंपनी के लिए कुछ अनुकरणीय काम करता है (अनुकरणीय प्रदर्शन), पुरस्कार के लिए किया जाता हैं, उसे मान्यता प्राप्त होती है और उसकी सराहना की जाती हैं। जब यह खंड शुरू हुआ और तीसरा नामांकन पढ़ा जा रहा था, मैंने अचानक गुरुजी के स्वरूप (जो मेरे इस मेरे कमरे में है) को देखा और हाथ जोड़कर कहा, "जय गुरुजी" । और क्या आप सभी विश्वास करेंगे? तत्काल अगली स्लाइड में अनुकरणीय कार्य के लिए नामांकन के रूप में मेरा नाम था। मैंने कहा "गुरुजी, आप बहुत प्यारे हैं"। मै हमारे प्यारे गुरुजी के लिए आभारी हूँ।

SHUKRANA GURUJI 🙏🕉🙏

गुरुजी के जल प्रसाद और मन्त्र जाप में शक्ति

अप्रैल 7, 2020

कल सुबह, मुझे अचानक खराब खांसी हुई जिसने मुझे जगा दिया। यह इतना गंभीर था कि मेरे पति भी जाग गए। वह चिंतित हो गए (इस कोविद -19 संकट के कारण और खांसी को लक्षणों में से एक के रूप में जाना जाता है) । मै हमेशा से यह मानती रही हूँ कि गुरुजी उनकी संगत की रक्षा करते हैं और उन्हे कुछ भी नहीं होने देंगे। मुझे यकीन था कि गुरुजी ध्यान रखेंगे।

गले में खांसी मुझे परेशान कर रही थी। मैं उठी, नहाई, और उबला हुआ पानी (नींबू के साथ) तैयार किया, जिसे मैं रोजाना पीती हूं। कल, मैं विशेष रूप से इसे लेना चाहती थी क्योंकि मुझे पता है कि अगर गले में कोई वायरस है, तो ऐसे गर्म पानी (नींबू के साथ) पीने से मर जाएगा।

मैंने गुरुजी से कहा कि "गुरुजी, कृपया इस भोग को स्वीकार करें और इसे ब्लैस करके अमृत और औषधि बनाएं और मेरी खांसी को दूर करें"। फिर मैंने इसे कुछ मिनटों के लिए गुरुजी के स्वरूप के सामने रखा और फिर उठाकर धीरे-धीरे पिया। जैसे ही मैंने पीना समाप्त किया, मेरी खांसी बंद हो गई और पूरे दिन फिर से नहीं हुई। मेरे अंकल को भी यकीन था कि गुरुजी ने मुझे बचा लिया ।

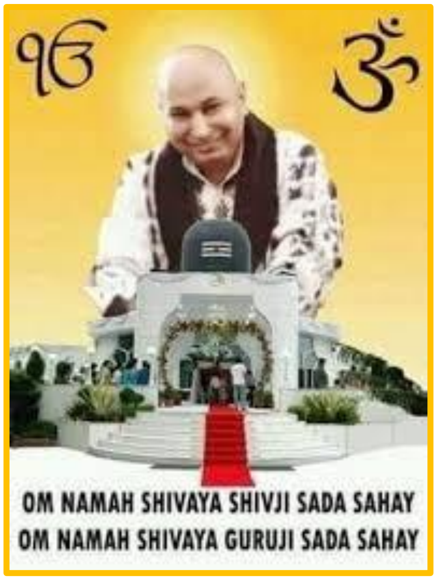
ੴ
ॐ
OM NAMAH SHIVAYA SHIVJI SADA SAHAY
OM NAMAH SHIVAYA GURUJI SADA SAHAY

फिर रात में लगभग 12 (आधी रात), मैं अभी भी जाग रही थी, फिर से खांसी हुई (लेकिन इस बार कम गंभीर) । मेरे अंकल ने मुझे आराम करने की सलाह दी। सो, मैं सोने चली गई। खांसी के साथ सोते समय, मैंने मन में मंत्र जाप करना शुरू कर दिया। जल्द ही खाँसी चली गई और मुझे अच्छी नींद आई। शुकराना गुरुजी🙏

खांसी की समस्या फिर से कभी नहीं आई। शुकराना गुरुजी🙏

गुरूजी हमेशा अपनी संगत की रक्षा के लिए होते हैं, इसलिए कृपया डरें नहीं, चिंता न करें लेकिन कृपया पूरी सावधानी बरतें (जैसे घर पर रहना, लगातार गर्म तरल पदार्थ पीना) । यदि आप बीमार पड़ते हैं, तो गुरूजी का जल प्रसाद लें और मंत्र जाप करें। मंत्र जाप आपके मन में भी किया जा सकता है ।

पानी या कुछ भी अगर आप गुरुजी को चढ़ाते याभोग लगवाते हैं (पूरी प्रार्थना के साथ कि इसे आशीर्वाद दे और अमृत व दवाई बना दें,) और थोड़ी देर के लिए उनके स्वरूप के सामने रखें तो वह प्रसाद हो जाता है। मैंने पहले भी यह कोशिश की है और ऐसे जैल प्रसाद ने हमेशा मेरी मदद की है और मुझे तुरंत ठीक किया है।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

3 में 1 दिव्य स्वरूप (शिवजी-गुरुजी-गुरु नानक देवजी)

यह मेरे सबसे प्यारे और पसंदीदा सत्संगों में से एक है। 2018 में, जब मैं गुरुजी से नई नई जुड़ी थी, मैंने गुरुजी के प्रति अपने प्रेम को और उनके प्रति मेरे विश्वास को दिन-प्रतिदिन बढ़ते पाया। उनकी शरण में आने के बाद, मैंने और मेरे परिवार ने मुझमें सकारात्मक बदलाव महसूस किए हैं। मैं अब संयमहीन (तेजमिजाज) नहीं हूं, सकारात्मक सोच वाली, शांत और विनम्र बन गई हूं। मैंने पूरी तरह से पिता रूपी गुरुजी के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है। वह सब कुछ देखने के लिए हैं और वह हमारी रक्षा कर रहे हैं। न कोई चिंता, न कोई पीड़ा। इस संतोष के साथ खुद को धन्य महसूस करते हुए, मैंने और लोगों को गुरुजी से जोड़ने के बारे में सोचा।

मैंने दुबई में अपनी एक अच्छी दोस्त के बारे में सोचा। उसके पति को कुछ साल पहले ब्रेन स्ट्रोक हुआ था और तब से वह पीड़ित है। उसे अकेले ही अपने परिवार, काम और अपने पति के स्वास्थ्य की देखभाल करते देख मुझे उस पर बहुत दया आती थी । मैं वास्तव में उसके लिए महसूस करती थी और हमेशा उसके लिए प्रार्थना करती थी। तीन बार, मैंने उसे गुरुजी का परिचय देने की सोची, लेकिन यह सोचकर कि वह बहुत ही तर्कसंगत दिमाग वाली एक शिक्षित महिला है और मुझ पर हंस सकती है, मुझे हतोत्साहित कर दिया था। एक बार, मैंने फेसबुक मैसेंजर पर उसे संदेश देने के लिए, एक परिचय के रूप में, गुरुजी के बारे में कुछ पंक्तियाँ भी लिखीं, लेकिन अंत में उसे नही भेजी। तथ्य यह है कि उसके लिए सही समय नहीं था। गुरुजी समय तय करते हैं, किसे, कब बुलाना है और वह ज़रिया भी खुदी तय करते हैं।

एक शनिवार, उसने मेरे साथ बातचीत की और मैं अचानक से गुरुजी के बारे में बात करने लगी। उसने रुचि दिखाई जो अप्रत्याशित थी। उसने मुझसे कहा कि मुझे उससे पहले गुरुजी के बारे में बात करने मे कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसे पहले ही गुरुजी के बारे में बताना चाहिये था क्योंकि वह जीवन में कुछ भी करने के लिए खुली थी, जो उसके जीवन में खुशियां ला सके। मैंने उसके साथ दुबई में साप्ताहिक सत्संग का विवरण साझा किया और उसे जाने के लिए कहा।

मुझे विश्वास नहीं हो रहा था जब उसने मुझे बताया था कि वह सत्संग में गई थी, उसकी आँखों में आँसू थे और उसे गुलाब की तेज खुशबू महसूस हुई। तब तक, उसे गुलाब की खुशबू या तितली या मोर के माध्यम से उपस्थिति दिखाने के गुरुजी के तरीके के बारे में पता नहीं था। मैंने उसे बताया कि वह कितनी धन्य थी कि गुरुजी ने उसे गुलाब की खुशबू महसूस कराकर इतना बड़ा आशीर्वाद दिया है।

जल्द ही, वह सत्संग में जाने लगी और मेरे साथ अपने अनुभव साझा करती थी। एक बार उसने मुझे बताया कि गुरुवार को, ऑफिस के लिए निकलते समय, उसे अपनी पसंदीदा सफेद कलाई घड़ी को उतारना पड़ा क्योंकि उसका पट्टा पुराना और गंदा हो गया था। शुक्रवार को, जब वह सत्संग में गईं, तो उन्हें एक वैसी ही सफेद गुरुजी की घड़ी मिली। मेरे साथ यह साझा करते समय वह खुश थी।

इसी तरह, एक अन्य सत्संग मे उसे 3 इन1 (शिवजी-गुरुजी-गुरु नानक देवजी) स्वरूप मिला था । उसने मुझे जब बताया मुझे 3 इन1 स्वरूप बहुत पसंद आया और पाने की चाहत जाग उठी।

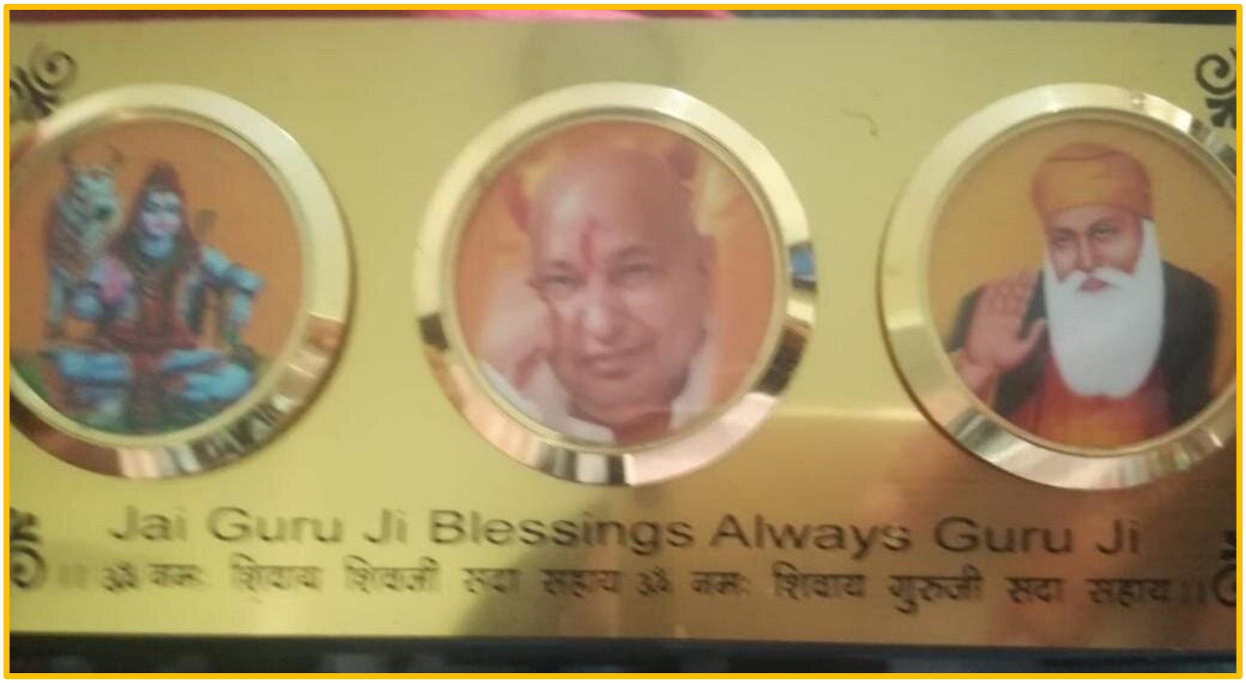
Jai Guru Ji Blessings Always Guru Ji
॥ ॐ नमः शिवाय शिवजी सदा सहाय ॐ नमः शिवाय गुरुजी सदा सहाय ॥

ऊपर ३-इन -१ स्वरूप है जो उसे दुबई सत्संग से मिला था।

अगली बार जब मेरे पति भारत के लिए रवाना हो रहे थे, तो मैंने उनसे कहा कि मेरे लिए बडे मंदिर प्रवीण अंकल सेवादार से ऐसा 3 इन 1 स्वरूप प्राप्त करें। लेकिन प्रवीण अंकल ने बताया कि उनके पास वैसा स्वरूप नहीं है। मैं बहुत निराश थी। 3-4 दिनों के बाद, उनकी बहन (मेरी ननद पूनम आंटी) ने मेरे पति को वही 3 इन 1 स्वरूप एक उपहार बॉक्स मे दिया, जो कि उन्हे उनकी सहेली रेणू आँटी ने दिया था । यह ध्यान देने की बात है कि न तो पूनम आंटी और न ही रेनू आंटी को उस स्वरूप को पाने की मेरी इच्छा के बारे में पता था। उस फ़िफ्ट बॉक्स पर लिखा था "मेरी सहेली रेणु ने गुरुजी की तरफ से आपके लिए (मधु के लिए) इसे भेजा है"। मुझे ख़ुशी महसूस हुई कि कैसे हमारे गुरुजी एक पिता की तरह हमारी ऐसी छोटी इच्छाओं को भी पूरा करते हैं।

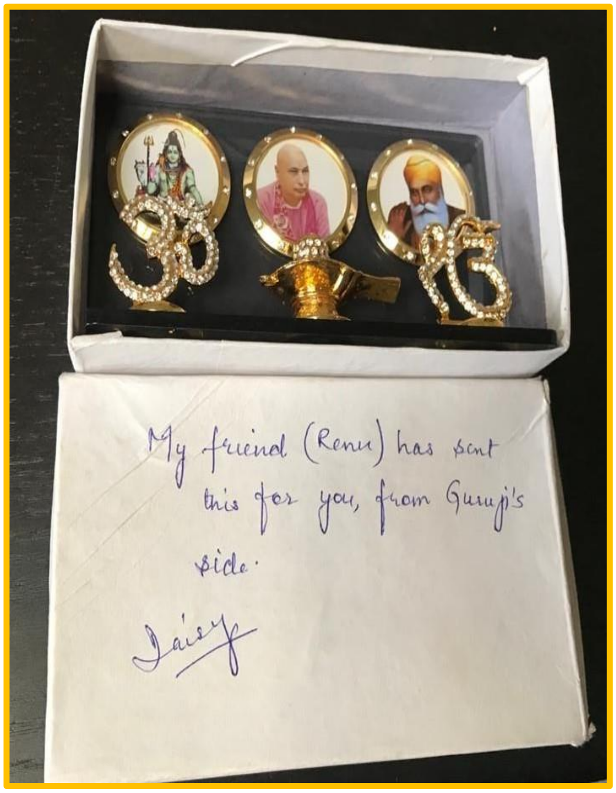

My friend (Renu) has sent
this for you, from Guruji's
side.
Daisy

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

गुरुजी की दिव्य ज्योत

मैं एक सत्संग साझा कर रही हूं जो फिर से साबित करता है कि गुरुजी हमारी छोटी से छोटी समस्याओं या भावनाओं की देखभाल कैसे करते हैं।

जब मैं अपने घर पर गुरुजी के आगे ज्योत जलाती थी , तो मेरे पति पवन अंकल मुझे ज्योत उपयोग ना करने की सलाह देंते थे या आग जोखिम से बचने के लिए पूजा कक्ष से निकलने से पहले ज्योत को तुरंत बुझाने की सलाह देते थे । मैं ज्योत को बुझाने से हिचकिचाती थी ओर मैंने ज्योत रोजाना जारी रखी, क्योंकि गुरुजी रोज ज्योत जलाने की सलाह देते हैं। हम दोनों मे इस बातपर काफी तर्क होने लगा क्योंकि मुझे लगा गुरुजी के होते हुए उनकी संगत को कुछ नहीं हो सकता ।

लेकिन उनका विचार था कि गुरुजी आपको लापरवाह रहने की भी तो नहीं कहते ।यहां ब्रिटेन के घरों में हीटरों से गर्मी बरकरार रखने के लिए घर चारों ओर से बन्द।लगभग सील रहते हैं, इसलिए वह चिंता करते थे कि ज्योत फायर अलार्म को ट्रिगर कर सकती है । मैंने गुरुजी से कहा कि मुझे मार्गदर्शन दो । जब मेरे पति टूर पर थे, तो वे चिंतित रहते थे और वे जब भी फोन करते थे केवल ज्योत के बारे में पूछते रहते थे। ऑफिस के लिए घर से निकलने से पहले मैं दुविधा में रहती थी कि इसे बुझाऊं या नहीं। मैं गुरजी को हर चीज की देखरेख करने के लिए कहती थी।

एक रविवार को, मैंने ज्योत जलाई और मेरे पति पूजा के कमरे में बैठे थे (वो कमरा उनका वर्क रूम भी है), अचानक जोर से आवाज हुई .... यह आग अलार्म की थी। मेरे पति चिल्लाए कि उनका डर सच हो गया हैं। हम डर गए थे कि अन्य घरों के निवासियों को घबराहट हो सकती है। हमने जल्दी से ज्योत को भुजा दिया, सभी खिड़कियां खोल दीं, जिससे अलार्म शांत हो गया। मैं अपने मन में कह रही थी "ठीक है गुरूजी, आपका जवाब मिल गया, मुझे लापरवाह नहीं होना चाहिए"। मैंने अपने पति को बताया कि मैं अब ज्योत नहीं जलाऊंगी और उसकी जगह अगरबत्ती का इस्तेमाल करूंगी। गुरुजी ने मुझे यह घटना के तौर पर समझाया हैं और फिर मैंने ज्योत जलाना बंद कर दिया, ओर अगरबत्ती को जलाना शुरू कर दिया।

अगले महीने विधु ऑंटी को सपना आया और उन्होंने सपने मे देखा कि मैं गुरुजी की ज्योत के लिए बहुत ज्यादा घी डाल रही हूं। वह (सपने में) सोच रही थी कि मैं ज्योत मे क्यों इतना घी दाल रही हूं । हम उस ड्रीम मे के अर्थ या संदेश को नहीं समझ पाए क्योंकि मैंने ज्योत जलाना छोड़ दिया था ।

हमने सपने का यह निष्कर्ष निकाला कि गुरुजी ने मुझे फिर से ज्योत प्रज्वलित करने के लिए प्रेरित किया लेकिन कम घी के साथ ताकि ज्योत कुछ मिनटों के बाद अपने आप बुझ जाए। उन दिनों पवन (मेरे पति) टूर पर थे । उनकी अनुपस्थिति में मैंने फिर से थोडे घी के साथ ज्योत जलाना शुरू किया।

कुछ दिनों बाद, हमें अमृतवेला सत्संग के लिए विधु आंटी के घर ही जाना था, इसलिए हम सुबह २ बजे उठे और मैंने ज्योत जलाई और जब हम घर से निकल रहे थे, पवन ने उसे भुजाने की कोशिश की, हालांकि मैंने उन्हे रोका लेकिन उन्होंने उसे भुजा दिया। मुझे ज्योत भुजा देने का दुख था। हम सत्संग के लिए निकल पड़े। संगतजी: क्या आप विश्वास करेंगे? विधु आंटी ज्योत जला रही थी और अचानक उन्होंने मेरी ओर देखा ओर मुझे ज्योत जलाने के लिए

आमंत्रित किया। गुरुजी के प्यार और दया को देखकर मैं दंग रह गई। मैं यह सोचकर धन्य महसूस कर रही थी कि गुरुजी ने अपनी संगतों की भावनाओं का किस तरीके से ध्यान रखते हैं ।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

गुरुजी की दिव्य सुगंध-अनोखा संरक्षण

दिसंबर 2018 में, मेरी बेटी अपने स्कूल के दोस्तों से मिलने के लिए मेरे पति के साथ दुबई जाना चाहती थी और वहां क्रिसमस की छुट्टी बिताना चाहती थी। हालाँकि उसने मुझे उनके साथ शामिल होने का अनुरोध किया था लेकिन जैसा कि मैंने अपने कार्यालय से पूर्व छुट्टी के लिए आवेदन नहीं किया था इसलिए मैं नहीं जा सकती थी।

मैंने उससे अनुरोध किया कि वह इस विचार को छोड़ दे क्योंकि वो अगर दोनो जाते तो; मैं ब्रिटेन में अकेली रहूंगी (जहां हम अपेक्षाकृत नए थे) लेकिन वह इसके लिए अड़ी थी। एक माँ के रूप में मुझे उसकी बात माननी पड़ी।

मैं गुरुजी के स्वरूप के सामने बैठ गयी, कहने लगी, "गुरुजी आप देख रहे हैं कि वह जाने की इच्छुक है और मैं उसे रोकने के लिए स्वार्थी नहीं हो सकती ओर मैं यहां अकेली रहूंगी तो आप कृपया मेरे साथ रहें और उनकी अनुपस्थिति में मेरी रक्षा करें "। मैंने, फिर उसकी टिकट बुक की। उस दिन के बाद से मैंने अरदास करना शुरू कर दिया कि गुरुजी मुझे साहस दो और उनकी अनुपस्थिति में मुझे सुरक्षित रखो ।वह दिन आया जब वो चले गए। मैंने गुरुजी से अनुरोध किया कि मुझे यह सुनिश्चित करो कि मैं अकेली महसूस नहीं करूँ।

गुरुजी, इतने दयालु और प्यारे हैं, उनकी अनुपस्थिति के हर एक दिन मेरे साथ रहे। उनकी अनुपस्थिति के पहले दिन की शाम, जब मैं घर लौटी और अपने ड्राइंग रूम में प्रवेश किया (जहाँ पर गुरुजी का स्वरूप है, यह वह कमरा है जहाँ मैं अपना 90% समय व्यतीत करती हूँ जब मैं घर पर होती हूँ), मै विभिन्न प्रकार के अर्थात चन्दन, चमेली, ऊद इत्यादि की सुगंधों से मंत्रमुग्ध हो गयी थी। मैंने वह पहले कभी अनुभव नहीं किया था। यह गुलाब की खुशबू नहीं थी (आमतौर पर जो गुरुजी से जुड़ी होती है), तो मुझे लगा कि खुशबू कहीं ओर से हो सकती है। मैंने इसे हल्के में लिया, हालांकि मै गुरुजी के बारे मे सोचना बंद नही कर पा रही थी (कि यह गुरुजी हो सकते हैं)। ऐसा लगा जैसे मुझे कुछ सकारात्मक ऊर्जा दे रहा था ओर मुझे बिल्कुल भी अकेलापन महसूस नहीं हो रहा था। गुरुजी ने मुझे कई सत्संग पढ़ने में व्यस्त किया।

दिन २: मैंने कमरे में प्रवेश किया, उसी बहुत अच्छी सुगंध को सूंघा (मैं उसके आनन्द मे जैसे डूब गई थी, सुगंध इतनी मीठी और दिव्य) । मैं मूर्ख की तरह पूछती रही, "गुरूजी, आप ही हो ना"? मैं सोचती रही सुगंध कहाँ से आ रही थी।

तीसरे दिन भी वही हुआ और जारी रहा। शुरू में मैंने सोचा कि क्या यह हर शाम ड्राइंग रूम में ही होता है, यह हीटर के कारण हो सकता है जो चार्ज और स्टोर करते हैं। लेकिन जब मैंने सप्ताहांत पर भी वही खुशबू महसूस की, तो हैरान थी।

दिव्य सुगंध उन सभी १२ दिनों तक चली, जब मेरा परिवार दूर था। जिस दिन वे लौटे, उस दिन सुगंध नही थी। तब जब मुझे १००% यकीन हो गया कि यह कोई और नहीं बल्कि हमारे गुरुजी थे जो मुझे कंपनी दे रहे थे, मुझे सकारात्मक रूप से चार्ज और आध्यात्मिक रूप से सक्रिय रखते थे।

मुझे आज भी उस खुशबू का अनुभव याद है क्योंकि यह वास्तव में जादुई और स्वर्गीय था। यह शब्दों मे व्यक्त नहीं कर सकती कि दिव्य सुगंध कितनी सुंदर थी।

सद्गुरु प्यारा मेरे नाल है

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

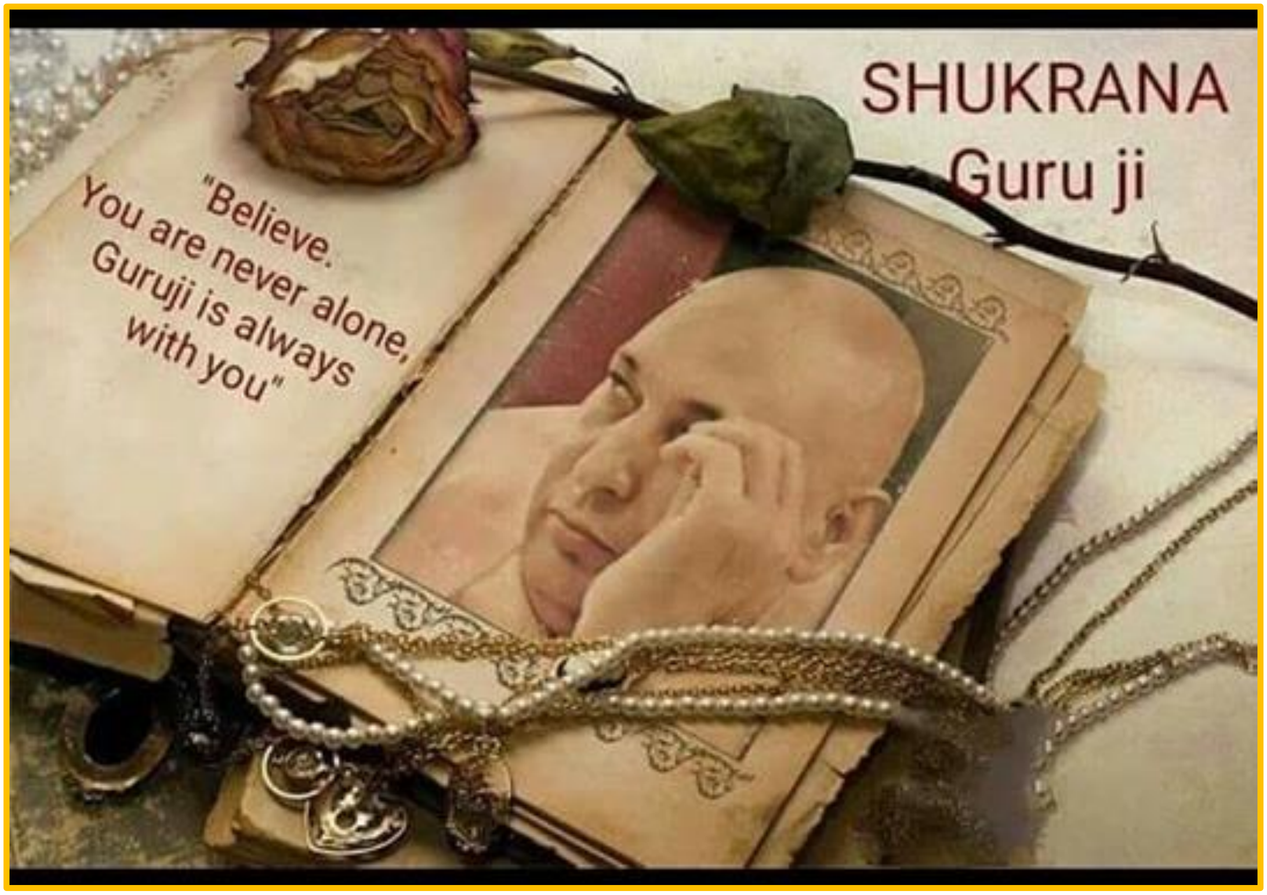
SHUKRANA
Guru ji
"Believe.
You are never alone,
Guruji is always
with you"

गुरुजी के आशीर्वाद से जन्मदिन बना सबसे मनोहर और यादगार

जब पिछले साल की शुरुआत हुई, तो मैंने ३१ अक्टूबर को आने वाले दिन को जानने के लिए कैलेंडर देखा। यह मेरा जन्मदिन था और मैं सत्संग करके गुरुजी के साथ इसे मनाना चाहती थी। मुझे यह जानकर निराशा हुई कि मेरा जन्मदिन कार्य दिवस होगा। कई बार मैंने चाहा और गुरुजी से अरदास की कि मैं अपना जन्मदिन गुरुजी के साथ मना सकूँ।

एक सप्ताह पहले मैंने फिर से गुरुजी से अनुरोध किया कि वे मुझे अपना जन्मदिन उनके साथ मनाने दें। संगत को मेरे जन्मदिन के बारे में पता नहीं था, इसलिए मुझे कोई उम्मीद नहीं थी कि मैं उस दिन कोइ सत्संग होगा। लेकिन गुरुजी दयालु और बहुत प्यारे हैं।

मेरे जन्मदिन से दो दिन पहले, मोहित अंकल (वॉल्वरहैम्प्टन के एक भक्त) ने ३१ अक्टूबर को एक सत्संग के लिए सत्संग निमंत्रण कार्ड पोस्ट किया ।

मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था और मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। मोहित अंकल हर महीने एक सत्संग की मेजबानी करते हैं, और उस महीने किसी न किसी कारणवश, वह महीने के अंतिम दिन तक सत्संग नही कर सके। हम कुछ भी कहें लेकिन यह सब गुरुजी की योजना थी ।

जन्मदिन पर सोशल मीडिया से संगत को पता चला कि वह मेरा जन्मदिन था। दिनभर गुरु परिवार से प्यार और आशीर्वाद भरी कामनाएं बरसती रहीं और शाम को मुझे गुरुजी के साथ उनके सत्संग में केक काटने का सौभाग्य मिला। मुझे लगा कि वो मेरे जीवन का सबसे अच्छा जन्मदिन था।

एक बार फिर गुरूजी ने मेरा दिल छू लिया।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

मेरी चाहत - मेरे गुरुपा, मेरे गुरुजी

चाहत नहीं ज़माने मे, बनूँ किसी की खास
इच्छा यही बस, रहूं हर वक़्त तेरे पास

निकलता रहै 'जय गुरूजी' आती जाती हर सांस
चाहत नहीं ज़माने मे, बनूँ किसी की खास

सेवा, सिमरन, शुकराना, सत्संग हो मेरी जिंदगी का सार
चाहत नहीं ज़माने मे, बनूँ किसी की खास

तेरा स्वरूप देख के उठूँ, तेरा स्वरूप ही देखके सोऊँ यही मेरी आस
चाहत नहीं ज़माने मे, बनूँ किसी की खास

आई तो नहीं तेरा नाम लेके, पर जाऊँ ज़रुर तेरे नाम से, इक यही अरदास
चाहत नहीं ज़माने मे, बनूँ किसी की खास

रचयिता: गुरूजी की सेवादार मधु मदान
(मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा)

गुरूजी के संरक्षण में (कैसे गुरूजी ने मुझे बचाया)

अक्टूबर २०१९ की बात है: भारत मे छुट्टी बिताकर, लौटने के बाद कार्यालय में यह मेरा पहला कार्य दिवस था। शाम को, जब मैं ओफ़िस से निकली तो भारी बारिश हो रही थी, और मेरे पास अपनी टोपी नहीं थी। सोचा , कि काश मेरे पास मेरी टोपी होती, तो मेरे बाल गीले न होंते, हालांकि मेरे पास मेरी सामान्य जैकेट थी जो न केवल मुझे ठंड से बचाती है, बल्कि एक बारिश कोट की तरह काम करती है।

अगले दिन जब मैं घर से निकली, तो मुझे अपनी टोपी लेना याद था, कि अगर बारिश होगी तो काम आएगी। दिन के अंत में जब मैं ओफ़िस से निकली, तो मैंने खिड़की से झाँका और पाया कि बारिश नहीं है इसलिए तय किया कि टोपी ना पहनूँ। लेकिन कार्यालय से बाहर आने के बाद, हालांकि ना तो बारिश हो रही थी और न ही ठंड, लेकिन ऐसा लगा जैसे कि गुरुजी मुझे टोपी पहनने के लिए प्रेरित कर रहे थे और इतना ही नहीं, मैंने हुडी भी डाली हुई थी। टोपी और हुडी से मेरा सिर ढका हुआ था । मैं सोचती रही कि मैंने दो दो चीज़ों से सिर को क्यों ढक रखा है जबकि न तो ठंड है और न ही बारिश हो रही है। लेकिन यह गुरुजी की योजना थी।

मैं आगे चलती गई और ऊंचे पेड़ों के नीचे घने रास्ते से गुजर रही थी, अचानक मेरे सिर पर एक बहुत भारी और सख्त चीज गिरी । मैं बहुत ज़ोर से चिल्लाई । मुझे इतनी तेज़ लगी थी कि जैसे किसी ने मेरे सिर पर गोली मार दी हो। मैं 2-3 मिनट के लिए दर्द मे थी । फिर मैंने पता लगाने के लिए आसपास देखा लेकिन कोई नही था और सड़क पर ध्यान से देखने पर, मुझे एहसास हुआ कि यह एक कठोर-शेल वाला फल था जो एक ऊंचे पेड़ से गिरा था। मेरी तत्काल प्रतिक्रिया यह थी कि "गुरुजी, क्यूं मारवाया"? (गुरुजी का) उत्तर मिला "मारवाया नहीं, बचाया है"। तब मुझे एहसास हुआ कि यह गुरुजी ही थे जिन्होंने मुझे दोहरी सुरक्षा के साथ अपने सिर को ढँकने को प्रेरित किया था क्योंकि वह जानते थे कि यह होने वाला है। अगर मै डबल टोपी ना पहननती तो, मैं बुरी तरह से घायल हो गयी होती। शुकराना गुरुजी कि आपने तलवार को सुई की तरह से बडा कष्ट टाला।

गुरूजी हर पल हमें देख रहे हैं और हर पल हमें गुरूजी का संरक्षण और मार्ग दर्शन उपलब्ध है। वह बिना कुछ कहे हमारे आने वाले कष्ट दूर कर देते हैं।

हम सब कितने भाग्यवान हैं! इस कलयुग में हम स्वयं भगवान शिव के दिव्य संरक्षण में हैं।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

गुरुजी से अमृतवेला में संदेश

सबसे पहले, अमृतवेला के लिए हर दिन मुझे जगाने के लिए गुरुजी को बहुत शुक्राना। उनकी कृपा और आशीर्वाद के बिना, यह संभव नहीं है कि मैं अमृतवेला करने के लिए सुबह ३ बजे उठ सकूं।

अमृतवेला में रोज लगभग 5 मिनट, मै गुरुजी से बातचीत करती हूँ ओर मेरी जो भी समस्या होती है उन्हे बताती हूँ, उनकी सलाह वगैरह पूछती हूँ। कई बार, मैंने महसूस किया है कि गुरुजी अमृतवेला के दौरान मुझसे बातचीत करते है। निम्नलिखित दो अवसरों से स्पष्ट है जब उन्होंने मुझे अमृतवेला के दौरान मजबूत संदेश दिए, जो सच निकले।

दिसंबर २०१९ की बात है: मेरे पति जो एक कंपनी में बोर्ड डायरेक्टर थे, उन्होंने फैसला किया था २० दिसंबर को शाम की क्रिसमस पार्टी के लिए जाएंगें। उन्होंने मुझे एक सप्ताह पहले बताया था ताकि मै उस दिन उनके लिए रात का खानद ना बनाऊँ।

इसलिए मैंने सोचा कि दफ्तर जाने तक वो उठ जाएँगे तो जाने से पहले मै उन्हे देर शाम पार्टी में न जाने की सलाह दूंगी। यदि नहीं कह पाई, तो मैं उन्हे फोन पर मैसेज़ भेज दूंगी, लेकिन मैं अमृतवेला के बाद पूरी तरह से इसके बारे में भूल गयी और उन्हे बिना कोई संकेत दिए घर से चली गई। दिन के दौरान मैं काम में व्यस्त हो गयी और उन्हे इस संबंध में कोई संदेश भी नहीं भेज सकी।

शाम, जब मैं घर पहुंची और दरवाजा खोलने की कोशिश की, तो जब दरवाजा मुझसे नही खुला तो हैरान थी क्योंकि यह अंदर से बंद था । मुझे आश्चर्य हुआ जैसे ही उन्होने दरवाजा खोला क्योंकि मैं उन्हे घर पर देखने की उम्मीद नहीं कर रही थी क्योंकि उन्हें तो पार्टी के लिए जरूर जाना था।

जब मैंने उनसे पूछा कि वह पार्टी के लिए क्यों नहीं गए, तो मैं उनकी बात व शब्दों को सुनकर अवाक रह गयी।

उन्होने कहा, "(मधु, मैंने सोचा कि क्या फ़ायदा जाने का क्योंकि हर कोई वहां शराब पीता होगा)। अमृतवेला के दौरान गुरुजी के द्वारा कहे गये ये सटीक शब्द थे, मुझे यकीन है कि गुरुजी ने उन्हे कुछ परेशानी से बचाया था। गुरुजी ने मुझे संदेश देने की कोशिश की और जब मैंने उन्हे नही बताया तो, गुरूजी ने खुद ही उनका मन बदल दिया।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

गुरूजी से जन्मदिवस का उपहार

अगस्त 2018 की बात है (मेरे जन्मदिन से 2 महीने पहले): मैंने अपने जन्मदिन पर एक विशेष उपहार के लिए गुरुजी से कहना शुरू किया था। एक बार तो ऐसा लगा कि जैसे गुरुजी मुझसे पूछ रहे हों "तैनु की चाहिदा है?" और मैंने जवाब दिया "गुरुजी, आपके आशीर्वाद के साथ कोई भी चीज जिसमें आपकी तस्वीर (स्वरूप) हो और जो मैं पहन सकूँ। "

जब मेरे पति पवन अंकल दुबई की अपनी सामान्य व्यापार यात्रा के लिए जा रहे थे, तो मैंने उन्हें दुबई के समाना होटल में गुरुजी के सत्संग में भाग लेने के लिए कहा और सोनिया विज आंटी से मेरे लिए आशीर्वाद के रूप में कुछ लाने को कहा। वह दुबई गए और वहां सत्संग में भाग लिया। मैंने गुरुजी को जन्मदिन का उपहार (आशीर्वाद रूपी) भेजने के लिए अरदास की।

वह सोनिया आंटी से मिले और उन्हें बताया कि मेरी पत्नी गुरुजी की भक्त है। उन्होनें पवन अंकल को गुरुजी कंगन (गुरुजी के स्वरूप वाला कंगन) दिया। वह अपनी आगे की व्यापारिक यात्रा के लिए भारत गए। जब उन्होंने मुझे फोन पर बताया, तो मैं काफी खुश थी, लेकिन मैं भूल गई थी कि मैं अपने जन्मदिन के उपहार के बारे में गुरुजी से पूछ रही थी।

3-4 सप्ताह के बाद पवन अंकल ब्रिटेन लौट आए। तब तक, मेरा जन्मदिन बीत चुका था, और मैं जन्मदिन के विशेष उपहार के लिए गुरुजी से की अपनी अरदास के बारे में पूरी तरह से भूल गई थी। उन्होनें अपना सामान खोला और मुझे गुरुजी का कंगन दिया, जो मेरे लिए दुबई के सत्संग से मिला था। मैंने उसे खुशी से लिया और कोने के स्टूल पर रखा जिसपर मैं गुरुजी (उनके स्वरूप) रखती हूँ, हमारे ड्राइंग रूम में।

2 दिनों के बाद जब मैं स्वरूप के सामने ड्राइंग रूम में अमृतवेला पाठ कर रही थी (कोने के स्टूल पर, जहाँ वह कंगन पड़ा हुआ था), एक बहुत ही मजबूत पंजाबी आवाज़ ने मुझसे पूछा, "फ़िर, पसंद आया उपहार? जन्मदिन दा उपहार जो मंगदी पई सी "। प्रतीत हुआ मैं कितनी धन्य हूं कि प्यारे गुरुजी ने न केवल मेरी प्रार्थना सुनी व मुझे जन्मदिन का उपहार भेजा, बल्कि मुझे याद भी दिलाया और मुझे आशीर्वाद दिया"। उस भावना को शब्दों में नहीं रखा जा सकता है।

गुरुजी के साथ मेरी यात्रा का यह सबसे मधुर क्षण था।

🙏🕉️ शुक्राना गुरूजी 🕉️🙏🏼

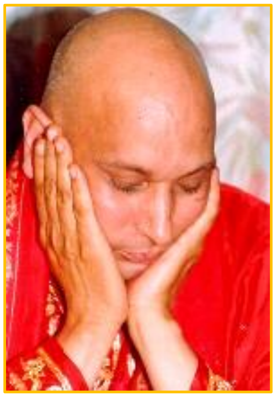

तू मेरा रब, तू मेरा साईं

तू मेरा रब, तू मेरा साई, तेरा स्वरूप बड़ा प्यारा
अब इन निगाहों को, कोइ और नहीं है गवारा

होके हताश, दुखी, बाकी सब जग से मै हारा
देके सुकून, शांति, तेरे दर नें ही निहारा
तू मेरा रब, तू मेरा साई, तेरा स्वरूप बड़ा प्यारा

है दुनिया दिखावट, रिश्ते नकली, बस तेरा ही सहारा
मिली सबसे मायूसी, बस तूनें ही सवारा
तू मेरा रब, तू मेरा साई, तेरा स्वरूप बड़ा प्यारा

तेरा अमृत लागे मीठा, बाकि सब है खारा
खाके तेरा प्रसाद, हो गया मै वारा
तू मेरा रब, तू मेरा साई, तेरा स्वरूप बड़ा प्यारा

सबका रचयिता तू ही, धरती, सूरज हो या तारा
अब पूजा, सिमरन, इबादत तेरी, सजदा भी तुम्हारा
तू मेरा रब, तू मेरा साई, तेरा स्वरूप बड़ा प्यारा

रचयिता: गुरूजी की सेवादार मधु मदान
(मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा)

गुरूजी और उनकी अद्भुत योजनाएँ

यह सत्संग इस बारे में है कि कैसे गुरुजी ने हमारे घर पर 7 सितंबर 2019 को सत्संग की योजना बनाई।

यह अप्रैल-मई 2019 की बात हे।: लगभग 4 महीने पहले (हर साल की तरह), मैं परिवार की वार्षिक छुट्टी की योजना बना रही थी। मेरी बेटी की इंटर्नशिप सितंबर के पहले सप्ताह में समाप्त होनी थी और कार्यवश , मैं किसी भी महीने के पहले और अंतिम सप्ताह में छुट्टी पर नहीं जा सकती । इसलिए, हमने सितंबर के पहले सप्ताहांत में छुट्टी पर दुबई और भारत जाने के लिए हमारे उड़ान टिकट बुक करने का फैसला किया। मुझे पता था कि छुट्टी पर जाने से पहले, 6 सितंबर (शुक्रवार) को अंतिम कार्य दिवस होगा। इसलिए, मैंने फ्लाइट्स की तलाश शुरू कर दी। अपने सप्ताहांत का उपयोग करने के लिए मैने 6 सितंबर शाम या 7 सितंबर सुबह या दिन में प्रस्थान करने वाली फ्लाइट्स की तलाश शुरू कर दी। । मैंने शुक्रवार शाम या शनिवार को उड़ान भरने के लिए विभिन्न विकल्पों की कोशिश की लेकिन सभी व्यर्थ। गुरुजी ने मुझे उस सप्ताहांत (6-8 सितमबर) के लिए फ्लाइट बुक करने ही नहीं दी । यह गुरुजी ही थे जो नहीं चाहते थे कि हम 7 सितंबर (शनिवार) को जाएं ।

2-3 दिनों के बाद मैंने अपनी फ्लाइट्स को यह सोच कर बुक करने की ठानी क्योंकि और देरी की तो फ्लाइट महंगी पढ़ जाएगी । गुरुजी ने सोमवार (9 सितंबर) की उड़ान पर विचार करने के लिए मेरा मन टाल दिया। आखिरकार, मैंने सोमवार (9 सितंबर) की फ्लाईट बुक कर दी । यह सब गुरुजी की योजना थी। जब मैंने अपनी बेटी आरुषि को सोमवार की फ्लाईट के बारे में बताया , वह इस बारे में खुश नहीं थी क्योंकि उसने भी यही सोचा कि हमें छुट्टी के लिए अपने सप्ताहांत का उपयोग करना चाहिए था। उसी दौरान, अचानक एक विचार मन में आया कि हो सकता है कि उस सप्ताहांत (6-7 सितंबर) में कोइ सत्संग होगा जिसमें गुरुजी हमें आशीर्वाद देने वाले होंगें और जिसके कारण गुरुजी ने हमारी सप्ताहांत (शनिवार/ रविवार) की टिकट बुक नहीं कराई ।

मैंने उसके साथ भी यह विचार साझा किया कि सत्संग हो सकता है शनिवार (7 सितंबर) को किसी के घर पर जिसमे गुरुजी हमें बुलाकर ब्लैस करना चाहते होंगे और छुट्टी पर जाने से पहले उनका आशीर्वाद लेले । मेरी आंतरिक आत्मा इस ओर दृढ़ता से इशारा कर रही थी। तब से, हम यह जानने के लिए उत्सुक थे कि किसके यहाँ सत्संग में हम 7 या 8 सितंबर को भाग लेंगे।

जून के आस-पास मुझे गुरुजी के सत्संग की मेजबानी के विचार आने लगे। मेरा शुकराना सत्संग (आरुषि के शानदार औद्योगिक वर्ष के लिए और मेरी नई भूमिका में मेरी सफलता के लिए गुरुजी को शुकराना) लंबित था।

मैंने सत्संग की मेजबानी के लिए अपने पति से सलाह की । मैंने प्रस्ताव दिया और वह 16 जून (फादर्स डे) के लिए सहमत हो गए क्योंकि गुरुजी हमारे पिता हैं। बाद में, सुनंदन अंकल ने उस दिन सत्संग मेजबानी करने का अनुरोध किया तो 16 जून तिथि को हम सत्संग नहीं रख पाए । उसके बाद मेरे पति आधिकारिक दौरे पर चले गए।

करते करते 2 अगस्त आ गया जब वो ब्रिटेन वापस आए पर तब तक, अगस्त के सभी सप्ताहांत बुक हो गए थे किसी न किसी के घर सत्संग के लिए। मैं बहुत स्पष्ट थी कि मुझे छुट्टी पर जाने से पहले सत्संग मेजबानी करनी थी । छुट्टी से पहले (यानी 9 सितंबर से पहले) सत्संग करने से हम गुरुजी का आशीर्वाद ले पाएंगे छुट्टी पर जाने से पहले । मैंने गुरुजी को पहले ही बता दिया था कि मेरी छुट्टी आपके लिए समर्पित होगी, इसलिए छुट्टी पर जाने से पहले मेरे लिए सत्संग रखना और उनका आशीर्वाद लेना महत्वपूर्ण था। इस प्रकार, अगर मुझे ९ तारीख को निकलने से पहले

मेजबानी करनी थी, तो मेरे पास शनिवार ७ सितंबर के अलावा कोई तारीख थी ही नहीं । तिथि में 7 नंबर होना ही एक अतिरिक्त खुशी थी । मैंने 7 सितंबर सत्संग के लिए आमंत्रण पोस्ट किया।

यह महसूस करने में हमें देर नहीं लगी कि यह गुरुजी की अद्‌भुत योजना थी, जिसकी वजह से उन्होंने सप्ताहांत की फ्लाईट (७-८ सितंबर) बुक नहीं होने दी क्योंकि गुरुजी सर्वज्ञाता हैं । वास्तव में गुरुजी जानते थे कि ७ सितंबर को हमारे अपने घर पर ही सत्संग करवाकर वो हमे ब्लैस करके छुट्टी के लिए भेजेगे।

निश्चित रूप से, 7 सितंबर को सत्संग हुआ और किसी और के नहीं बल्कि हमारे अपने घर मे। गुरुजी की योजना अद्‌भुत थी। बाद में मुझे महसूस हुआ कि आरुषि का औद्योगिक वर्ष 6 सितंबर को आधिकारिक तौर पर समाप्त हुआ था यानि गुरुजी ने उसके औद्योगिक वर्ष के लिए माना गया शुकराना सत्संग, उसके औद्योगिक वर्ष की समाप्ति के अगले दिन करवाया ।

साथ ही, मैंने गुरुजी से मेरी छुट्टी के हर दिन (यदि संभव हो तो नहीं तो जिस जिस शहर मे जाऊँ) उनके सत्संग के साथ मुझे आशीर्वाद देने का आग्रह किया था । गुरुजी ने हमारी छुट्टी की शुरुआत ही सत्संग से करा दी। एक छुट्टी शुरू करने का इससे बेहतर तरीका क्या हो सकता है?

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

Bin Bhaga
Satsang
Na Labhe
guru ji

गुरुजी के आशीर्वाद से यात्रा बनी तीर्थ यात्रा (सबसे यादगार)

मेरी 2019 की वार्षिक छुट्टी की योजना बनाते समय, मैं बहुत स्पष्ट थी कि मेरी छुट्टी गुरुजी को समर्पित थी और मैं अपने आध्यात्मिक स्तर को ऊपर उठाना चाहती थी।

छुट्टी के लिए मेरी "टू-डू" सूची गुरुजी के चारों ओर थी। मैं बड़े मंदिर, दुगरी और छोटे मंदिर (एम्पायर एस्टेट) जाना चाहती थी। मैं हर उस शहर में सत्संग में जाना चाहती थी जिसमे मैं गयी थी। मुझे दुबई, दिल्ली, गुड़गांव, चंडीगढ़, फरीदाबाद और नोएडा जाना था। मैं पुरानी संगत को सुनने और मिलने से गुरुजी के बारे में और जानना चाहती थी। यह मेरी इच्छा थी कि मेरी छुट्टी के हर दिन मेरे साथ गुरुजी हों और मैं अपनी छुट्टी के दौरान उन्हें हर पल महसूस करना चाहती थी।

मैं आपके साथ साझा करती हूँ कि कैसे गुरुजी ने इसे मेरी ड्रीम वेकेशन या 'तीरथ यात्रा 'में बदल दिया।

गुरुजी की कृपा से, मैं दुबई में 4 दिनों के प्रवास में न केवल सत्संग में शामिल हो पाई, बल्कि उनके अद्भुत दुबई संगत से भी बहुत प्यार मिला था। सोनिया विज आंटी से मुझे जो आशीर्वाद मिला था, उसमें गुरुजी के प्लग के साथ नाईट ग्लो भी शामिल था, इतना अनोखा और उपयोगी, जिसकी मुझे वास्तव में ज़रूरत थी, लेकिन यह नहीं पता था कि उस तरह का कुछ भी मौजूद था। उन्होंने एक गुरुजी का ब्रेसलेट, जिसे मैंने अपने हैंडबैग में रखा था और भूल गई थी । अगली सुबह जब मैं एयरपोर्ट के लिए तैयार हो रही थी, मैंने ब्लैक / ग्रे सूट पहना था और मैचिंग गुरुजी का ब्रेसलेट पहनना चाहती थी । थोड़ा मुझे पता था कि गुरुजी ने पिछले दिन सोनिया आंटी के माध्यम से मुझे ग्रे ब्रेसलेट दिया था ।जब मैं चाह रही थी कि अगर मुझे गुरुजी का ग्रे / काले मिल जाए, तो मैंने अपना हैंडबैग खोल दिया और बिल्कुल मेल खाने वाले गुरुजी के ग्रे ब्रेसलेट को देखकर दंग रह गई ।

मैंने दुबई में अपने छोटे प्रवास के दौरान हर मिनट उनकी उपस्थिति और उनके प्यार को महसूस किया। प्रस्थान के दिन, जब मैं दुबई हवाई अड्डे पर बैठी थी, गुरुजी ने मेरे सामने रखे मेज पर एक सुंदर गुलाब के माध्यम से अपनी उपस्थिति दिखाई।

जैसे ही मैं दिल्ली हवाई अड्डे पर उतरी, मै बहुत उत्तेजित थी । एस्केलेटर पर चलते समय, मैं अपने मन में गुरुजी से बात कर रही थी "गुरुजी, मैं खुश हूँ कि मैं आपके शहर पहुँच गई हूँ। क्या आप भी मेरे यहाँ होने पर खुश हैं? यदि हाँ, तो कृपया मेरा स्वागत करें। " तुरंत ही मैंने गुरु नानक देव जी के हाथ जोड़ते हुए , नमस्ते की तरह एक साइन बोर्ड देखा और लगा जैसे कि गुरुजी मेरा स्वागत कर रहे हों। मैं गदगद थी और विश्वास करने के लिए स्थिर हो गई कि मैं क्या देख रही हूं। गुरु नानक देव जी की 550 वीं वर्षगांठ का जश्न मनाने का साइनबोर्ड था। मैं शब्दों से परे हर्षित थी।

अगले दिन (भारत में हमारे प्रवास का पहला दिन) रविवार होने के नाते: चूंकि मेरी छुट्टी गुरुजी को समर्पित थी, इसलिए यह स्पष्ट था कि मुझे पहले दिन ही बड़े मंदिर जाना था। हम बड़े मंदिर के लिए रवाना हो गए और जब हम शटल बस में थे, अरुशी और मैं दोनों प्रार्थना कर रहे थे और हम मन ही मन बड़े मंदिर में सेवा पाने की कामना कर रहे थे। मैं गुरूजी से कह रही थी कि वह मुझे यूके में सेवा देने के बहुत दयालु रहे हैं, लेकिन बड़े मंदिर में भी सेवा मिल जाए तो बहुत अच्छा होगा। हम एक-दूसरे के अरदास (बड़े मंदिर में सेवा पाने के लिए) से अनजान थे।

हम बड़े मंदिर पहुँचे, अच्छे दर्शन किये और दिव्य लंगर प्रसाद ग्रहण किया। बाहर आने के बाद, हम प्रवीण अंकल से स्वरूप लेने के लिए मिलने गए। हम उनसे कभी नहीं मिले थे, लेकिन पवन के माध्यम से उन्हें स्वरुप भेजने का अनुरोध कर रहे थे। हम उनसे मिलना चाहते थे और उनके सेवा के लिए शुक्रिया अदा करना चाहते थे। जैसे ही हम वैन तक पहुँचे, मैंने अपना और आरुषि का परिचय दिया। जिस तरह से उन्होंने हमारा स्वागत किया और हमें वहाँ बैठे अन्य सेवादारों से मिलवाया उससे हम अभिभूत हो गए । जल्द ही, उन्होंने हमें सेवा दे दी। यह हम दोनों के लिए खुशी की ऐसी अनुभूति थी कि मेरी आंखों में आंसू थे। हमने एक-दूसरे को देखा और महसूस किया कि हम गुरुजी के प्रति कितने आभारी थे कि उन्होंने हमारे अरदास को पूरा करने के लिए इतनी जल्दी हमें संगत के लिए उनका स्वरूप तैयार करने की सेवा दी । फिर अंकल ने आरुषि को खिड़की पर खड़े रहने और संगत को स्वरूप देने के लिए कहा। गुरुजी जानते थे कि उन्हें चीजें बांटना पसंद है। हमने कुछ घंटों के लिए सेवा किया और अभी भी जारी रखना चाहते थे, लेकिन यह पहले ही काफी देर हो चुकी थी। हमने अंकल से कहा कि हम अगले दिन (सोमवार) मंदिर आएंगे। उन्होंने और उनकी आंटी ने हमें बताया कि मंदिर सोमवार को पूरे दिन खुला रहता है, इसलिए यदि हम सुबह 10 बजे के आसपास आते हैं, तो हम अधिक समय तक सेवा कर सकते हैं।

सोमवार को, हमे किसी वजह से देर हो गई और दोपहर 12.30 बजे हम बाडे मंदिर पहुंचे । मैं थोड़ी चिंतित थी क्योंकि अब हमारे पास समय कम था और हमें अंदर जाना था, दर्शन करना था, समोसा / चाय प्रसाद लेना था, सेवा करनी थी, और फिर घर लौटकर हमारी शाम 5.15 बजे की चंडीगढ़ के लिए ट्रेन पकड़ने के लिए पैकिंग करनी थी। मुझे नहीं पता था कि पहले सेवा करूँ और बाद में दर्शन या इसके विपरीत। दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण थे। गुरुजी ने सबसे पहले दर्शन और प्रसाद के लिए मेरे मन में एक विचार डाला। गुरुजी की कृपा से, हमे बड़ी भीड़ का सामना नहीं करना पड़ा और 30 मिनट से भी कम समय में बाहर आ सके।

हम फिर प्रवीण अंकल के पास सेवा के लिए गए। हम सेवा का इतना आनंद ले रहे थे कि हम पछता रहे थे कि हमने उस दिन के लिए ट्रेन क्यों बुक की थी। इस बीच, अंकल ने सेवादार आंटी को हमारे गले में गुरुजी की माला डालने के लिए कहा। हे भगवान! वह क्षण संजोना था। बड़े मंदिर में बैठे, सेवा करि और गुरुजी के माला से आशीर्वाद मिला।

जैसा कि हमे बाद में एक ट्रेन पकड़नी थी, इसलिए हमने 2 बजे वापिस निकलने का मन बना लिया। हमें सेवा को छोड़ने का मन नहीं हो रहा था इसीलिए 2.35 तक सेवा करते रहे । तब अंकल ने सेवादार आंटी से कहा कि हमें लंगर प्रसाद के लिए ले जाएं। जिसने हमें एक बड़ी दुविधा के साथ प्रस्तुत किया। आमतौर पर, संगत को सोमवार को

केवल चाय / समोसा प्रसाद ही परोसा जाता है, लेकिन सेवादारों को लंगर प्रसाद भी परोसा जाता है। सोमवार को लंगर प्रसाद पाने का ऐसा दुर्लभ मौका था। यह स्पष्ट था कि अगर हम लंगर प्रसाद के लिए अंदर गए, तो हमारी ट्रैन छूट जाएगी। हम एक तय में थे। हमने तब सेवादार आंटी को बताया जिन्होंने अंकल को सूचित किया कि हमे ट्रेन पकड़नी है। लेकिन मैं यह सोचकर आशंकित थी कि क्या मैं लंगर प्रसाद का अनादर कर रहा थी । हमें निश्चित नहीं थे कि क्या करना सही था। मैंने फिर आंटी से पूछा और मेरी राहत के लिए उन्होंने मुझसे कहा कि अगर हमने कुछ प्रसाद (वह चाई / समोसा प्रसाद) ले लिया है तो ठीक है। हमने अपने मन में गुरुजी से माफी मांगी और जल्दबाजी में बड़े मंदिर से निकल गए। हमें पहले ही काफी देर हो चुकी थी।

जब हम अपनी कार में बैठे, तो मेरे पति ने फोन किया और वह थोड़े अशांत थे क्युकी हमे देरी हो गई थी । पहले से ही समय दोपहर के 3 बजे से उप्पर होगया था। हमें गुड़गांव घर जाना था (बड़े मंदिर से पहुंचने में कम से कम 45 मिनट लगते हैं), अपना सामान पैक करना था, 5.15 बजे ट्रेन पकड़ने के लिए नई दिल्ली स्टेशन के लिए रवाना होना था । हमें पता था कि गुड़गांव से स्टेशन तक न्यूनतम 1.5 घंटे लगते हैं और हमेशा स्टेशन के बाहर भीड़ होती है जिसमें अलग 15-20 मिनट लगते हैं। इसलिए, ट्रेन को पकड़ने में सक्षम होना लगभग असंभव था। मेरे पति ने ट्रेन छोड़ने और किसी और दिन चंडीगढ़ जाने का सुझाव दिया, लेकिन मुझे उम्मीद थी कि गुरुजी हमें निराश नहीं करेंगे। इसके अलावा, हमारा शेड्यूल टाइट था। अगले दिन हमने चंडीगढ़ में सत्संग में जाना था ।

मैंने अपने पति को वीडियो कॉल किया और कहा कि हमारे लिए पैक करें ताकि घर पहुँचते ही हम निकल सकें। मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा, क्योंकि मुझे पता था कि अगर मैंने ट्रेन छोड़ दी, तो यह न केवल मेरे पति को परेशान करेगा, बल्कि मुझे परेशान भी करेगा (कि न तो हमने अपने दिल के अनुसार सेवा कि और न ही हम ट्रेन ले पाए)। हम घर पहुँचे और कुछ ही सेकंड में अपना सामान उठाकर स्टेशन के लिए रवाना हो गए।

उस क्षण से लेकर जब तक हम स्टेशन नहीं पहुँचे; मैं मन में मंत्र जाप कर रही थी, गुरुजी से प्रार्थना कर रही थी कि मुझे निराश न करें। जब रास्ते में ट्रैफ़िक बढ़ रहा था तो मैंने उम्मीद खो दी थी, लेकिन जब मैंने सामने वाली कार पर "जय गुरुजी" का स्टिकर देखा तो उम्मीद वापिस आ गई।

पूरे समय में, मैं अपने दिमाग में सोच रही थी कि अगर हमारी ट्रेन छूट जाती है (जो कि काफी संभव था) तो यह एक सबक होगा कि कभी सेवा बीच में नहीं छोड़नी चाहिए जिस तरह से हमने किआ । अगर हम ट्रेन पकड़ने में कामयाब होते हैं, तो इसका मतलब यह होगा कि गुरुजी ने हमारी पहले की हुई सेवा के लिए हम पर अपना प्यार बरसाया।

लंबी कहानी को छोटा करने के लिए, वह बहुत कठिन स्थिति थी और गुरुजी ने हमें ट्रेन को सचमुच आखिरी मिनट में पकड़वाया । हम 5.11 pm बजे ट्रेन में सवार हुए। जब हम ट्रेन में बैठे, तो हमें बहुत राहत मिली। ऐसा प्रतीत हुआ मानो गुरुजी कह रहे हों कि जब हमने उनकी सेवा पहले करि थी तो वे हमें निराश कैसे कर सकते थे। शुकराना गुरुजी।

जैसा कि मैं बड़े मंदिर में हमारे दिल की इच्छा अनुसार सोमवार सेवा नहीं करने के लिए और सेवादार (सोमवार) लंगर प्रसाद नहीं करने के लिए खुद को दोषी मान रही थी इसलिए मैं चंडीगढ़ से हमारे लौटने पर सोमवार को फिर से जाना चाहती थी। लेकिन मुझे यह जानकर दुख हुआ कि सोमवार को, 23 सितम्बर को मेरी बहन के पड़ोसी के घर पर सत्संग के लिए नोएडा जाने की योजना बनाई गई थी। जब मैं अपनी बेटी से कह रही थी कि दुख की बात है कि 23 तारीख को हम नोएडा में सत्संग के कारण बड़े मंदिर नहीं जा पाएंगे, मैंने अपनी बहन का संदेश देखा कि उसके पड़ोसी ने अचानक उसके सत्संग को 24 तारीख को स्थगित कर दिया था। हम शब्दों से परे चकित थे। एक सत्संग का स्थगित होना कितना दुर्लभ है! लेकिन हमारे गुरुजी हमारे विचारों को पढ़ रहे थे और हमारी हर इच्छा को

पूरा कर रहे थे, इसलिए उन्होंने आंटी से अपने सत्संग को 24 तारीख तक स्थगित कराया ताकि हम 23 (सोमवार) को बडे मंदिर जा सकें।

जैसा कि मैं ट्रेन में गुरुजी के बड़े स्वरूप को अपने साथ ले जा रही थी, गुरुजी ने हमें 1, 2 नहीं बल्कि 3 खाली सीटों के साथ आशीर्वाद दिया ताकि वह और हम दोनों आराम से जा सकें।

इतना ही नहीं, गुरुजी ने मेरे आहार का भी ध्यान रखा। जैसा कि मैं शताब्दी में अस्वास्थ्यकर (वसायुक्त) भोजन के बारे में काफी चिंतित थी, लेकिन मैं भूखी थी इसलिए मैं चाह रही थी कि मुझे अपनी पसंद का हल्का आहार मिल सके। गुरुजी ने ऐसा किया। इतने सालों में, मैंने कभी आहार चिवड़ा और शाकाहारी पैटी को शताब्दी में नहीं देखा। दोनों मेरे पसंदीदा हैं।

हम 16 तारीख को चंडीगढ़ पहुंचे और अगले दिन हमें एक सत्संग के लिए जाना था, जो मुझे बताया गया था, विशेष रूप से हमारे लिए रखा गया था। सभी विनम्रता में मैं इसे साझा कर रही हूं, बस यह दिखाने के लिए कि गुरुजी अपनी सांगत से कितना प्यार करते हैं । वह जानते थे की मैं हर उस शहर में सत्संग में जाना चाहती थी जहाँ मैं अपनी छुट्टी के दौरान जाउंगी, इसलिए उन्होंने चंडीगढ़ में मेरे लिए विशेष रूप से एक सत्संग रखा, जहाँ मेरे प्रवास के दौरान कोई पूर्व नियोजित सत्संग / कार्यक्रम नहीं था।

17 सितम्बर को सत्संग शिव मानस मंदिर में हुआ था जिसे गुरुजी ने आशीर्वाद दिया था। मुझे गुरुजी के अनगिनत आशीर्वादों ने छुआ। मुझे ज्योत जलाने (मेजबानों के साथ), केक काटने और अपने सत्संग को साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया था। यदि यह पर्याप्त नहीं था, तो गुरुजी ने शिव अंकल को वहां बुलाकर मेरी लंबे समय की इच्छा को पूरा किया

(गुरुजी के बचपन के दोस्त) मैं हमेशा उनसे मिलना चाहती थी । उनको सुनकर और गुरुजी के साथ बिताए उनके जीवन के बारे में सुनकर प्रसन्नता हुई ।

गुरुजी जानते थे कि मैं अपनी यात्रा में पुराने संगतों से मिलना चाहती हूँ, इसलिए एक सुखद आश्चर्य के रूप में गुरुजी ने मुझे शिव अंकल से मिलवाया, जो इतनी विनम्र और शुद्ध आत्मा हैं। केवल वह ही नहीं, बल्कि हरलीन आंटी, रॉय आंटी जैसे कुछ अन्य पुराने संगत को मैं मिल और सुन सकती थी। उनके माध्यम से गुरुजी के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना सुखद था।

19 तारीख को हम डुगरी गए। हालाँकि, डुगरी मंदिर पहले रविवार को ही खोला जाता है, लेकिन गुरूजी की कृपा से, हम गुरूवार होने के बावजूद, अंदर जा पाए और लंगर हॉल में उनकी उपस्थिति को महसूस कर पाए, उनकी कार को देख पाए, चाई प्रसाद और जल प्रसाद ले पाए । जब हम डुगरी के रास्ते में थे, हमने मोर देखा तो गुरुजी ने हमें वहाँ दर्शन दिए।

जब तक हम अपने घर /गुड़गांव लौट आए और बस गए, तब तक 21 सितंबर की शाम थी, मुझे पहले से ही 22 तारीख को फरीदाबाद के सत्संग का निमंत्रण मिला था। तब तक मैं गुड़गांव के अलावा हर शहर में सत्संग में भाग लेने या जाने की योजना बना चुकी थी। मैंने कोशिश की लेकिन गुड़गांव में कोई सत्संग नहीं ढूंढ पाई । मैं गुरुजी से कह रही थी कि वह ऐसा नहीं होने दे सकते। मैं गुड़गांव में सत्संग में कैसे शामिल नहीं हो सकती थी ?

जैसा कि मैं गुड़गांव में सत्संग के लिए मुझे आशीर्वाद देने के लिए अपने मन में गुरुजी से प्रार्थना कर रही थी, मेरे हाथ अचानक मेरे मोबाइल पर चले गए, लंदन की रितिका आंटी के साथ एक पुरानी चैट खोली और मेरी तर्जनी (मेरे नियंत्रण में नहीं) सटीक वाक्य / चैट तक पहुंच गई। जिसमें रितिका आंटी ने उल्लेख किया था कि उनकी माँ गुड़गांव में रहती थीं। आज तक, मुझे नहीं पता कि मैंने अचानक उनकी चैट कैसे खोल दी (मैं उसके साथ अक्सर चैट नहीं करती और मैं उन्हें जॉय आंटी के माध्यम से ही जानती थी) और वह भी उनके पुराने संदेश को देखने मिला, जिसे

संयोग से उन्होंने मुझे भेज दिया था गुड़गांव में रहने वाली उनकी मां के बारे में। वैसे भी, मैंने उनसे पूछा कि क्या उनकी माँ अभी भी वहाँ रहती हैं। मुझे हां कहा गया था, उन्होंने किया और कई गुड़गांव गुरुपरिवार समूहों के सदस्य के रूप में, वह गुड़गांव में आगामी सत्संगों के बारे में जानती थी। मैं उनकी माँ तक पहुँच गई और यकीन है कि वह काफी जानती थी और मुझे कम से कम गुड़गांव सत्संग के लिए 4 निमंत्रण भेजे थे। मेरे कार्यक्रम के अनुसार, 22 सितंबर को अगले दिन सत्संग ने मुझे अनुकूल किया, हालांकि मैंने फरीदाबाद का सत्संग भी 22 तारीख को निर्धारित किया था। मुझे राहत मिली कि मैं गुड़गांव में सत्संग में जा सकुंगी । 22 सितंबर को, बैक टू बैक फरीदाबाद के साथ गुडगाँव में सत्संग में भाग लिया।

23 तारीख (सोमवार): सेवा करने के लिए बडे मंदिर गए। पहले मैं सोच रही थी कि हमने स्वारूप सेवा का अनुभव किया है लेकिन कोई और नहीं। थोड़ा मुझे पता था कि गुरुजी मेरे विचारों को पढ़ रहे हैं। जब हम प्रवीण अंकल के पास गए, तो उन्होंने कहा कि उस दिन कोई सेवा उपलब्ध नहीं थी। हम निराश हो गए और अंकल से विनती की कि हम साल में एक बार भारत आते हैं, इसलिए सबसे ज्यादा सेवा करके सबसे ज्यादा आशीर्वाद लेना चाहेंगे। उन्होंने हॉल के अंदर सेवा को-ऑर्डिनेटर से मिलने की सलाह दी, जो हमें कुछ सिला दे सकते थे। हम हॉल के अंदर गए, लेकिन वह अंकल नहीं मिले और लंबे समय तक इंतजार करना पड़ा, यह आसान नहीं था और गुरुजी चाहते थे कि हमें इसका एहसास हो। मुझे खुशी है कि उन्होंने हमें एहसास दिलाया कि उनकी इच्छा के बिना कोई सेवा संभव नहीं है। जब हम इंतजार कर रहे थे, हम लगभग उम्मीद खो चुके थे

सेवा मिलेगी और जैसा कि हमें बताया गया था कि सेवा के लिए किसी को पहले से सूचित करने / आवेदन करने की आवश्यकता थी । हम गुरुजी से प्रार्थना कर रहे थे और जल्द ही अंकल आ गए और गुरुजी की कृपा से हमें रसोई में सेवा मिल गयी ।

जब हम रसोई के अंदर गए तो रसोई प्रभारी कनिका आंटी वहां नहीं थीं। वह हमें विशिष्ट सेवा आवंटित करने वाली थीं । जब हम प्रतीक्षा कर रहे थे, हमें ब्रेड भरने के लिए सेवा (ब्रेड-पकोड़े बनाने के लिए) मिली, लेकिन केवल 5 मिनट के लिए। तब और ब्रेड पकोड़े की जरूरत नहीं थी। हम लंगर प्रसाद (जैसा कि हम पिछले सोमवार नहीं कर पाए थे) चाहते थे, लेकिन हमने अभी तक सेवा नहीं करि थी । इस बीच आंटी आई और हमें पता नहीं चला, कि कैसे भी उन्हें कुछ बताए बिना, उन्होंने हमसे कहा कि पहले जाओ और लंगर प्रसाद खाओ। एक और इच्छा पूरी हुई।

24 तारीख जब हम एक सत्संग के लिए नोएडा गए, उस दिन की घटनाओं की श्रृंखला एक सुंदर सत्संग में बदल गई, जिसे मैंने अलग से साझा किया है।

जब हम 25 तारीख को नोएडा से वापस आ रहे थे, तो कैसे गुरुजी ने हमें एम्पायर एस्टेट में बुलाकर असंभव को संभव बना दिया, यह भी एक सत्संग है, जिसे इस पुस्तक में अलग से साझा किया गया है।

26 को हम यूके के लिए रवाना हुए। गुरुजी की योजना अथाह है। हमारे लौटने के अगले ही दिन उन्होंने मोहित के घर हमें सत्संग का आशीर्वाद दिया। इसलिए, छुट्टियों की शुरुआत हमारे घर पर एक सत्संग के साथ हुई और एक सत्संग के साथ समाप्त हुई। हमारे प्यारे गुरुजी द्वारा एंड टू एंड सुंदर प्लानिंग।

क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है कि कैसे गुरुजी ने हमारी छोटी से छोटी इच्छा का ध्यान रखा और सही मायने में हमारी छुट्टी को एक सपने की छुट्टी और तीर्थयात्रा बनाना सुनिश्चित किया?

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

गुरुजी ने रास्ते को बाधा मुक्त बना दिया

नोएडा में मेरी बहन मंजू आंटी की पड़ोसी कृतिका आंटी के घर पर 24 सितंबर को सत्संग होना था। मंजू आंटी जानती थी कि मैं उस सत्संग में भाग लेने की इच्छुक थी। लेकिन जब उन्होने पिछली रात को फोन किया (हमारे अगले दिन की यात्रा की योजना जानने के लिए), तो मैं काफी थकी हुई थी, इसलिए अन्जाने मे मेरे मुँह से निकला कि मुझे नहीं लगता मै अगले दिन नोएडा आ पाऊँगी ।

रात में एक अच्छी नींद के बाद, हम अगली सुबह काफी तरोताजा थे और नोएडा के लिए तैयार होने लगे। मैंने अपनी बहन के साथ हमारी योजना को साझा किए बिना, गुरुजी के २ बड़े स्वरूप को उठाया और उन्हें ड्राइवर के साथ वाली, कार की अगली सीट पर रखा और अपनी बेटी के साथ नोएडा के लिए रवाना हो गई।

आमतौर पर जब भी मैं उनसे मिलने जाती हूं, मैं हमेशा उन्हे आने की सूचना देती हूं, घर छोड़ने का सही समय, पहुंचने का लगभग समय, हम कौन सा रास्ता लेंगे, आदि के बारे में उन्हे बताती हूँ लेकिन उस दिन, मैंने उन्हे सरप्राइज देने की सोची और एक बार भी फोन नहीं किया। नोएडा में प्रवेश किया।

नोएडा पहुँचने पर, मैं सोच रही थी कि कौन हमें उनकी सोसायटी के प्रवेश द्वार से ले जाएगा। प्रक्रिया के अनुसार, निवासी को आगंतुक के विवरण के बारे में प्रवेश द्वार पर सुरक्षा को पूर्व-सूचित करने की आवश्यकता होती है। जब आगंतुक गेट पर पहुंचते हैं, तो सुरक्षा निवासी को क्रॉस-चेक करने के लिए बुलाता है। जब निवासी आगंतुकों को अनुमति देने की पुष्टि करता है, तो सुरक्षाकर्मी आगंतुक को अनुमति देने से पहले आगंतुक का आईडी कार्ड (आगंतुकों के जाने तक उनके साथ रखने के लिए जमा) लेता है।

जब मैं मन में गुरुजी से बात कर रहा था और बोल रहा था “गुरुजी, क्या करना है? उसे सरप्राइज देना चाहते हैं ”, हम अपनी कार को आसानी से अंदर जाते देख चौंक गए। किसी ने हमें बिल्कुल नहीं रोका। वास्तव में, सुरक्षा गार्ड यह देखकर चौंक गए कि हमारी कार के लिए बाधा गेट (प्रवेश द्वार) अपने आप कैसे खुल गया। कुछ ही समय में गुरूजी ने मुझे महसूस कराया चूंकि वे (उनका स्वारूप) आगे की सीट पर बैठे थे तो कोई हमें कैसे रोक सकता था। गुरुजी की शक्तियाँ अथाह हैं।

हमारी अगली पहेली मेरी बहन के सटीक फ्लैट नंबर को जानने की थी। मुझे उनका पता याद नहीं था क्योंकि मैं पहुँचने से ठीक पहले फ़ोन पर उनसे हर बार पूछती थी। अचानक मेरे मन मे एक एक विचार आया और मैने उनके पड़ोसी के सत्संग का निमंत्रण खोला । मेरी बहन ने मुझे बताया था कि सत्संग उनके बगल के पड़ोसी के घर पर था। इसलिए, हमने सोचा कि पड़ोसी के आमंत्रण पर लिखे पते से मेरी बहन तक पहुँच सकते है ।

जब हम उस पते की तलाश कर रहे थे, हम एक घर के बाहर फूलों की माला देखते हैं, जिससे मुझे लगा कि सत्संग घर होना चाहिए। मुझे नहीं पता कि मेरे साथ क्या हुआ। मैं कार से बाहर निकली, सामने वाली सीट से गुरुजी के बड़े स्वरूप को उठाया, अपने हाथ में लिया और उस घर की ओर चलने लगी।

उस घर की सीढ़ियों पर चढ़ने के दौरान, मैंने एक महिला (कृतिका आंटी) को घर से बाहर आते देखा, मेरे हाथ मे गुरुजी का स्वरूप देखकर उनकी आँखें चौंधिया गई। मैं उनसे पूछ रही थी कि "क्या यह मंजू भाटिया का घर है?" फिर उन्हे एहसास हुआ कि मुझे मंजू आंटी की बहन होना चाहिए, क्योंकि वह जानती थी कि मंजू आंटी की बहन को सत्संग के लिए आना था।

गुरुजी के बड़े स्वरूप को देखकर उनकी आंखों में खुशी के आंसू थे। उनके शब्दों में, उन्हे लगा जैसे गुरुजी उनके घर आ रहे हैं। दरअसल, एक दिन पहले सत्संग के लिए मंजू आंटी से गुरुजी का स्वरूप उधार लेते समय, उन्होंने उनसे पूछा था कि "गुरुजी मेरे घर कब आएंगे, मुझे खुद का गुरुजी का स्वरूप कब मिलेगा?"

जब उन्होंने हमारा स्वागत किया और हमें अंदर ले गए, तो उनकी माँ और अन्य संगत जो दरबार की तैयारी कर रही थीं, वे भी मेरे हाथ में गुरुजी के इतने बड़े-बड़े स्वरूप देखकर आश्चर्यचकित थीं। वे सभी जानते थे कि कृतिका आंटी को गुरुजी का स्वरूप चाहिए था। उनके लिए, यह ऐसा था जैसे गुरुजी सत्संग के लिए आए और उन्हे उनके खुद के लिए गुरुजी का पहला स्वरूप देते हुए आशीर्वाद दिया।

इसी बीच, मेरी बहन मंजू आंटी ने मेरे मोबाइल पर कॉल किया। मज़े के लिए, मैंने अपना फोन कृतिका आंटी को दे दिया, जिससे मेरी बहन चौंक गई, उन्हे आश्चर्य हुआ कि हम इतनी सख्त सुरक्षा प्रक्रियाओं के होते हुए अन्दर कैसे आ सकते है। यह स्पष्ट था कि सामने की सीट पर बैठकर गुरुजी ने हमें इतना आशीर्वाद दिया कि हमारे लिए बाधाएँ स्वतः खुल गईं और यहाँ तक कि सुरक्षा गार्ड भी हमें रोक नहीं पाए।

हम आश्चर्यचकित थे कि कैसे गुरुजी ने कृतिका आंटी को आशीर्वाद देने के लिए मुझे अपनी बहन को आश्चर्यचकित करने का विचार दिया। शाम को जब हम कृतिका आंटी के सत्संग में गए, मैं अपने मन में उदास होकर गुरुजी से बात कर रही थी कि मेरी ड्रेस का रंग उनके चोले या उनके दरबार के रंग से मेल नहीं खाता। तुरंत, गुरुजी ने मेरा ध्यान अपने स्वरूप के चारों ओर फूल माला की ओर आकर्षित किया और मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि फूल माला का रंग संयोजन बिल्कुल मेरी पोशाक के समान था, इस तथ्य के बावजूद कि मैंने बहुत सामान्य रंग नहीं पहने थे, वे अद्वितीय रंग थे (बैंगनी और फ़िरोज़ा)। चित्र यहाँ साझा किया गया।

सत्संग के बाद, कृतिका आंटी ने मुझे अपने सत्संगों को साझा करने के लिए आमंत्रित किया। मैंने डायरी सत्संग सहित कुछ सत्संग साझा किए। जैसे ही मैंने बोलना समाप्त किया, एक आंटी रो रही थी, सिसक रही थी। उन्होंने 'यूट्यूब' पर मेरा डायरी सत्संग देखा था, दुबई संगत द्वारा अपलोड किया गया था जब मैं दुबई में अपना सत्संग साझा कर रही थी। उन्होने कहा, "मैंने यूट्यूब पर मधु आंटी के सत्संग सुने और सोच रही थी कि गुरुजी से इन्हे डायरी से ब्लैस किया है, वह कितनी धन्य है! वह दुबई या यूके से है? क्या मैं इनका सत्संग यूट्यूब पर देखती-सुनती रहूंगी या क्या मैं कभी इनसे लाइव (वास्तव में) मिलूंगी? "

उन्होंने बताया कि बेतरतीब ढंग से अचानक उन्हे सत्संग का निमंत्रण मिला था और कैसे वह बिना किसी सुराग के खोजते हुए उस पते तक पहुँची थी। वो हैरान थी कि कैसे गुरुजी ने इतनी जल्दी मधु आंटी से मिलने की उनकी इच्छा पूरी कर दी । वह इतनी हैरान थी और विश्वास नहीं कर रही थी, कि उन्होंने वास्तविकता को महसूस करने के लिए मुझे गले लगाने के लिए कहा । उन्हे देखकर, सभी संगतों ने मुझे गले लगाना शुरू कर दिया। गुरूजी ने मुझे नोएडा संगत के माध्यम से बहुत प्यार दिया। मैं कुछ भी नहीं हूं, उनकी चरणों की धूल भी नहीं।

(मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा)

🙏🕉️ शुक्राना गुरूजी 🕉️🙏

हमें गुरुजी का बुलावा - छोटे मंदिर में

25 सितंबर को, नोएडा से लौटते समय, मैं और मेरी बेटी आरुषि का बडे मंदिर जाने को बहुत मन था पर बडा मंदिर तो मंगलवार और बुधवार को बंद रहता है । अगले दिन हमें ब्रिटेन के लिए रवाना होना था। तुरन्त उसने कहा, "मम्मा, छोटा मंदिर (एम्पायर एस्टेट) के बारे में क्या ख्याल है"?

हमने सोचा कि छोटा मंदिर जाकर गुरुजी के दर्शन करना अच्छा रहेगा। यद्यपि (ब्रिटेन छोड़ने से पहले) और भारत पहुंचने के बाद, मैंने विभिन्न संगतों (पुराने संगतों, बडे मंदिर के सेवादार और छोटा मंदिर के करीब रहने वालों) के साथ जांच की थी और मुझे कहा गया था कि छोटा मंदिर बंद रहता है और अब संगत के लिए नहीं खुलता, फिर भी मुझे ऐसा लगा कि मुझे अपनी पूरी कोशिश करनी चाहिये, हो सकता है कि गुरुजी के पास हमें वहाँ बुलाने और हमें आशीर्वाद देने का कोई तरीका हो।

मैंने कुछ सेवादारों को कॉल करना शुरू कर दिया, लेकिन मुझे पता था कि आखिरकार, यह गुरूजी ही हैं जो अगर असंभव भी हो तो उसे संभव बना देंगे।उन्होंने वही कहा कि मंदिर अब खुलता नहीं है। मैंने एक अंकल को फोन किया और अपनी इच्छा व्यक्त की।

उन्होंने महसूस किया कि मैं काफी उत्सुक थी और विदेश से थी, उन्होंने मुझे कुछ मिनट देने के लिए कहा। कुछ समय बाद, उन्होंने मुझे छोटू अंकल (जो इतने धन्य हैं , इतने सालों तक गुरुजी के ड्राइवर रहे), का संपर्क नम्बर भेजा । छोटू अंकल का नंबर पाकर मैं बहुत खुश थी क्योंकि वे इतने सालों तक गुरुजी के ड्राइवर रहे। हमने उन तक पहुंचने की कोशिश की, लेकिन उसका फोन अनुत्तरित था। फिर, मैंने मन में गुरुजी से प्रार्थना करते हुए ,एम्पायर एस्टेट के लिए सीधे आगे बढ़ने का फैसला किया।

हमें यह जानकर अचरज हुआ कि जब हमने अपना मन बनाया और अपने ड्राइवर को एम्पायर एस्टेट की ओर जाने के लिए कहा, तो हम उसी रास्ते पर थे और हमें डायवर्ट नहीं करना पड़ा।

हम गेट पर पहुँचे और हमें गार्डों द्वारा रोका गया लेकिन गुरुजी को मेरी इच्छा पता थी, इसलिए हम गेट से प्रवेश कर सके। हम छोटा मंदिर पहुंचे, घंटी बजाई (अभी भी हमारे दिल में प्रार्थना चल रही थी) और छोटू अंकल दरवाजे पर आए। जैसा कि अपेक्षित था, उन्होंने कहा कि मंदिर अब दर्शन के लिए नहीं खोला जाता। मैंने उनसे कहा कि हम मंदिर में आकर गुरुजी के दर्शन (और आशीर्वाद) पाने के लिए बहुत उत्सुक थे और ब्रिटेन से आए थे।

गुरुजी ने उन्हें (टेलीपैथी द्वारा) बताया होगा और तभी वह हमारे लिए मंदिर खोलने पर सहमत हुए। वाह! यह एक ऐसी खुशी थी जिसका ब्यान करना कठिन है। मैंने अपने ड्राइवर अमर से कहा कि वो भी हमारे साथ अंदर आकर गुरुजी का आशीर्वाद लें। जब हम उस मंदिर के अंदर गए जहाँ गुरुजी का आशियाना है, तो यह ऐसा दिव्य अनुभव

था मानो हम स्वयं गुरुजी के सामने बैठे हों। हमें पास सुंदर दर्शन हुए और हमें जल प्रसाद, चाय प्रसाद, नमक-पारे और बर्फी का प्रसाद भी परोसा गया था जो हमारे लिए बहुत ही सौभाग्य की बात थी।

यह दिलचस्प बात थी कि जब हमारे (मुस्लिम)ड्राइवर अमर मोहम्मद हमारे साथ छोटे मंदिर में थे, तब जो शबद चल रहा था, वो था “या अल्लाह, या मोहम्मद... मदीना। या अली” । मैंने पहले कभी भी गुरुजी के सत्संग या मंदिर में इस तरह की मुस्लिम प्रार्थना या शबद नहीं सुना था।

इसमें कोई शक नहीं कि गुरुजी उन्हें आशीर्वाद दे रहे थे। अगला शबद था "बड़ी दूर से आई हूँ तेरे द्वार"। दोनौं ही शबद जैसे कि केवल हमारे लिए चल रहे थे और हमें बहुत अच्छा लगा।

मेरी छुट्टियों की यात्रा कार्यक्रम (कार्यसूची) में केवल यही ‘छोटे मंदिर में जाकर गुरुजी के दर्शन करना’ एकमात्र बाकी था और कैसे गुरुजी ने उसे भी पूरा किया और इतने अच्छे और धन्य तरीके से।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏🏻

कैसे गुरुजी हमारी छोटी छोटी इच्छाओं को भी पूरा करते हैं

यह फरवरी 2020 का पहला सप्ताह था। कार्यालय में, मुझे लंदन में हमारे प्रधान कार्यालय में नियमित मासिक यात्रा सहित 2 सप्ताह में समाप्त करने के लिए चुनौतीपूर्ण परियोजनाएं थीं।

मेरे मन में कोई संदेह नहीं है कि मेरी व्यावसायिक यात्रा के दौरान गुरुजी ने मेरी कई तरह से मदद की। मैं बुधवार शाम तक बर्मिंघम (लंदन से) लौटी। फिर, गुरुवार शाम 7 बजे की समय सीमा के साथ एक परियोजना (प्रोजैक्ट) और शुक्रवार को समय सीमा के साथ एक अन्य परियोजना (प्रोजैक्ट) थी।

गुरुवार परियोजना में इतनी सारी जटिलताएँ थीं और हेड ऑफिस से इनपुट्स की जरूरत थी जो सुबह मुझे मिलने वाले थे लेकिन दोपहर तक आए। मेरे बॉस मेरे बगल में थे और मुझे समय सीमा तक परियोजना को पूरा करने के लिए संघर्ष करते हुए देख रहे ।

सबसे बुरी और चुनौतीपूर्ण बात यह थी कि अंतिम मिनट तक बदलाव किए जा रहे थे जिससे मुझ पर अतिरिक्त दबाव डल रहा था। मैंने गुरुजी से प्रार्थना की कि विवरणों पर ध्यान देने के साथ शांत, धैर्य और सभी एकाग्रता को बनाए रखने में मुझे आशीर्वाद दें।

दरअसल, गुरुजी मेरे साथ थे और मेरी पूरी मदद की। मेरे बॉस ने बहुत सारे बदलावों के चलते अपना धैर्य खो दिया, लेकिन गुरुजी ने मुझे शांत और धैर्यवान रखा। समय की कमी थी । मैं पर्याप्त समय की कमी के कारण सटीकता पर ध्यान नहीं दे पा रही थी । मेरे बॉस ने स्थिति को समझा, देखा कि मै कितना प्रयत्न कर रही थी । गुरुजी से प्रार्थना की और किसी तरह मैंने संख्याओं को अंतिम रूप दिया और समय सीमा के भीतर प्रकाशित किया।

अगले दिन, जब मैं मिलान (संख्याओं का सामंजस्य) कर रही थी, मैं सबसे अच्छे परिणाम की उम्मीद कर रही थी लेकिन सबसे खराब (विसंगतियों) के लिए मानसिक रूप से तैयार थी। गुरुजी के आशीर्वाद से, मुझे कोई बड़ी विसंगति नहीं मिली जिसने मेरे बॉस को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने बाद में एक व्यापक बैठक में मेरे अत्युत्तम काम और रवैये की सराहना की और मुझे पुरस्कार के लिए नामांकित किया ।

बेशक, गुरुजी ने मुझे आशीर्वाद दिया और मैं अपने शुक्रवार के प्रोजेक्ट को भी समय पर पूरा कर सकी और जब मैं अपना सप्ताहांत शुरू करने के लिए शुक्रवार शाम को कार्यालय से बाहर निकली, तब तक मैं बहुत थक गई थी (मानसिक और शारीरिक रूप से अधिक थकी हुई थी) । मुझे राहत मिली कि अच्छी सफलता के साथ व्यस्त सप्ताह समाप्त हो गया था और मैने मन में गुरुजी को शुकराना किया।

क्योंकि मैं काफी राहत महसूस कर रही थी और सप्ताहांत था, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि कुछ स्वादिष्ट खाया जाए (सामान्य सैंडविच नहीं जो मैं हर शाम को काम के बाद खाती हूं)। मैंने अपने मन में गुरुजी से बात करना शुरू किया "गुरुजी आज आप मुझे क्या खिलाएंगे, मैं बहुत थकी हुई हूं, सब कुछ अच्छी तरह से संपन्न हो गया, अब मुझे कुछ अच्छा खाना है , समोसा खाने का मन कर रहा है"।

मैं उस दिन समोसा खाना चाहती थी। मुझे समोसे बहुत पसंद हैं। हम एक ऐसे क्षेत्र में रहते हैं जिसमें सिर्फ २-३ सुपरमार्केट हैं, सभी ही ब्रिटिश स्टोर हैं इसलिए वहां समोसा मिलने की कोई संभावना नहीं है। तब, मैंने घर जा कर जमे हुए (अर्ध पके हुए) समोसे तलने के बारे में सोचा । मैंने अपने पति को फोन करके पूछा कि क्या वह अर्ध पके हुए समोसों से तले हुए समोसे खाएंगे। उन्होने मना कर दिया क्योंकि उनका पेट बहुत भरा हुआ था। मैंने अपने लिए जमे हुए समोसों को तलने का विचार छोड़ दिया।

खुश रया कर जिन्दगी विच परेशानियाँ
ते आंदी रहन्दी ने तू डट के मुकाबला
कर बाकी मेरे ते छड्डु दे
बस दिल नाल शुकराना करदा रहे

जब मैं घर वापस जाते हुए बस में थी, तो मैंने मैंने मन ही मन गुरूजी से प्रार्थना कर उनसे समोसा की कामना की, गुरुजी से कहा, "गुरुजी, इतन मन कर रहा है समोसा खाने को लेकिन यहाँ कहीं नहीं मिलते "। जैसे ही मेरा गंतव्य बस स्टॉप आया, मैं उतरी और मुझे ऐसे लगा जैसे कि गुरुजी मुझे बस्ट स्टॉप पर ब्रिटिश स्टोर ‘को-ऑप’ में जाने के लिए संकेत दे रहे हों।

जैसे ही मैंने को-ऑप में प्रवेश किया, मैं ‘समोसा चैरिटी सेल’ को देखकर एकदम हैरान रह गई। मुझे खुद पर विश्वास नहीं हो रहा था, क्योंकि ब्रिटिश स्टोर्स में समोसा मिलना बहुत असंभव था। शुकराना गुरुजी का कि उन्होनें न केवल मुझे मेरे पसंदीदा समोसे का आशीर्वाद दिया, बल्कि मुझे बेघर बच्चों के लिए दान करने का मौका दिया क्योंकि ‘समोसा चैरिटी की बिक्री’ उस कारण से थी।

जब मैं अभी भी खुशी से आश्चर्यचकित थी और मेरे मन में गुरुजी को शुक्राना कर रही थी, एक स्पष्ट पंजाबी आंतरिक आवाज़ (मुझे यकीन है कि वह गुरुजी की थी) ने कहा "तूँ मेरे वास्ते ‘रोज़िज़ चॉकलेट’ लिती, हुण तूँ समोसा खा" । संगत जी दरअसल उसी दिन मैंने वेलेंटाइन डे सत्संग के लिए गुरूजी के लिए ‘रोज़िज़ चॉकलेट’ खरीदी थी।

जब मैं घर पहुंची और अपने पति को बताया, वह भी गुरुजी का उनके संगत के लिए प्रेम देखकर प्रभावित थे। हमने गुरुजी को शुकराना किया, उन्हें समोसा भोग पेश किया और वास्तव में गुरुजी के आशीर्वाद के रूप में समोसे का आनंद लिया।

मैंने गुरुजी के स्वरूप के सामने सिर झुकाया और उन्हें पूरे दिल से शुक्राना किया। अगर वो गुरुजी नहीं, तो और कौन थे? गुरुजी हमारी छोटी से छोटी इच्छाओं को भी सुनते हैं । इसलिए हमे धैर्य से उन पर विश्वास करते हुए बड़ी समस्याओं का हल उन पर छोड़ देना चाहिए।

इस सत्संग ने उनके वचनों को साबित कर दिया कि "जद वि मेरे नाल सच्चे दिल नाल गलाँ करदे हो, मैं सुनदा हाँ"।

गुरूजी की दयालुता अद्भुत और मर्मस्पर्शी है।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

गुरुजी समय नियंत्रित करते हैं: एक अविश्वसनीय आशीर्वाद

मार्च 29, 2020

कल हमने 29 मार्च (यानि आज दोपहर12.30-2.30 बजे ब्रिटिश समर टाइम) के लिए दुनिया भर में होने वाले सत्संग के संबंध में एक पोस्ट देखी, जिसमें दुनिया को इस खतरनाक कोरोना वायरस से बचाने के लिए गुरुजी से सामूहिक अरदास (प्रार्थना) शामिल थी। मैं वास्तव में इसका हिस्सा बनना चाहती थी और अपनी इच्छा से गुरुजी को अवगत कराया।

पिछली रात 1 बजे, हमारी घड़ियाँ भी 1 घंटे आगे बढ़ीं और ब्रिटिश समर टाइम आधिकारिक रूप से शुरू हुई। सभी प्रकार की परेशानी और भ्रम के बीच (समय परिवर्तन । घड़ियाँ आगे की ओर, मुझे देर से सोना और यह सोचना कि सत्संग शुरू होने के लिए अभी भी समय है क्योंकि मेरी अलार्म घड़ी मैन्युअल रूप से समायोजित नहीं हुई थी)। गुरुजी ने मुझे सही समय पर (सत्संग से 40 मिनट पहले) जगाया जो कि स्नान करने , मेरे अंकल को नाश्ता देने, गुरुजी का चाय भोग बनाने और भेंट करने के लिए काफी था। शुकराना गुरुजी।

मैं वास्तव में उनके तरीकों (योजना) से चकित थी कि कैसे उन्होंने मेरे कार्यक्रम को संरेखित किया (मेरी सुबह की ज्योत व टिक्का सत्संग की शुरुआत में हुआ, सुबह की पहली चाय उनकी चाय प्रसाद थी) । सत्संग प्लेलिस्ट के बीच उन्होंने मेरे अंकल को दोपहर की झपकी के लिए रवाना किया ताकि मैं सत्संग का भरपूर आनंद ले सकूं।

इतना दिव्य था। इस महामारी से हमें छुटकारा दिलाने के लिए प्लेलिस्ट शानदार और उपयुक्त थी। स्वनिर्धारित भजन (परमपिता परमात्मा, दुःखों का करो खात्मा ...), लगभग 40 मिनट लंबा मंत्र जाप। बहुत सुखदायक। शुकराना गुरुजी।

मैं पेट की समस्या से पीड़ित थी। गुरुजी को 'सरबत दा भला' अरदास के साथ, मैंने उनसे अपना पेट ठीक करने का अनुरोध किया।

यह अविश्वसनीय था कि आरती की शुरुआत में, गुरुजी ने मुझे नृत्य कराया। आरती के अंत में, मेरे पेट की समस्या पूरी तरह से ठीक हो गई।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏🏻

चमत्कारी उपचार

13 अप्रैल, 2020 (बैसाखी)

पिछले 3-4 दिनों से मुझे अपने दोनों कानों में अजीब तरह का दर्द हो रहा है, और गले मे भी दर्द, पेट-दर्द, सिर-दर्द और तो और, आंखों में संक्रमण भी था। यह सत्संग इस बारे में है कि गुरुजी ने मुझे इनमें से प्रत्येक दर्द से कैसे ठीक किया व बीमारी से कैसे बचाया।

मेरी बाईं आंख में संक्रमण के लिए, मैंने अपनी आंख पर गुरुजी को लगाया गया चंदन का टीका लगाया और गुरुजी से प्रार्थना की। कल यह ६०% ठीक हो गया था, कल रात यह लगभग ठीक हो गया (लगभग ५% शेष) और अब तक तो पूरा ठीक है। अब मुझे फेसबुक पर नीचे दी गई तस्वीर (गुरूजी की आंख की आकृति) दिखाई दे रही है। ऐसा प्रतीत होता है जैसा कि है कि गुरुजी मुझसे कह रहे हैं कि उन्होंने मुझे आशीर्वाद देकर मेरी बाईं आंख को ठीक किया है? संक्रमित होने पर मेरी आंख बिल्कुल इस तरह दिखती थी (नीचे की पलक पर सूजन) ।

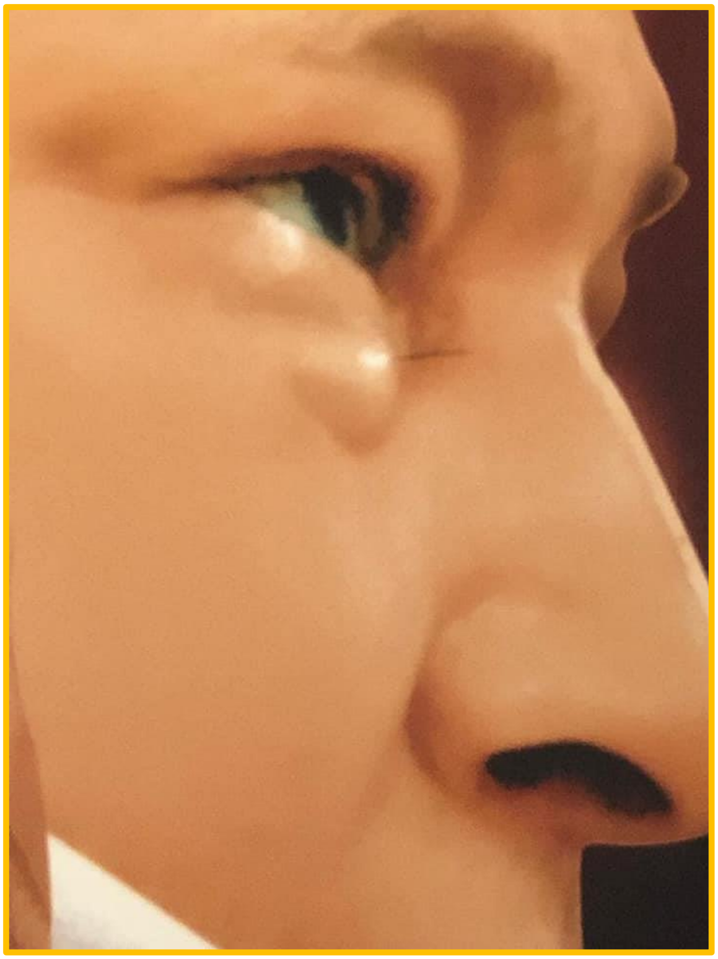

मैं इस तरह से बेवजह या अनावश्यक रूप से नहीं सोच रही हूं । मेरे गुरुजी मेरे रिमोट कंट्रोल हैं और मेरे दिमाग में कोई भी विचार केवल उनकी इच्छा से आता है। उसने वास्तव में मुझे ठीक कर दिया। शुकराना गुरुजी।

पेट-दर्द: आज अमृतवेला मैं 'सुखमनी साहिब पाठ' के लिए अभ्यास कर रही थी, जिसे मुझे पहली बार पढ़ने के लिए (कुछ अष्टपदी) पढ़ने का अवसर दिया गया था। सुखमनी साहिब पाठ को दोपहर बाद के लिए निर्धारित किया गया था, लेकिन जैसा कि मैंने पंजाबी । गुरुमुखी नहीं पढ़ा है, पहले कभी सुखमनी साहिब पाठ नहीं पढ़ा है और मैं श्रद्धेय पथ से इतनी अच्छी तरह से वाकिफ नहीं हूं इसलिए मुझे आत्मविश्वास की कमी थी। मैंने गुरुजी से प्रार्थना की कि वे मुझे आशीर्वाद दें ताकि मैं अवसर के साथ न्याय कर सकूं और मै ठीक से पढ़ सकूँ। लेकिन मैं भयानक दर्द (कान-दर्द और पेट-दर्द) में थी और पथ का अभ्यास करने के लिए खुद को खींच रही थी। मेरी बेटी अंदर आई और मुझे दर्द में देखा। उसने मुझे शौचालय में जाने की सलाह दी। हालाँकि मुझे जाने की ज़रूरत नहीं थी (मुझे लगता है कि गुरुजी ने मुझे जाने के लिए उठाया)। शौचालय जाने के बाद मैं बहुत राहत महसूस कर रही थी और दर्द से मुक्त थी क्योंकि दर्द का स्रोत बाहर निकल गया था । उसके बाद, मैं पाठ पर अभ्यास करने पर ध्यान केंद्रित कर सकी। शुकराना गुरुजी।

'सुखमनी साहिब पाठ' के बाद, मैंने बहुत बेहतर महसूस किया। मेरा कान का दर्द ठीक था जैसे कि पाठ को सुनाने और सुनने से उसका उपचार हो गया। लेकिन सिरदर्द अभी भी था, हालांकि कम।

बाणी गुरु हैं गुरु हैं बाणी
Ruhani prem grup
विच्च बाणी अमृत सारे

GURUJI KA ASHRAM

आज बैसाखी होने के कारण, बडे मंदिर पेज ने साझा किया कि वे लाइव सत्संग करेंगे और उन्होंने पीले मीठे चावल की तस्वीर भी पोस्ट की। बैसाखी का रंग पीला होता है और आम तौर पर गुरुजी को मीठे चवाल । पंजाबी मीठे पीले चावल, गुड़ का हलवा इत्यादि की चीजें दी जाती हैं, तो मुझे गुरुजी के लिए बनाने का मन किया और मेरे पति पवन अंकल से पूछा हैं कि क्या वह मीठे पीले चावल खाएंगे। उन्होने मना कर दिया तो मैंने नहीं बनाए। बाद में शाम को, मेरी बेटी आरुषि पिछले दिन खुद से बनाए पास्ता को याद कर रही थी और उसकी सराहना कर रही थी (वह आजकल ऑनलाइन व्यंजनों के साथ नई चीजें बनाने की कोशिश कर रही है क्योंकि वह घर पर है और बहुत खाली समय है)। फिर, अचानक मैंने उसे बेसन की बर्फी बनाने के लिए कहा। इसके अलावा, मुझे याद आया कि यह वैसाखी थी इसलिए गुरुजी को पीले रंग की बेसन की बर्फी पेश करना भी उत्तम होगा। मेरे पति भी बेसन बर्फी के लिए उत्साहित हो गए। मेरी बेटी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उसकी मदद करूंगी। हालांकि मुझे गंभीर सिरदर्द था पर वैसाखी पर हमारे प्यारे गुरुजी के लिए इसे बनाने के लिए उसका साथ देने के लिए तैयार हो गई।

हमने ऑनलाइन रेसिपी के बाद बर्फी बनाना शुरू किया। इसे बनाते समय मुझे इसे (भुने हुए बेसन को) बहुत हिलाते रहना था, जिसके लिए बहुत प्रयासों की जरूरत थी। आरुषि ने मुझे प्रस्ताव दिया कि मै उसे बेसन को हिलाने चलाने दूँ , लेकिन मैं खुद ही करती रही और लगातार हिलाते हिलाते थकने लगी। उसने अचानक कहा, मम्मा, गुरुजी आप से इतना काम और इतनी मेहनत करवा के क्या पता आपको अच्छी तरह से ठीक कर दें "। क्या आप विश्वास करेंगे कि वास्तव में यह सच हुआ?

हमने इसे बनाने का काम पूरा किया और इसे गुरुजी को परोसा। तब मेरे पति ने खाना शुरू किया और बहुत तारीफ की। उन्हे बहुत पसंद आया । सब कुछ करने के बाद जब मैं आराम करने के लिए ड्राइंग रूम में आई, तो मेरी बेटी ने मुझसे पूछा “मम्मा, आपका सिरदर्द कैसा है? तब मुझे महसूस हुआ कि मेरा सिरदर्द दूर हो गया है। अगर उसने मुझसे नहीं पूछा होता, तो मैं इसके बारे में भूल ही गई थी क्योंकि मैं बिल्कुल ठीक थी।

मैं मुझे ठीक करने में गुरुजी के आशीर्वाद पर संदेह नहीं कर रही हूं, लेकिन मुझे यकीन नहीं था कि यह साझा करने के लिए एक सत्संग के लायक है। तो, मैंने गुरुजी से पूछा, “क्या मुझे इसे साझा करना चाहिए? कृपया मुझे संकेत दें”।

मैंने इसे एक अन्य संगत संजोती आँटी के साथ साझा किया था, जिन्होंने गुरुजी के आशीर्वाद देने के तरीके की सराहना की थी और "आँटी, यह एक चमत्कारी उपचार है" कहते हुए टिप्पणी की थी। कुछ मिनट पहले जब मैं गुरुजी के संकेत का इंतजार कर रही थी, मैंने कुछ सत्संगों को पढ़ने के लिए अपना लैपटॉप खोला, गुरुजी ने मुझे जिस सत्संग को सबसे पहले पड़ाया ,उसका शीर्षक ही चमत्कारी उपचार था । यह मेरे लिए गुरुजी से एक पर्याप्त संकेत जैसा था कि मुझे मेरे दिल से शुकराना के रूप में प्यारे गुरूजी को शुक्राना करते हुए यह सत्संग शेयर (साझा) करना चाहिए।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏🏼

गुरुजी नकारात्मकता / बुरी शक्तियों को दूर करते हैं

हम 2016 तक लगभग 14 वर्षों तक दुबई में रहे। तब सेप्ट 2016 में, मेरी बेटी का दाखिला ब्रिटेन के बर्मिंघम विश्वविद्यालय में हुआ। मेरे पति व्यवसाय के लिए ब्रिटेन, दुबई और भारत के बीच रहते थे , वह महीने में 10 दिन हमारे साथ रहा करते थे। हमने सोचा कि कम से कम मेरी बेटी और मैं साथ रहें, इसलिए हमने स्थायी रूप से ब्रिटेन में शिफ्ट होने का मन बना लिया। वह 4 साल के लिए वैध छात्र वीजा पर आई थी और मैं टूरिस्ट वीजा पर आई थी, जिसके तहत मैं ब्रिटेन में किसी भी एक यात्रा में 6 महीने से कम समय तक रह सकती थी, हालांकि हम 2016 में ब्रिटेन में शिफ्ट हो गए और अपना घर सेट किया, मैं थी अभी भी यहाँ एक पर्यटक । 2017 के अंत में हमने आवेदन किया और मेरे निवास का वीजा मिला जिसके तहत मैं 6 महीनें से ज्यादा भी ब्रिटेन में रह सकती थी। तब तक हम अपने दुबई का फ्लैट भी रख रहे थे।

जब हमें दिसंबर 2017 में अपना ब्रिटेन का निवास वीजा मिला, तो हमने अपने दुबई के घर को छोड़ने और 2 घरों का किराया वहन करने से बचने का फैसला किया। अगला मौका जुलाई 2018 का था जब हमने छुट्टियां बिताने के लिए दुबई जाने की योजना बनाई, दुबई का वीजा रद्द कर दिया और वहां से विदा हो गए।

जुलाई 2018 में, जब हम दुबई के लिए अपने ब्रिटेन घर से निकल रहे थे, तब हमारा फ्रिज काम कर रहा था लेकिन उसमें से भयानक आवाज़ आती थी (जानवर की आवाज़ जैसे) । वो काफी डरावनी आवाज़ होती थी लेकिन समय के साथ हमें इसकी आदत सी हो गई थी। हमने कारण जानने की कोशिश की थी लेकिन व्यर्थ।

ब्रिटेन से हम भारत गए। यह गुरुजी की पुकार थी क्योंकि उस यात्रा में मैं गुरुजी से जुड़ी थी। मैं बडे मंदिर गई और एक सुंदर अनुभव प्राप्त किया, जिसे एक अलग सत्संग 'मेरी बडे मंदिर की पहली यात्रा' में साझा किया गया है। बड़े मंदिर में अवश्य ही परम शक्ति है। गुरुजी के मंदिर के शांत वातावरण में अत्याधिक ऊर्जा का आभास होता है।

भारत से, हम दुबई गए और अपना फ्लैट खाली करने और वीजा रद्द करने की औपचारिकताएं शुरू कीं। हमने अपना दुबई निवास वीजा रद्द कर दिया और वहां अपना घर खाली कर दिया। हम गुरुवार को बहुत भावुक थे जो कि दुबई में हमारा दूसरा आखिरी दिन था, 14 साल बाद दुबई जैसी अच्छी जगह छोड़ रहे थे।

मुझे बडे मंदिर की याद आ रही थी और मैं गुरुजी के सत्संग में जाना चाहती थी। तुरंत, मैं दुबई में गुरुजी की संगत खोजने लगी। मुझे नहीं पता था कि दुबई में इतना बड़ा, समर्पित गुरुपरिवार है और वे समाना होटल में हर शुक्रवार को गुरुजी के सत्संग की मेजबानी करते हैं। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हम अगले दिन गुरुजी के सत्संग में जा सकते हैं जो 14 साल तक वहां रहने के बाद दुबई में आधिकारिक तौर पर हमारा आखिरी दिन था।

अगले दिन, जब हम सत्संग में गए, तो मेरी आँखों से आँसू बरस रहे थे, जिसके लिए मैं कोई विशेष कारण नहीं बता सकती।

क्या ऐसा था कि मैं १४ साल के बाद दुबई छोड़ रही थी या वे अंतिम दिन गुरुजी के सत्संग में होने की खुशी के आँसू थे या उस अरदास के कारण जो मैं गुरुजी (अपने मन में) कर रही थी कि मुझे ब्रिटेन में बसाने के लिए, गुरुजी को मेरे साथ ब्रिटेन चलना चाहिये, ब्रिटेन में हमारे प्रवास को उतना ही अच्छा बनाने के लिए जितना दुबई में था?

मुझे सुखद आश्चर्य हुआ जब सोनिया आंटी ने मुझे गुरुजी के चरण कमल स्वरूप दिए, मुझे खुशी हुई कि गुरुजी, उनके चरण कमल (स्वरूप) के माध्यम से मेरे साथ आएंगे और मुझे ब्रिटेन में बसाएंगे।

जब मैं ब्रिटेन पहुँची, तो मुझे यह देखकर दुःख और निराशा हुई कि हमारा फ्रिज काम नहीं कर रहा था। क्षमा करें गुरुजी, लेकिन ईमानदारी से कहूं तो मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरे साथ तो गुरुजी आए थे और इस तरह के एक महत्वपूर्ण उपकरण ने काम करना बंद कर दिया था। मकान मालिक से प्रतिस्थापन के रूप में एक नया फ्रिज मिलने

से पहले हम लगभग एक सप्ताह तक बहुत असुविधा से गुजरे। बेशक, नया फ्रिज उत्तम था और किसी भी तरह की अनावश्यक आवाज़ नहीं करता था।

लगभग 3-4 महीने बाद, मेरे पति ने मुझे बताया कि वह व्यापार यात्रा पर ३ सप्ताह के लिए दूर रहेंगे, जो जान कर मैं निराश थी । मैंने उन्हें अपनी चिंताएं बतानी शुरू कर दीं कि जब वह मेरे साथ नहीं होते है, तो मैं अकेले डर जाती हूं (क्योंकि उन दिनों इंटर्नशिप के लिए मेरी बेटी अलग रह रही थी) ।

फिर, एक बहुत ही स्वाभाविक प्रवाह में मेरे मुंह से निकला, "शुकर है, भगवान का शुक्र है कि वो पुराना फ्रिज नहीं है, जिसमें से डरावनी (भयानक) आवाज़े आती थी और मुझे डराती थी। देखो जब गुरुजी ने मुझे एहसास कराया कि उनके चरण कमल के माध्यम से जब वे हमारे घर आए थे तो उन्होनें घर से नकारात्मकता पैदा करने वाले उपकरण को हटाने के लिए उसे खराब करके घर से फ़िकवा दिया ।

उसी दिन गुरुजी ने मुझे कहीं पढ़ा भी दिया कि जब वह आपके घर आते हैं, तो वह सबसे पहले आपके घर से किसी तरह की नकारात्मकता (किसी तांत्रिक या किसी अन्य नकारात्मकता पैदा करने वाले यंत्र) को दूर करते हैं।

मैं बहुत आश्चर्यचकित थी और इस सत्संग को न केवल अगले सप्ताहांत में बर्मिंघम (ब्रिटेन) के सत्संग में बल्कि दुबई में अपनी सितंबर (2019) यात्रा के दौरान भी साझा किया।

अब दिसम्बर 2019 की बात: मैं फेसबुक पर एक विशिष्ट सत्संग पढ़ना चाहती थी जिसके लिए संज्योती आँटी ने मुझे लिंक दिया था। लिंक होने के बावजूद गुरुजी ने मुझे 35 मिनट तक फेसबुक पर लगाया। यह स्पष्ट था कि गुरुजी की कुछ अन्य योजनाएँ थीं क्योंकि मैं लिंक के माध्यम से क्लिक कर सकती थी लेकिन मैंने नहीं किया।

उनकी दिव्य योजना का खुलासा तब हुआ जब उन्होंने मुझे अनु मुरली आंटी (जो भारत में रहती हैं) द्वारा पोस्ट किया गया एक सत्संग पढ़ाया। सत्संग था कि वह घर पर अकेली थीं और रसोई से कुछ डरावनी सी आवाज़ सुन रही थी। वह जांच करने गई लेकिन कुछ नहीं मिला। गुरुजी के सत्संगों को देखने । सुनने के लिए जब वह अपने कमरे में वापस आई, फिर से उन्होने आवाज़ सुनी।

तीसरी बार जब उन्होनें अपने फ्रिज से आवाज़ सुनी तो वो वास्तव में डर गई। वह गई, जाँच की , वापस आई और गुरुजी ने उन्हे दुबई से एक आंटी का सत्संग सुनवाया (वह मेरा जिक्र कर रही थी और मेरे द्वारा दुबई में साझा किए गए फ्रिज सत्संग की बात कर रही थी) जहां आंटी अपने डरावने आवाज़ वाले फ्रिज की बात कर रही थी और कैसे गुरुजी के आते ही उन्होनें नकारात्मकता पैदा करने वाले फ्रिज को हटाने के लिए उसे खराब करके घर से फ़िकवा दिया ।

तब अनु आंटी ने लिखा "संगतजी, क्या आप मानेगे कि जैसे ही मैंने आंटी का सत्संग सुना कि, मेरे फ्रिज ने ठीक से व्यवहार करना शुरू कर दिया और उसमे से आवाज़ आनी बन्द हो गई ।

उसके अनुभव को पढ़कर मैं मंत्रमुग्ध हो गई. वो हम दोनों के लिए एक सत्संग था। मैं काफी उत्साहित थी और अपनी बहन (भारत में) के साथ साझा करना चाहता थी, लेकिन भारत में देर रात हो रही थी, इसलिए मैं उनसे बात नहीं कर सकती थी।

फिर मैंने ब्रिटेन में जॉय आंटी के साथ बातचीत की और उन्हे अनु आंटी के सत्संग को पढ़ने के लिए कहा। जॉय आंटी ने जवाब दिया कि चूंकि वह अपनी मां के साथ बात कर रही थी इसलिए वह बाद में सत्संग पढ़ेगी। मैंने सोचा कि क्या वह मेरे फ्रिज के सत्संग के बारे में जानती भी हैं या नही। इसलिए, मैंने उन्हे लिखा "ठीक है लेकिन इससे पहले कि आप पढ़ लें, मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि क्या आप मेरे फ्रैंच सत्संग से अवगत हैं?"

फिर उनसे पास जो उत्तर आया उसने मुझे और विस्मित कर दिया। उन्होने उत्तर दिया "हाँ, हाँ दी, क्या आप विश्वास करोगे कि अभी मैं अपने मम्मी से आपके उसी फ्रिज सत्संग के बारे में बात कर रही हूँ कि गुरुजी नकारात्मकता को दूर करते हैं" ।

तब लगता है कि गुरूजी ने टेलीपैथी के माध्यम से जॉय आंटी को कहा कि वह देर न करें और मधु के सत्संग को पढ़ें। जब उन्होनें मेरा मैसेज पड़ा जिसमें मैनें उनसे फ्रिज सत्संग साझा किया तो वो दंग रह गई क्योंकि वह भी अपनी मां को फ्रिज सत्संग के बारे में बता रही थी।

मुझे नहीं पता कि गुरुजी यह कैसे करते हैं, एक ही समय में दुनिया के विभिन्न हिस्सों में बसे इतने सारे संगतों को आशीर्वाद देना एक ही सामान्य सत्संग के माध्यम से।

अगले दिन जब भारत में सुबह हुई, तो मैंने सोचा कि मैं अपनी बहन के साथ अद्भुत सत्संग साझा करूंगी। फिर, गुरुजी ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया जब मैंने अपनी बहन का मैसेज पड़ा जिसमे उन्होंने स्वयं अनु आंटी का फ्रिज सत्संग मुझसे साझा किया। वाव क्या संयोग, बहुत ज्यादा संयोग? नहीं, गुरुजी की दुनिया में कोई संयोग या सह-घटना नहीं है। ये आशीर्वाद की एक श्रृंखला है लेकिन जिस तरह से गुरुजी कृपा बरसाते हैं, वह हमारी समझ से परे है।

इस बीच, मैंने अनु आंटी से संपर्क किया और उन्होने पुष्टि की कि वह, वास्तव में मेरे ही साथ हुए गुरुजी के फ्रिज सत्संग का जिक्र कर रही थी ।

शायद यह पर्याप्त नहीं था कि गुरुजी ने हमें फ़िर आश्चर्यचकित किया जब एक और संगत अमित धवन अंकल ने अपने सत्संग को साझा किया । वह गुरुजी के पोस्ट एंव सत्संग पढ़ रहे थे। किसी एक पोस्ट को पढ़ते समय, वह सोच रहे थे और गुरुजी से पूछ रहे थे कि क्या उन सभी पोस्टों व सत्संगों में पाठकों के लिए कोई संदेश होता है या वे केवल पढ़ने के लिए होते हैं। इस बीच, उन्होनें मेरे (फ्रिज) सत्संग को देखा और पढ़ना शुरू कर दिया । जब वह मेरे सत्संग में यह लाइन पढ़ रहे थे कि मेरा फ्रिज भयानक शोर करता था , तो उन्होने अपने फ्रिज को देखा जो ३ महीने पहले रसोई से उनके पलंग के पास रखा गया था, और उन्हे महसूस हुआ कि उनका फ्रिज भी रात में डरावनी आवाज से उन्हे परेशान करता था ।

सत्संग को पूरी तरह से पढ़ने के बाद, उन्होंने अपने फ्रिज को देखा और यह देखकर हैरान रह गए कि उनके फ्रिज ने अचानक शोर करना बंद कर दिया। उन्होंने आगे साझा किया कि वह बहुत जल्दी प्रतिक्रिया नहीं करना चाहते थे क्योंकि यह हो सकता है कि फ्रिज ने अस्थायी रूप से शोर करना बंद कर दिया था, इसलिए उन्होंने खुद को आश्वस्त करने के लिए लंबे समय तक इंतजार किया। जब उन्होंने अपने सत्संग को साझा किया, तो उन्हें यकीन हो गया और खुशी हुई कि उनका फ्रिज सामान्य था और उसमे से भयानक आवाज़ें आनी बंद हो गई थी। वह अपनी दीवार पर लगी घड़ी की टिक-टिक सुन सकते थे, जो पहले नहीं सुन पाते थे, क्योंकि फ्रिज का अजीब शोर उस पर हावी हो जाता था। हम सब देखकर हैरान थे कि हमारे सत्संग कितने शक्तिशाली हैं!

सत्संगों की इन श्रृंखलाओं ने एक बहुत मजबूत संदेश दिया कि हमें अपने सत्संगों को बड़ा या छोटा साझा करना चाहिए। सत्संग आशीर्वाद हैं और गुरुजी को शुकराना करने का एक तरीका है। कौन जानता है कि आपके सत्संग से कब, कहां और किस पर गुरुजी की कृपा होगी ।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

गुरूजी की कृपा से रिश्ते में तनावों से मुक्ति

आज, मैं अपना एक बहुत ही व्यक्तिगत सत्संग साझा करना चाहती हूं, मुझे लगता है कि इन सत्संगों को खुद के लिए रखना अनुचित होगा क्योंकि ऐसे सत्संग ये बताते हैं कि गुरुजी हमें कैसे कैसे आशीर्वाद देते हैं और हमारी संबंध (रिश्तों से जुड़ी) समस्याओं का भी समाधान करते हैं।

मेरी बेटी आरुषी एक बहुत ही प्यारी लड़की है, बहुत विनम्र, दिल से दयालु, और सबसे प्यार करती है। मेरे पति यात्रा करते रहते हैं, इसलिए ज्यादातर मेरी बेटी और मैं ही घर में एक साथ होते हैं। किसी तरह, पीढ़ी के अंतराल के कारण, हम अक्सर तुच्छ मामलों पर तर्क करते थे, जो कई बार जो कई बार गंभीर हो जाते थे।

जब से हम गुरुजी की शरण में आए थे, हम एक साथ सत्संग में जाते थे और ऐसा होता था कि सत्संग के दिन हमारे बीच बड़े झगड़े हुआ करते थे। अक्सर यही कारण था कि मैं उससे सत्संग के दिन घर रहने के लिए आग्रह करती था ताकि हम समय पर निकल सकें लेकिन वह अपने खेल या अन्य गतिविधियों के लिए जाती थी और निर्धारित प्रस्थान समय के करीब ही लौटती थी । मैं चाहती थी कि वह सत्संग के लिए भारतीय सूटों पहनकर ठीक से तैयार होकर चले (जिसकेलिए मैंने हालांकि कभी मजबूर नहीं किया था) और वह सत्संग के लिए जींस में जाती थी ।

जैसे-जैसे हम अधिक से अधिक सत्संग में जाने लगे, हमारे झगड़े और तर्क बढ़ने लगे। ऐसा लग रहा था जैसे कुछ नकारात्मक ऊर्जा हमारे खिलाफ थी। मैंने सुना था कि जब आप सही आध्यात्मिक मार्ग पर होते हैं, तो शैतान आपको विचलित करने की कोशिश करते हैं। यह स्पष्ट हो गया जब हम सत्संग के दिन लड़ते थे, मेरे पति कहते थे कि "क्या यही आप सत्संग से सीखते हैं? सत्संगों में जाने का आप दोनों का कोई उपयोग नहीं है यदि आपको इस तरह का व्यवहार करना है।” मुझे इतना बुरा लगता था कि मेरे गुरुजी और उनके सत्संगों पर उंगलियां उठाई जा रही थीं, लेकिन यह दिन-प्रतिदिन स्पष्ट होता जा रहा था कि शैतान या नकारात्मक ऊर्जा का उद्देश्य हमें सत्संगों में जाने से रोकना था या हमें आध्यात्मिकता के मार्ग से विचलित करना था।

2-3 मौकों पर, ऐसा हुआ कि गुरुजी ने हमें एक दिन में दो सत्संगों के लिए बुलाया और उस दिन हमारे बीच सबसे बुरी लड़ाई हुई। ऐसे ही एक अवसर पर, हम अमृतवेला सत्संग से लौटे और एक छोटी सी बात पर बहस में पड़ गए जो इतनी गंभीर हो गई कि हम दोनों रोने लगे। मुझे उस दिन बहुत दुख हुआ क्योंकि वह रो रही थी। बेशक, एक माँ होते हुए मैं कभी उसकी आँखों में आँसू नहीं देख सकती थी।

हमें अगले सत्संग (दोपहर सत्संग) के लिए तैयार होना था। मेरे पति हमें तैयार होने के लिए कहने लगे। मैंने कहा, "मैं आरुषी के साथ नहीं जा रही हूं, बल्कि किसी अन्य संगत के साथ जाऊंगी"। मेरी बेटी अडिग थी और सत्संग के लिए तैयार होने के लिए नहीं उठी। मेरे पति ने हमसे यह कहना शुरू किया कि हम मेजबान को सूचित करें कि हम सत्संग में नहीं आएंगे। मेरे मन में, मुझे यकीन था कि मुझे सत्संग के लिए जाना चाहिए, लेकिन मैं चाहती थी कि आरुषी आए और माफी मांगे।

मैं गुरुजी के स्वरूप के सामने बैठ गई और इस तरह से बात करने लगी, “गुरुजी, यह क्या हो रहा है? क्या आप नहीं देख रहे हैं कि हमारे रिश्ते में इतनी दरार आ रही है? क्या आप यही चाहते हैं? मुझे पता है कि यह सब काल (शैतान) द्वारा किया जा रहा है और हमें उसे हराना चाहिये लेकिन आप तो शैतान से अधिक शक्तिशाली माने जाते हैं। हैं या नहीं? फिर आप ऐसा क्यों होने दे रहे हैं? गुरुजी, अगर यह शैतान द्वारा किया जा रहा है और यदि आप इसे देख रहे

हैं और यदि आप सबसे शक्तिशाली हैं, तो आपको हमारी मदद करनी ही होगी और इसे रोकना होगा। आपको हमारे रिश्ते को मजबूत करना होगा। आप अपनी संगत के साथ बुरा नहीं होने दे सकते" । मेरी आँखों में आँसू थे और मैं बस यही बोलती जा रही थी "नहीं गुरुजी, नहीं गुरुजी, आप ऐसा नहीं कर सकते"।

थोड़ी देर के बाद, मैंने अपनी बेटी के साथ मामलों को ठंडा करने की कोशिश की, हालांकि मुझे यकीन था कि यह व्यर्थ होगा क्योंकि वह मेरे मौखिक दुर्व्यवहार (गुस्से में कहे गए) से काफी आहत थी।

मैंने उसे अपने फोन मिलाया (यह सोचकर कि वह जवाब नहीं देगी) लेकिन उसने मेरे कॉल का जवाब दिया। फिर मैं इस तरह बोली "आरुषी, मेरी बात ध्यान से सुनो। आप जानते हैं कि सत्संग के लिए जाने पर शैतान सक्रिय हो जाता है और बहुत सक्रिय होता है। यदि आप शैतान को हराना चाहते हैं और यदि आप हमारे गुरुजी का नाम उठाना चाहते हैं, तो कृपया मेरी माफी स्वीकार करें और सत्संग के लिए उठें, क्या आप सहमत हैं? " मुझे आश्चर्य हुआ जब उसने कहा "हाँ, ठीक है"। वाह! मैं दंग रह गई और मुझे यह तुरन्त अहसास हो गया कि हमारे गुरुजी ने खुद को साबित कर दिया है। मैंने गुरुजी को शुकराना किया और हम सत्संग के लिए तैयार हो गए। मेरे पति को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इतनी बड़ी लड़ाई के बावज़ूद हम कितनी अच्छी तरह से बात कर रहे थे और सत्संग के लिए तैयार हो रहे थे।

सबसे अच्छी बात यह है कि उस दिन के बाद से हमने फिर कभी लड़ाई नहीं की। गुरुजी ने हमें आशीर्वाद दिया था और हमेशा के लिए हमारे बंधन को मजबूत किया था। शुक्राना, सबसे प्यारे गुरुजी।

मैं उनकी हार्दिक आभारी हूँ और हर क्षण उनकी कृतज्ञ रह कर जीवन व्यतीत करना चाहूंगी।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏🏻

न छोड़ना मेरा हाथ गुरूजी

मेरे प्यारे प्यारे गुरूजी, न छोड़ना मेरा हाथ
क्या करूँ मैं ऐसा, कि पाऊँ तुम्हारा साथ
मेरे प्यारे प्यारे गुरूजी, न छोड़ना मेरा हाथ

मालिक रब माँ पियो, तुम्ही मेरे नाथ
मेरे प्यारे प्यारे गुरूजी, न छोड़ना मेरा हाथ

ब्लेस करो हमें गुरूजी, रख के सर पर अपना हाथ
अपनाके मुझे गुरूजी, सवारो मेरा कल और आज
मेरे प्यारे प्यारे गुरूजी, न छोड़ना मेरा हाथ

मेरा जीवन समझो पौधा, बन जाओ इसकी खाद
बस जाओ इस मनमे, रहे ये पाक और साद

धन्य हुई मै पाके, आपका प्यार और लाड
बर्थडे, करवाचौथ, वेकेशन सब में कराया आपने राज
अंग संग रहकर मेरे, सवारे सारे काज
मेरे प्यारे प्यारे गुरूजी, न छोड़ना मेरा हाथ

नया जनम हुआ जैसे, आपको पाने के बाद
भक्ति यूहीं बनी रहे, करू हर पल तुमको याद
मेरे प्यारे प्यारे गुरूजी, न छोड़ना मेरा हाथ
क्या करूँ मैं ऐसा, कि पाउँ तुम्हारा साथ

रचयिता: गुरूजी की सेवादार मधु मदान
(मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा)

गुरूजी के चरन कमल स्वरुप

गुरूजी की कृपा से, मेरे अंकल और मुझे गुरुजी के स्वरूप, उनके चरण कमल, या कभी-कभी बड़े मंदिर से कार स्वारूप प्राप्त करके और यहाँ ब्रिटेन में संगत को देने की सेवा मिलती है। हम विनम्रता से इस सेवा को करते हुए खुद को विनम्र और धन्य महसूस करते हैं।

पिछले साल, कई संगतों को गुरुजी के चरण कमल स्वरूप देने के बाद, मेरे पास केवल २-३ चरण कमल स्वरूप बच गए और वो भी बाद में संगत को दिए जाने थे।

एक बार एक संगत ने गुरुजी के चरण कमल के लिए अनुरोध किया था और मैंने उन्हें अगले सत्संग में देने का वादा किया था। अगले सप्ताहांत जब मुझे सत्संग के लिए जाना था, तो मैंने उनके लिए गुरुजी के चरण कमल स्वरूप को निकाला और देखा कि वह सबसे आखिरी था। हालाँकि मैं गुरुजी के स्वरूप को संगत के साथ साझा करने में खुशी महसूस करती हूँ, लेकिन जब यह आखिरी था, तब मुझे थोड़ा दुःख हुआ और मैंने अपने मन में गुरुजी से कहा "ओह गुरुजी! यह आखिरी आज चरण कमल स्वरूप जा रहा है" । फिर मैं सत्संग के लिए तैयार होने लगी।

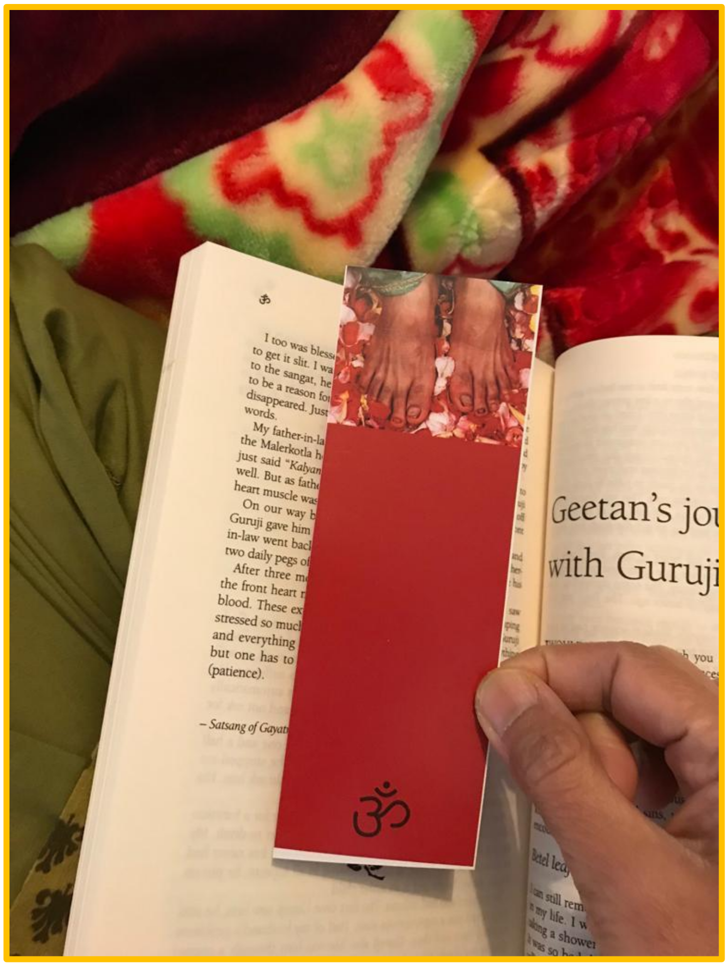

जब मैंने कपड़े पहने और तैयार हो गई अंकल के साथ सत्संग जाने के लिए, तो सोचा कि जब तक अंकल नहीं आते हैं, तब तक एक या २ सत्संग पढ़ लिए जाएं । मैंने पढ़ने के लिए गुरूजी का ग्रन्थ दिव्य आभा उठाया और मैंने गुरूजी से कहा कि मेरे लिए तय करें कि कौन सा सत्संग मेरे द्वारा पढ़ा जाए और उसी के अनुसार पृष्ठ खोलें।

इसे ध्यान में रखते हुए, मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और कहा, "जय गुरु जी" और खोला। मैंने जो देखा उसे देखकर मैं दंग रह गई। वो गुरुजी का चरण कमल स्वरूपी एक बुकमार्क था । गुरुजी सचमें हमारे मन को पढ़ते हैं और सभी विकारों को जानते हैं।

मैं थोड़ी देर पहले एक संगत के लिए अंतिम चरण कमल स्वरूप लेते हुए थोड़ी उदास थी और कैसे गुरुजी ने मुझे इस बुकमार्क के माध्यम से एक और चरण कमल स्वरूप के साथ आशीर्वाद दिया, जिसके लिए मैं गुरुजी की बहुत कृतज्ञ हूँ।

इससे फिर साबित होता है कि परम पिता परमात्मा हमारे गुरुजी कितने प्यारे, मेहरबान और दयालु हैं।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

गुरूजी अपने स्वरूप से उत्तर देते हैं

एक बार मैं गुरुजी (उनके स्वरूप) के साथ बैठी थी और उनके सभी आशीर्वादों के लिए, उन सभी सुंदर सत्संगों की यादों को ताजा कर रही थी जिनसे वे मुझे आशीर्वाद देते रहे हैं ।

उन क्षणों में से एक में, मैंने गुरुजी के स्वरूप को देखा और इस तरह से बात करना शुरू किया "अर्रे गुरुजी, ज़रा हस दो, कृपया मुस्कुराएं"।

फिर अपने अंगूठे से, गुरुजी के स्वरूप में उनके निचले होंठ को छू रही थी (छोटे बच्चों की तरह ही उन्हें हँसाने की कोशिश कर रही थी) और "गुरुजी ज़रा हस दे तू, हस दे तू, हस दे ज़रा (पुरानी हिंदी फिल्म गीत "गोरी ज़रा हस दे, तु हस्दे तू, हस्दे ज़रा" पर आधारित) गाने लगी ।

हमारी इस प्यारी सी बातचीत के बाद, मैंने कुछ सत्संग पढ़ने के लिए अपना कंप्यूटर खोला और मेरे सामने जो आया उसने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया। गुरूजी का यह स्वरुप, जहाँ वह अपने अंगूठे के साथ, अपना निचला होंठ नीचे खींच रहे हैं और प्यारी सी मुस्कुराहट दे रहे हैं।

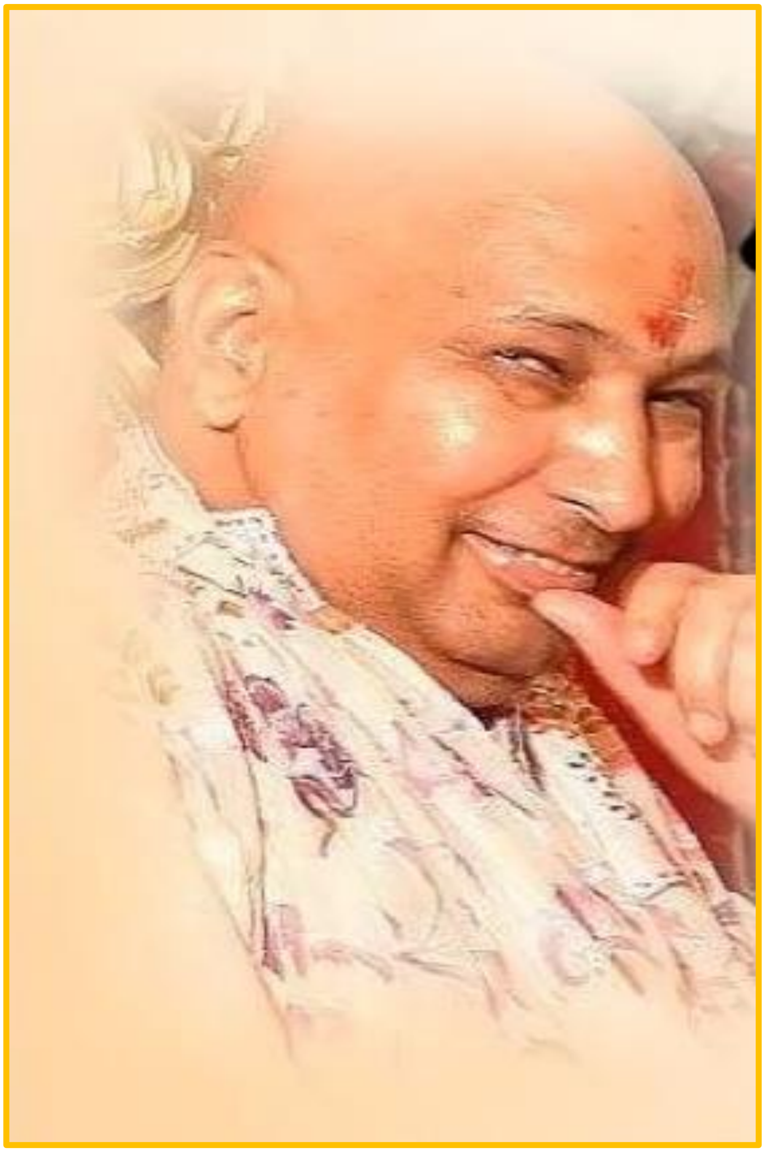

कितना सुंदर है ये-हैना? यह केवल सह-घटना नहीं हो सकती है। मैंने गुरुजी की यह तस्वीर (स्वरुप) पहले कभी नहीं देखा था। इससे पता चलता है कि हमारी छोटी इच्छाओं में भी गुरुजी हमें निराश नहीं करते हैं।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

गुरुजी केवल भाव को देखते हैं और वे इसे स्वीकार भी करते हैं

एक बार मैं सत्संग में जाने से पहले लंगर सेवा के लिए रोटियां बना रही थी। मैं सेवा अच्छे तरीके से करना चाहती थी और चाहती थी कि रोटियां गोल और नरम बनें। कुछ रोटियां गोल नहीं थीं जिससे मुझे निराश हो गई। फिर, मैंने मन ही मन गुरुजी से कहा कि रोटियों के आकार को न देखें बल्कि मेरी श्रद्धा और भाव को देखें। मैंने अपने मन में गुरुजी से पूछना शुरू कर दिया, "गुरुजी, आपको मेरी श्रद्धा दिखती है? बोलो आपको मेरी श्रद्धा दिखती है?" (गुरुजी, क्या आप मेरी श्रद्धा । भाव देखते हैं?)

बाद में जब मैं सत्संग के लिए निकली और अपने रास्ते में थी, तो मैंने एक संगत अंकल को मैसेज किया कि वह अपने स्थान पर अगले दिन के सत्संग के लिए संगतों की गिनती के बारे में बतायें, ताकि मैं उस हिसाब से दाल सेवा की योजना बना सकूं। संगत गिनती के साथ उत्तर देते हुए, उन्होंने मुझे मैसेज किया "वैसे मधु, मेरी पत्नि (आँटी) चाहती है कि गुरुजी को आपके द्वारा भोग की पेशकश की जाए क्योंकि उनको आपकी श्रद्धा बहुत भाती है जिस श्रद्धा के साथ आप सेवा करते हैं"।

मैं हैरान थी कि गुरुजी ने तुरंत कैसे जवाब दिया। कुछ समय पहले मैं गुरुजी से पूछ रही थी कि क्या वे मेरी श्रद्धा देखते हैं। देखिए कितनी खूबसूरती से उन्होंने उत्तर दिया।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

गुरुजी का आशीर्वाद: प्रस्तुतीकरण में सजीवता

एक बार मुझे कहा गया कि १ महीने बाद होने वाली बैठक में मुझे एक विशिष्ट प्रस्तुति देनी है। हालाँकि मुझे एक महीने का समय दिया गया था, फिर भी मैं अच्छी तरह से तैयारी नहीं कर सकी क्योंकि मैं उस मीटिंग तक हर रोज़ बेहद व्यस्त थी।

बैठक से 3 दिन पहले, मैंने गुरुजी से कहा कि कृपया मुझे प्रस्तुति के लिए मदद करें, क्योंकि मैं काम के बोझ से पागल हो रही थी और मेरे सिर पर डेडलाइन पड़ रही थी।

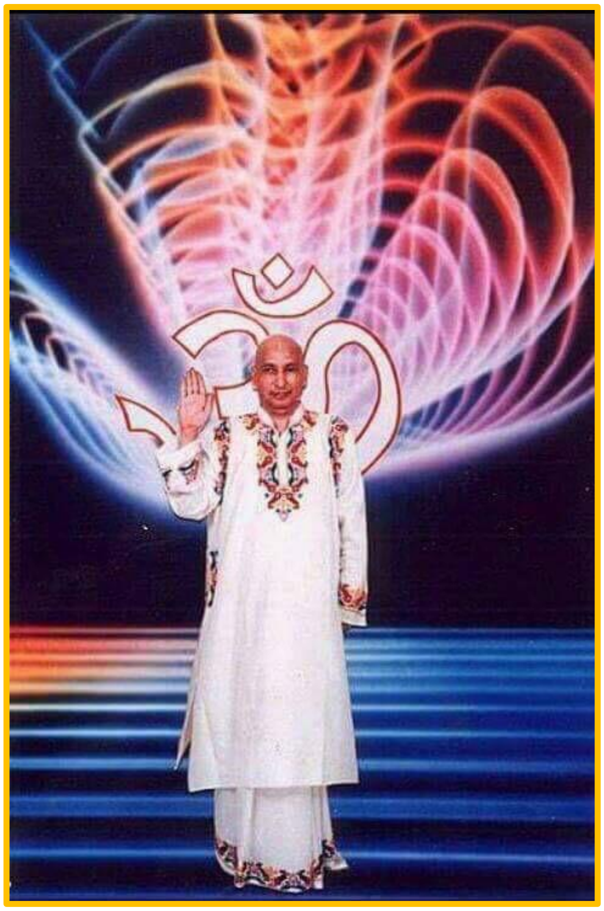

मैंने कुछ स्रोतों से सामग्री इकट्ठा करने के लिए कम से कम समय बिताया, कुछ चित्र । प्रवाह चार्ट यहां वहाँ से लिए और प्रस्तुति के प्रारूप और स्वरूप पर ध्यान दिए बिना उन्हें स्लाइड में डाल दिया। । मैं देख सकती थी कि कुछ स्लाइड्स हमारे कॉर्पोरेट लेआउट में थीं जबकि अन्य नहीं थीं। मैंने गुरुजी से कहा "मैं इसे अंतिम रूप दे रही हूं, आप कृपया देख लेना"। मैंने इसे अपने बॉस को भेज दिया।

प्रस्तुति के दिन, घर से निकलते समय, मैंने गुरुजी से कहा "चलो मेरे साथ, प्रस्तुति तो आप ही दोगे"।

प्रस्तुति से पहले, मैंने अपने मन में मंत्र जाप किया और गुरुजी से प्रार्थना की कि मेरा साथ दें क्योंकि मुझे पता था कि समय के अभाव के काण प्रस्तुति इतनी अच्छी नही बनी थी।

मुझे यकीन नहीं हो रहा था जिस प्रवाह और आत्मविश्वास से मैंने प्रस्तुत करना शुरू किया। हर कोई सामग्री से चकित था और सबसे अच्छी बात तब थी जब एनीमेशन एक स्लाइड पर दिखाई दी, जहां मैंने सिर्फ एक सरल प्रवाह चार्ट डाला था। सभी एनिमेटेड प्रदर्शन की सराहना कर रहे थे जो मुझे भी पसंद आया। एक मिनट के लिए, ऐसा लगा जैसे किसी धार्मिक धारावाहिक में भगवान आशीर्वाद रूप में हथेली दिखा कर दूर से चक्र फेंक कर जादुई चमत्कार कर रहें हों ।

गुरुजी फिर से मेरे बचाव में आए और मुझ पर अपनी कृपा बरसाई।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

कार की खरीद में गुरुजी का आशीर्वाद

अप्रैल 2019 में, जब मेरी बेटी आरुशी का जन्मदिन आ रहा था, तो मैंने उसे एक कार देने का सोचा। मैंने कार का चयन उस पर छोड़ दिया और मैंने उसे बताया कि वह कार का चयन करने के बाद मुझे बतादे ताकि मैं भुगतान की व्यवस्था कर सकूं। मेरे पति उस समय भारत में थे।.

उसने ऑनलाइन शोध करना शुरू किया और अपने दोस्तों से सलाह ली। चूंकि वह एक नई ड्राइवर थी (भारत में भी कभी कार नहीं चलाई), और एक युवा (कम उम्र) छात्र भी, बीमा की दृष्टि से एक प्रयुक्त (पूर्व इस्तेमाल की हुई) कार खरीदना एक बेहतर विकल्प था। इस प्रकार, एक प्रयुक्त कार की तलाश करने का निर्णय लिया गया।

उसने मैनुअल ड्राइविंग सीखी थी, लेकिन उसके दोस्तों ने उसे सलाह दी कि ऑटोमैटिक ड्राइव करना आसान है और आसानी से मैनेज हो जाता है, इसलिए उसने ऑटोमैटिक कार खरीदने का मन बना लिया था। वह इस्तेमाल की गई कार (लेकिन अच्छी हालत में) की खोज के लिए अपने दोस्तों के साथ विभिन्न शोरूमों में गई।

गुरुवार शाम को उसने मुझे सूचित किया कि उन्होंने एक कार का चयन किया है जो उनके अनुसार सबसे अच्छा सौदा है। वह चाहती थी कि मैं उसके साथ अगले दिन, आखिरी सौदा करने और सफेद, ऑटोमैटिक कार को देखने के लिए शोरूम में उसके साथ आऊँ। मैं उसे बताती रही कि उसकी पसंद जो भी है, मेरे द्वारा ठीक है और मैं पैसे का भुगतान करूंगी और वह अपनी पसंद की कार खरीद सकती है। लेकिन वह मुझे दिखाने और मेरी सहमति लेने के लिए अड़ी रही । इस प्रकार, हम सहमत हुए कि अगले दिन (शुक्रवार) मैं कार खरीदने के लिए उसके साथ शोरूम जाऊँगी जिसके लिए मैं मैं ऑफिस से जल्दी निकल जाऊंगी ।

शुक्रवार को, मैंने अपने सहयोगी से ऑफिस में परामर्श किया। उनका मानना था कि मैन्युअल ड्राइविंग सीखने के बाद, उन्हें पहली कार मैनुअल कार लेनी चाहिए। मैं उससे सहमत हई और आरुशी को फोन पर सूचना दी। उसने अपने दोस्तों के साथ चर्चा की, आगे की खोज की, और निष्कर्ष निकाला कि वह मैनुअल कार ही खरीदेगी ।

मैं पहले घर पहुँची और उसके (और उसके दोस्तों) के आने और मुझे शोरूम तक ले जाने का इंतज़ार कर रही थी। प्रतीक्षा करते समय, मैंने ऑनलाइन सत्संग सुनने की सोची। मैं जाने से पहले केवल एक सत्संग सुन सकती थी।

गुरुजी ने मुझे जो सत्संग सुनाया, वह कार खरीदने के बारे में था। दंपति कार खरीदने गए और अपने कार पंजीकरण में नंबर 7 को देखकर खुश हुए। मैं बहुत हैरान थी क्योंकि उस दिन से पहले मैंने कभी कार खरीद के बारे में सत्संग नहीं सुना था। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि मैंने एक यादृच्छिक सत्संग पर क्लिक किया था और इसमें कार खरीद का उल्लेख था। यह बहुत ज्यादा संयोग था कि अगले कुछ मिनटों में मैं एक कार खरीदने जा रही थी और यहाँ मैं उसी विषय के बारे में सत्संग सुन रही थी। मुझे लगा जैसे गुरुजी मुझे नंबर प्लेट में ७ नंबर देखने का संदेश दे रहे थे।

जब हम शोरूम में पहुँचे, तो आरुषि ने मुझे वह कार दिखाई जो उसने चुनी थी। मैं उसकी पसंद को केवल हाँ कहने की मानसिकता के साथ गई थी। लेकिन सत्संग सुनने के बाद, मैं 7 नंबर वाली नंबर प्लेट की कार खरीदने की इच्छुक थी।

हम टेस्ट ड्राइव के लिए उस कार में बैठ गए जिसे आरुशी नें चुना थ। आरुशी (और उसके दोस्त) पहले ही टेस्ट ड्राइव ले चुके थे लेकिन इस बार जब वे कार में मेरे साथ थे, तो उन सभी ने गियर बदलने के दौरान थोड़ी अटपटी सी आवाज़ महसूस की, जिसके लिए सेल्समैन ने कहा कि वह कोई बड़ा मुद्दा नहीं है और उसे ठीक किया जा सकता है।

परीक्षण ड्राइव के बाद शोरूम पहुंचने पर, जब वे चर्चा कर रहे थे, मैं नंबर प्लेट में नंबर 7 वाली कार को खोजने के लिए केवल नंबर प्लेट को देखते हुए (कारों को बिल्कुल नहीं) शोरूम के चारों ओर खड़ी कारों को देखने लगी।मुझे खुद पर हँसी आ रही थी कि मैं केवल नंबर प्लेटों पर , नीचे मुँह कर देख रही थी। जल्द ही, मुझे नंबर प्लेट में नंबर ७ वाली एक कार दिखी और जब कार को देखा, तो देखा कि वह नीले रंग की थी।

मुझे पता था कि मेरी बेटी को काले या सफेद या हल्के टोन जैसे सरल रंग पसंद हैं और वह इस पर विचार भी नहीं करेगी। मेरे दिमाग में, मैं उम्मीद और प्रार्थना कर रही थी कि कार का विवरण स्वीकार्य हो, ताकि मैं उसे रंग के लिए मना सकूँ। मैंने उन्हें बुलाया और वो नीली कार (नंबर प्लेट में नंबर 7 वाली) दिखाई।

मैं हैरान थी जब आरुशी ने कहा, "माँ, यह अच्छा रंग है"। फिर हम सब उसकी टेस्ट ड्राइव के लिए गए और उसे काफी अच्छा (पहले वाली कार से बेहतर) पाया। इसके अलावा, यह एक मैनुअल कार थी जो अब हमारी प्राथमिकता है। कुल मिलाकर, यह एक बेहतर कार थी।

हमने तब पवन अंकल, जो भारत में थे, से सहमति लेने के बारे में सोचा। हमने उन्हे कार की तस्वीर और विशिष्टताऐं भेजी। उन्होनें हमसे कहा कि हम उन्हें कुछ समय दें ताकि वह अपने दोस्त (जो कार उद्योग में है) के साथ चर्चा कर सकें और उसकी राय ले सकें।

हमें उनके विषय विशेषज्ञ मित्र द्वारा अनुशंसित कार के रूप में उनसे एक कार चित्र प्राप्त हुआ। हम यह जानकर चौंक गए कि यह तस्वीर उसी कार की थी, जिसके बारे में हम बात कर रहे थे (ब्लू, मैनुअल, नंबर प्लेट में नंबर 7) । क्या यह महज सह-घटना (संयोग) थी? या गुरुजी की पुष्टि?

हमने उन्हे बताया कि उनके मित्र ने उसी कार की तस्वीर भेजी थी, जिस पर हम विचार कर रहे थे। हो सकता है कि उनका दोस्त ऑनलाइन सबसे अच्छे सौदों (कार) की तलाश कर रहा था और उन सब मे से शायद यही उनकी पसंद भी थी। उनकी पसंद वही कार थी, जिस पर हम विचारविमर्श कर रहे थे जो आश्चर्यचकित करने वाली बात थी। यह तो निश्चित हो गया था कि कार अच्छी थी। हमने औपचारिकता की और कार खरीदी।

चूंकि कार गुरुजी का आशीर्वाद थी, इसलिए हम शोरूम से घर तक के पहले ड्राइव के दौरान कार में उन्हें बड़े आदर से (उनका बड़ा स्वरूप) लाए। यहां तक कि हमने सीट बेल्ट से भी गुरुजी के बड़े स्वरूप को सुरक्षित किया। अगले पृष्ठ पर चित्र पर नजर डालें कि कैसे गुरुजी कार में बैठे थे।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏🏻

गुरुजी: हमारे पिता, हमारे रक्षक और जीवन दाता।

पवन फरवरी में भारत गए और उन्हें२३ फरवरी के अंत में ब्रिटेन वापस आना था । हमने सोचा कि ब्रिटेन से फ्रेम करना बहुत महंगा है और हमारे पास सत्संग से पहले ब्रिटेन में फ्रेम कराने का पर्याप्त समय भी नहीं होगा, इसलिए हमनें भारत से फ्रेम कराने का फैसला किया।

प्रवीण अंकल ने पवन अंकल को उनसे गुरुजी का स्वरूप लेने के लिए एक विशेष तारीख को बड़े मन्दिर बुलाया, लेकिन उस दिन वे नहीं दे पाए। पवन को दूसरे दिन बुलाया गया था और फिर किसी कारण से, वे गुरुजी का स्वरूप नहीं दे सके। ऐसा २-३ बार हुआ क्योंकि गुड़गांव में वार्षिक सत्संग और कुछ अन्य व्यस्तताओं के कारण बडे मंदिर के सेवादार व्यस्त थे।

मैं थोड़ा चिंतित हो गई, इसलिए प्रवीण अंकल को फोन किया। वह मेरी दुर्दशा को समझते थे कि मुझे हमारे घर में पहले सत्संग के लिए गुरुजी के स्वरूप की इच्छा थी।

यह बुधवार (देर शाम) था और मेरे अंकल की वापसी की उड़ान शुक्रवार दोपहर थी। प्रवीण अंकल ने मुझे गुरुवार शाम को पवन अंकल को बड़े मन्दिर भेजने के लिए कहा। मैंने अपनी व्यथा व्यक्त की कि मेरे अंकल गुरुवार को बडे मंदिर आने के लिए तैयार नहीं होंगे, यह जानते हुए कि उनका प्रस्थान शुक्रवार के लिए निर्धारित था। मैंने प्रवीण अंकल से पूछा कि क्या किसी तरह से गुड़गांव में मेरे अंकल को गुरुजी का स्वरूप दिया जा सकता है। फिर उन्होंने मुझसे कहा कि चिंता न करें और पवन अंकल का नंबर उन्हें दे दें और पवन अंकल को समझाने और बुलाने के लिए उन पर छोड़ दें। उन्हें पूरा यकीन था कि गुरुजी पवन अंकल को बडे मंदिर बुलाएंगें और मुझे स्वरूप मिलेगा।

गुरूजी ने गुरुवार को पवन अंकल को बडे मंदिर बुलाया और अंत में उन्हें अपने स्वरूप रुपी आशीर्वाद दिया। स्वरूप को प्राप्त करने में देरी के होते, मेरे अंकल के पास फ्रेम कराने के लिए पर्याप्त समय नहीं था। मैंने उन्हें तत्काल के लिए फोटो स्टूडियो को अनुरोध करने के लिए जोर दिया। उन्होंने स्टूडियो में लेमिनेशन और फ्रेमिंग के लिए स्वरूप दिया, कुछ ही घंटों में वापस पाने के लिए। जब वे स्टूडियो में गए, तो उन्होंने ग्लास फ्रेमिंग की थी (सामान्य प्लास्टिक फ्रेमिंग के बजाय) क्योंकि ग्लास फ्रेमिंग में प्लास्टिक फ्रेमिंग की तुलना में कम समय लगता है।

शुक्रवार को, पवन अंकल दुबई के लिए रवाना हो गए, जहां उन्हें व्यापार बंद करने हेतु गोदाम को खाली करने की प्रक्रिया करनी थी। पवन के अधिकांश कंपनी कर्मचारियों का वीजा पहले से ही रद्द कर दिया गया था और उन्हें भारत वापस भेज दिया गया था। अब केवल पवन अंकल और १ कार्यकर्ता ही रह गए थे जो गोदाम को खाली करने के लिए सब कुछ कर रहे थे।

चूंकि मैनपावर की कमी थी, इसलिए पवन अंकल को खुद ही उच्चस्तरीय पैलेट तक पहुंचने के लिए फोर्कलिफ्ट पर चड़ना पड़ा था। जब वह उच्च स्तर पर फोर्कलिफ्ट के किनारे पर थे, वह अचानक बहुत ज़ोर से गिर गए । गिरने की आवाज़ से कार्यकर्ता और पड़ोसियों का ध्यान आकर्षित हुआ। वे दौड़े और उन्हें फर्श पर पड़ा देखा। वे सभी पवन को अस्पताल ले जाने का सोचने लगे लेकिन पवन अंकल को सचेत देखकर आश्चर्यचकित रह गए। और देखा कि बस उनकी बांह पर एक खरोंच थी। वे सभी आश्चर्यचकित हो गए और कहने लगे कि आप जिस भी इष्ट देवता की पूजा करते हैं या जिस भी परमेश्वर को मानते हैं, समझो आज तो उन्होनें ही आपको बचाया है । किसी दिव्य शक्ति नें ही आज आपको बचाया। यह काफी स्पष्ट था कि गुरुजी ने उन्हे बचाया।

पवन अंकल ने घर पहुंचकर हमें अपनी घायल (खरोंच) बांह दिखाई (यहाँ की तस्वीर में दिखाया गया है)। हमने गुरुजी का शुक्राना किया। हमारे आश्चर्य के लिए, जब उन्होंने स्वरूप की श्रिंक रैप पन्नी खोली, तो हमने पाया कि कांच का फ्रेम टुकड़ों में पूरी तरह से टूट चुका था। मुझे तभी याद आया जो पहले कहीं पड़ा था कि यदि गुरुजी का स्वरूप खंडित हो जाए, खो जाए या टूट जाए, तो समझना कि गुरुजीने बहुत बड़े कष्ट से बचाया और कष्ट को अपने ऊपर ले लिया है । यह सच था क्योंकि ऊँचाई से गिरने के बावजूद गुरुजी ने पवन अंकल को बचाया था।

पवन अंकल को बचाने के लिए गुरुजी का बहुत धन्यवाद, अनन्तम शुक्राना । मुझे लगता है कि उनकी सुरक्षा कवच २४।७ मेरे और मेरे परिवार के ऊपर है। हमें देखने के लिए गुरुजी धन्यवाद। मुझे लगता है कि उनकी सुरक्षा कवच 24/7 मेरे और मेरे परिवार के ऊपर है।

गुरुजी हमारे पिता, हमारे रक्षक, हमारे सर्वस्व हैं ।

🙏🕉️ शुक्राना गुरूजी 🕉️🙏🏻

मेरे यात्रा कार्ड पर गुरुजी की मेहर

मैं 2 बसें (एक तरफ) बदलकर काम करने के लिए जाती हूं । मैं यात्रा के लिए अपने मासिक बस-पास का उपयोग करती हूं। डायरेक्ट डेबिट सेट अप के अनुसार, बस कंपनी मेरा खाता हर महीने की 5 तारीख को डेबिट करती है। जब मैं छुट्टी पर जाती हूं, तो मैं बस कंपनी को अपने बस-पास को अस्थायी रूप से निलंबित करने के लिए सूचित करती हूं ताकि वे मुझसे शुल्क न लें लेकिन नीति के अनुसार, वे न्यूनतम १ महीने के लिए निलंबित कर सकते हैं और वह भी भुगतान चक्र के अनुसार । इसका मतलब यह है कि भले ही मैं ३ सप्ताह के लिए दूर रहूं और ३ सप्ताह के लिए बस का उपयोग नहीं करूँ , मेरा पास एक महीने के लिए निलंबित रहेगा।

यह 27 सितंबर 2019 (शुक्रवार) को हुआ: छुट्टी के बाद, मैं भारत से लौट आई थी और मुझे 30 सितंबर (सोमवार) को अपने काम में शामिल होना (ज्वाइन करना) था। क्योंकि मेरा बस-पास 4 अक्टूबर तक (न्यूनतम निलंबन नीति और भुगतान चक्र के अनुसार) निलंबित था, मुझे काम तक यात्रा के लिए साप्ताहिक या दैनिक यात्रा कार्ड खरीदना था लेकिन ३० सितंबर को घर से निकलने से पहले मैं इसे खरीदना भूल गई । मेरा मोबाइल डेटा मोबाइल ऐप के माध्यम से खरीदने के लिए पर्याप्त नहीं था।

सख्त बस-पास निलंबन नीति के अनुसार, मेरा बस-पास 5 अक्टूबर तक निष्क्रिय (निलंबित) था। जब मैं बस स्टॉप पर पहुंचने वाली थी, मुझे याद आया कि मेरा पास निलंबित था, और मेरे पास कोई यात्रा पास नहीं था। बस ड्राइवर से खरीदना एकमात्र विकल्प था। मैं ऐसा नहीं करना चाहती थी क्योंकि ऑनलाइन या मोबाइल ऐप से खरीदारी करने की तुलना में यह महंगा है।

मैंने अपने मन में गुरुजी से अनुरोध किया "गुरुजी, कृपया मदद करें, मुझे देर हो रही है, मैं ड्राइवर से खरीदना नहीं चाहती"। गुरुजी ने मन में एक विचार डाला कि मुझे मशीन पर बस पास स्वाइप करके चैक करना चाहिए। मैं बस में चढ़ गई और पास को कम से कम आशाओं के साथ स्वाइप कर दिया क्योंकि यह असंभव था कि यह निलंबन अवधि के दौरान काम कर सके। मैं इसे काम करते देख दंग रह गई॥ मैं खुश थी लेकिन लगा कि यह सिर्फ एक बार की किस्मत हो सकती है और अगली बस के लिए मुझे पास खरीदना होगा। दोबारा, मैंने दूसरी बस में प्रयास करने के बारे में सोचा और इसने वहां भी काम किया।

मैं दफ्तर पहुंची और सोच रही थी कि क्या साप्ताहिक पास खरीद लूँ लेकिन गुरुजी ने मुझे खरीदने से रोके रखा। शाम को मुझे यकीन था कि यह काम नहीं करेगा क्योंकि मैं ३ बार भाग्यशाली नहीं हो सकती लेकिन गुरुजी की कृपा से यह काम कर गया। निलंबन अवधि के दौरान मेरा बस-पास हर दिन काम करता रहा । यानी, मेरा निलंबित बस पास 20 बसों (रोजाना 4 बसें) में काम किया।

मैं घर आई और बस-पास कम्पनी से निलंबन पुष्टिकरण ईमेल पढ़ने के लिए अपना इनबॉक्स चेक किया। विभिन्न माध्यमों से यह पुष्टि हो गई (पक्का था) कि उस अवधि के लिए बस-पास को निलंबित कर दिया गया था और ऐसे असम्भव था जिससे यह काम कर सके लेकिन गुरुजी ने इसे संभव बना दिया।

आज तक, मुझे नहीं पता चला है कि निलंबन अवधि में पिछले वर्ष यह बस पास कैसे काम करता हा। छुट्टी पर जाने से पहले, मैंने कई बार बस कंपनी से अनुरोध किया था कि वे इसे केवल ३ सप्ताह (मेरी छुट्टी की अवधि) के लिए निलंबित करें पर वे नही माने । वे बहुत सख्त हैं।

यहां यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि कुछ महीने पहले जब मैंने अपने नए हैंडबैग का उपयोग करना शुरू किया था, तो मैं इस बस पास को उसी छोटी जेब में रखने की कोशिश कर रही थी जहां मैंने गुरुजी के छोटे स्वरूप को रखा था।

तब मुझे लगा कि मुझे उनके स्वरूप के साथ कुछ और नहीं रखना चाहिए । लेकिन गुरुजी के वचन (वहमों में नहीं पड़ना चाहिए) याद आ गए। इसलिए, मैंने खुद को यह कहते हुए कि शायद गुरुजी बस-पास को आशीर्वाद देना चाहते हैं, बस-पास को उसी जेब में रखा जिसमें गुरुजी का स्वरूप रखा था।

फिर मैं खुद को जवाब दे रही थी कि गुरुजी बस-पास को कैसे आशीर्वाद दे सकते हैं? किस तरह से वो पास को आशीर्वाद दे सकते हैं जब यह सब इतना व्यवस्थित होता है कि मेरा खाता मासिक रूप से डेबिट हो जाता है जो पास को सक्रिय रखता है, तो गुरुजी को आशीर्वाद देने के लिए क्या है? क्षमा करें गुरुजी लेकिन यह मैंने तब सोचा था, मैं मूर्ख थी! गुरुजी ने साबित किया कि कैसे वह हमारी कल्पना से परे जादुई (दिव्य) तरीके से कुछ भी आशीर्वाद दे सकते हैं। उन्होंने वास्तव में मेरे बस पास को आशीर्वाद दिया जो हमेशा मेरे बैग में उसी जेब में रखा था जहां गुरुजी का स्वरूप था।

हालांकि मुझे यकीन था कि यह गुरुजी का आशीर्वाद था जिसने निलंबन अवधि के दौरान बस पास को चला दिया, फिर भी मुझे संदेह था। इसलिए, मैंने अपने मन में गुरुजी से पूछना शुरू किया "गुरुजी कृपया मुझे बताएं कि क्या आपने पास को चलाया था? या क्या यह आकस्मिक रूप (अचानक) या यह संयोग से काम किया"?

जब मैं बस से उतर गई, तो मैं कुछ खरीदने के लिए एक स्टोर में गई। हम इस स्टोर में १०% छूट पाने के लिए अपनी बेटी के छात्र कार्ड का उपयोग करते हैं। उस कार्ड की अवधि समाप्त हो गई जब हम छुट्टी पर थे और मैंने छुट्टी से लौटने के बाद इसे नवीनीकृत करने के बारे में सोचा था। अब तक, मैंने इसे नवीनीकृत नहीं किया था। मैंने अपनी खरीदारी करने के बाद इसकी कोशिश की और यह उम्मीद के मुताबिक काम नहीं किया। मैं बिल्कुल हैरान नहीं थी क्योंकि यह निलंबित था।

मैं दुकान से बाहर आई और ऐसा लगा जैसे कि गुरुजी, टेलीपैथी से मुझे बता रहे थे "देख लै, ये निष्क्रिय कार्ड काम नहीं करा क्योंकि यह मेरे द्वारा धन्य नहीं था। अब तो तुझे यकीन हो गया कि तेरे बस-पास ने काम किया क्योंकि वह मेरे द्वारा धन्य था? " गुरुजी हमारे प्रश्नों का उत्तर देते हैं और हमारे विचारों को पढ़ सकते हैं।

🙏🕉️ शुक्राना गुरूजी 🕉️🙏

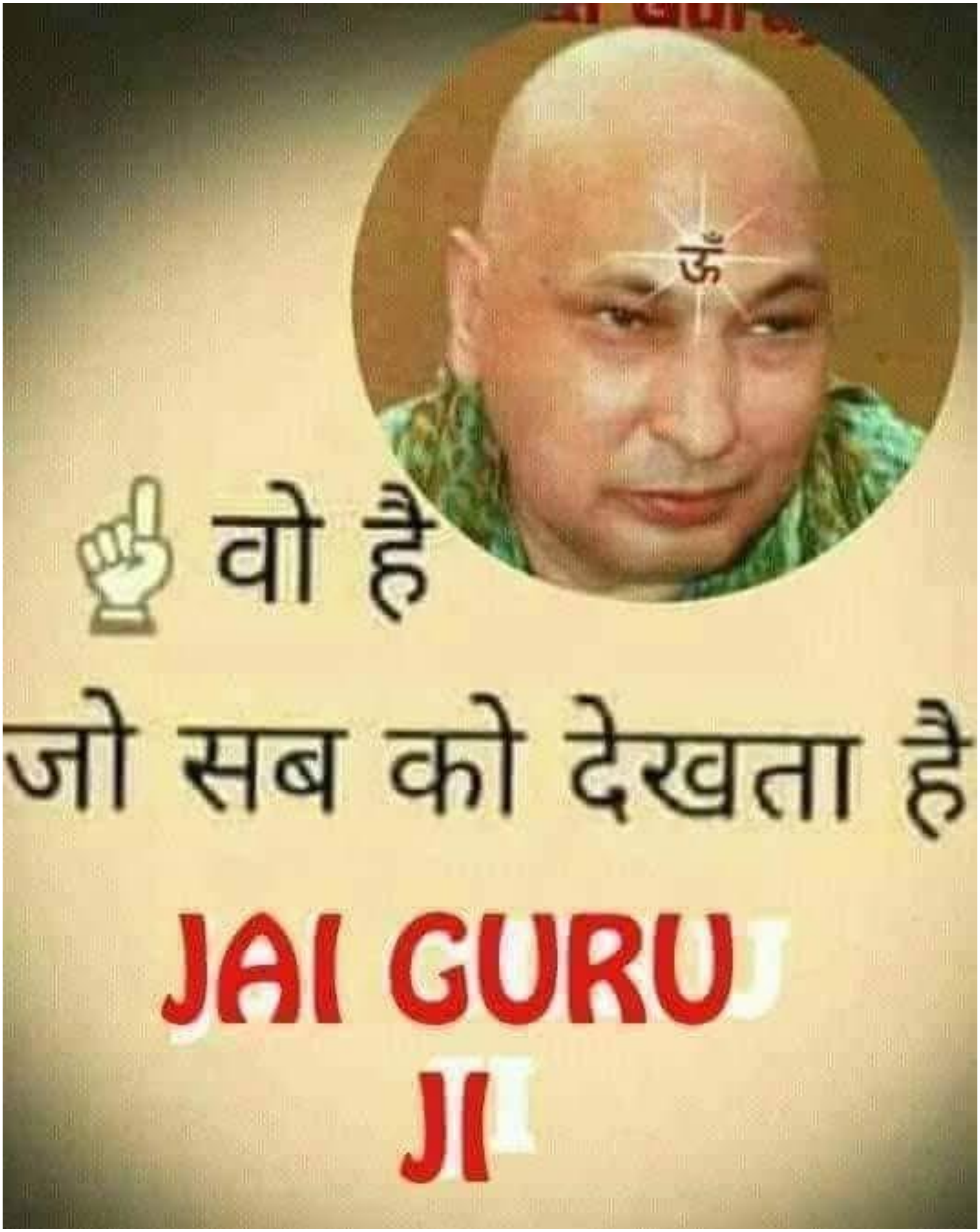
ॐ
वो है
जो सब को देखता है
JAI GURU
JI

इस पुस्तक के दौरान गुरूजी की प्रेरणा, मेहर और मार्गदर्शन

जैसे-जैसे मैं इस पुस्तक के निष्कर्ष पर पहुँचती हूँ, मुझे कुछ सुंदर अनुभवों को साझा करने का आग्रह मिल रहा है। इस पुस्तक को बनाने की प्रक्रिया के दौरान जैसे कि गुरुजी पूरे समय एक प्रेरणा और मार्गदर्शक के रूप में मेरे पास रहे हैं।

अपने सत्संगों को संकलित करने के लिए गुरुजी की हुकुम पाने के बाद, मैं सोच रही थी कि उचित पुस्तक प्रकाशन के लिए बहुत सारे संसाधनों और व्यावसायिकता (पुस्तक लेखन में) की आवश्यकता है जो कि मेरे पास नहीं है इसलिए यह पुस्तक कैसे होगी। क्या कभी ऐसा होगा? मैं गुरुजी से निवेदन कर रही थी कि वह मुझे रास्ता दिखाएँ।

मार्च के अंत में जब लॉकडाउन शुरू हुई थी, तब मुझे लगा कि पुस्तक बनाने और विमोचन के लिए अभी समय सही है लेकिन फिर से आत्मविश्वास की कमी थी। मेरा मार्गदर्शन करने के लिए मैंने गुरूजी से अरदास की। अगली सुबह 29 मार्च को, मुझे डिंपल रूपानी आँटी की पीडीएफ पुस्तक के साथ नीती आँटी का संदेश मिला। पीडीएफ पुस्तक को कंप्यूटर और फोन पर आसानी से खोला और पढ़ा जा सकता है। मानो जैसे कि गुरुजी मुझे पीडीएफ पुस्तक पर विचार करने के लिए मार्गदर्शन कर रहे थे।

तब नीती आंटी ने मुझसे पूछा "तुम भी एक पीडीएफ़ पुस्तक क्यों नहीं जारी करती क्योंकि तुम्हारे पास इतने सत्संग हैं?" वे मुझे विश्वास दिलाते हुए गुरुजी के संदेश जैसे थे। मैंने, फिर गुरुजी से पुस्तक को जारी करने की तिथि पूछी। मुझे नंबर ७, गुरुजी का दिन सोमवार या गुरुवार चाहिए था और अगर कोई शुभ दिन हो -पूरनमाशी (पूर्णिमा) या शिवरात्रि की तरह । जब मैंने खोज शुरू की, तो मुझे यह जानकर खुशी हुई कि ७ मई, गुरुवार को बुध पूर्णिमा पड़ेगी। इससे बेहतर दिन नहीं मिल सकता था। मुझे मार्गदर्शन देने के लिए गुरुजी को शुकराना ।

कवर पृष्ठ या मुख्य पृष्ठ (स्वरूप) पहले से ही गुरुजी ने एक संगत आंटी को दिखाया था इसलिए यह तय था कि कौन सा स्वरूप मुख्य पृष्ठ पर होगा, लेकिन मेरे पास उस स्वरूप की बहुत कम दृश्यता (अच्छी गुणवत्ता नहीं) वाली तस्वीर थी। मैंने एक घंटे से अधिक समय एक बेहतर गुणवत्ता वाली तस्वीर के लिए ऑनलाइन देखा, लेकिन व्यर्थ।

मदद के लिए गुरुजी को देखा। मेरी बेटी आरुषि ने इमेज अपलोड करके सर्च करने का आइडिया दिया। परिणामों के बीच, संजीव मोंगा अंकल द्वारा अपने अकाउंट पर पोस्ट किए गए इस स्वरूप के साथ एक इंस्टाग्राम पोस्ट मिला। मैंने उनके साथ व्हाट्सएप पर संपर्क किया और पूछा कि क्या उनके पास उस स्वरूप का एक बेहतर गुणवत्ता वाला स्वरूप है।

वह आश्चर्यचकित था कि मुझे उनका नंबर कैसे मिला, लेकिन मुझे उनके इंस्टाग्राम अकाउंट से मिला था, जिससे वह अनजान थे (ऐसा लगता है)। मुझे उनसे कवर पेज के लिए उच्च गुणवत्ता वाला स्वरूप मिला और उनके स्वयं के सत्संग भी पढ़ने को मिले। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि ये वही अंकल हैं जिनके सत्संग को मैंने पहले कई बार पढ़ा था कि कैसे उन्होंने ७ जुलाई को सुबह ३ बजे गाजियाबाद से बडे मंदिर के लिए ४५ किमी की दूरी तय की थी, ताकि वो सबसे पहले गुरुजीके जन्मदिन पर गुरुजी को शुभकामनाएं दे सकें। गुरुजी उन पर बहुत मेहर करें ।

जब मैं पूरी तरह से गुरुजी की उपस्थिति को महसूस कर रही थी, मैंने गुरुजी से अपना नियमित प्रश्न पूछना शुरू कर दिया "मैं न तो साईं बाबा की अनुयायी थी और न ही भगवान शिव की और न ही गुरु नानक देवजी की, तो आपने मुझे अपनी शरण में कैसे लिया? जीवन भर मैंने माता रानी और हनुमान जी की पूजा की थी। गुरुजी की शरण में आने के बाद मैंने पूजा कक्ष में एक बैग के अंदर हनुमान चालीसा रखा था।

अगले दिन हम गुरुपरिवार को (जूम पर) एक समूह में हनुमान चालीसा का पाठ करना था। १५ प्रतिभागियों में से प्रत्येक को एक बार हनुमान चालीसा पढ़ना था। इससे पहले सुबह जब मैं मंत्र जाप कर रही थी, तो गुरुजी ने मुझे थैला खोलकर हनुमान चालीसा निकलवाई थी। वैसे भी, मुझे ज़ूम पर पढ़ने के लिए हनुमान चालीसा पुस्तक बाहर निकालनी ही थी। पाठ शुरू होने से ठीक पहले, मैंने गुरुजी को देखा और उन्हें बताया कि मैं उनकी शरण में आने से पहले हनुमान भक्त थी, लेकिन अब गुरुजी के अलावा मुझे और मेरी आत्मा को कुछ प्रसन्न नहीं करता ।

जब मैंने हनुमान चालीसा पढ़ी और अंतिम पृष्ठ पर पहुँची, तो मैं अंत में शिव स्तुति को देखकर दंग रह गई, जिसे मैं 20 वर्षों से अधिक समय से हनुमान चालीसा के साथ अनजाने में ही पढ़ रही थी। अनजाने में ही सही, मैं 2 दशक से अधिक समय से शिव स्तुति कर रही थी। ऐसा लगा जैसे गुरुजी ने मुझे एक लंबे समय से लंबित जवाब दिया है कि मैं उनकी शरण में कैसे आई।

एक और अनुभव (सत्संग): कल मैं काम के बाद बहुत थक गई थी और जैसे ही मैंने काम खत्म किया, मैं जम्हाई ले रही थी और मुझे बहुत नींद आ रही थी। मुझे अंतिम ३ लेकिन बड़े सत्संग लिखने थे और प्रूफ-रीडिंग आदि करने थे, मैंने गुरुजी से अनुरोध किया कि मुझे इस पुस्तक पर जागृत होने और काम करने की हिम्मत दें क्योंकि रिलीज़ की तारीख 2 दिन दूर है। गुरुजी ने मुझे आशीर्वाद दिया और मुझे नहीं पता कि क्या हुआ कि मैं जागी रही और 1.30 बजे तक लिख रही थी, फिर 3 बजे तक प्रूफ रीडिंग करने के लिए रुक गयी, अमृतवेला किया और 3.30 बजे सोई।

इस पुस्तक में गुरुजी एक मजबूत प्रेरणा रहे हैं और गुरुजी ने इस पूरी पुस्तकयात्रा के दौरान मुझे बहुत कुछ सिखाया है ।

इस हिंदी पुस्तक की यात्रा के दौरान गुरुजी की कृपा और मार्गदर्शन

जब गुरुजी की कृपा से अंग्रेजी पुस्तक सफलतापूर्वक जारी हुई, तो मुझे लगा कि गुरुजी का जैसे आदेश हो की यही किताब हिंदी में भी बनाई जाए । लेकिन मेरे सामने एक चुनौती थी कि अनुवाद कैसे किया जाए। पहले मैंने ऑटोमैटिक ट्रांसलेशन (ऑनलाइन ट्रांसलेशन) के बारे में सोचा था लेकिन इस तरह से मुझे पता है कि कई बार अर्थ खो जाता है। तब मैंने अपने भाई सुनील अरोड़ा अंकल से सलाह ली और गुरुजी ने मुझे उनके माध्यम से कुछ संगतों की तलाश करने के लिए निर्देशित किया, जो कि अनुवाद की सेवा ले सकें । उस समय संजीव मोंगा अंकल ही मेरे दिमाग में आए, जो गाजियाबाद में रहते हैं और जिनके बारे में मैंने पहले उल्लेख किया है। वह बहुत विनम्र संगत हैं।

मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें किसी ऐसे सँगत के बारे में पता है जो अंग्रेज़ी पुस्तक का हिंदी अनुवाद कर सके। उसने जवाब दिया कि वह ऐसी किसी संगत को नहीं जानते हैं लेकिन वह अपने विभिन्न समूहों के माध्यम से पूछेगे कि क्या किसी को अनुवाद सेवा में रुचि है।

एक मिनट से भी कम समय में उन्होंने जवाब दिया कि गजल आँटी की दिलचस्पी है। दरअसल वह इतने लंबे समय से गुरुजी को कोई भी सेवा देने के लिए कह रही थी। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह स्वयं एक अनुवादक है और उनकी माँ एक हिंदी शिक्षिका हैं। गुरुजी की योजना निस्संदेह सर्वश्रेष्ठ है।

अंग्रेजी पुस्तक की रिलीज़ की तारीख के लिए गुरुजी से पूछते हुए, मैं उसे गुरु पूर्णिमा या शिवरात्रि पर लॉन्च करने के लिए उत्सुक थी, लेकिन यह जानते हुए कि शिवरात्रि पहले से ही फरवरी में बीत चुकी है और गुरु पूर्णिमा ५ जुलाई को पड़ेगी, जो मैंने सोचा था, बहुत देर हो जाएगी पहली किताब के लिए।

इस बार अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद सेवा शुरू करते समय, गजल आँटी ने मुझसे पूछा कि क्या उनके लिए कोई समयरेखा है। मैंने उनसे कहा कि हम हिंदी पुस्तक की लॉन्च तिथि के लिए गुरुजी से पूछेंगे और वह उसी तरह मार्गदर्शन करेंगे जैसे उन्होंने अंग्रेजी पुस्तक के लॉन्च के लिए निर्देशित किया था (जो 7 मई, गुरुवार बुद्ध पूर्णिमा को जारी की गई थी) ।

मैंने हिंदी पुस्तक की रिलीज़ की तारीख पूछने के लिए गुरुजी के स्वरूप को देखा और फिर सोमवार (शिवजी का दिन) और गुरुवार को खोजा ताकि यह पता चल सके कि कोई 16 या 7 या 25 तारीख सोमवार या गुरुवार को पड़ रही है क्योंकि ७ गुरुजी की संख्या है । इसलिए मैंने 3 तारीखें गजल आँटी को दी: 25 मई (सोमवार), 25 जून (गुरुवार) और 5 जुलाई (रविवार) पूर्णिमा । जब उन्होने 5 जुलाई को एक विकल्प के रूप में देखा, तो खुशी से झूम उठी क्योंकि 5 जुलाई को गुरु पूर्णिमा है। उस समय गुरुजी ने मुझे टेलीपैथी के माध्यम से यह महसूस कराया कि " इहो ते चांहदी सी तू कि गुरु पूर्णिमा ते रिलीज होवे"।मुझे यह जानकर बहुत ख़ुशी हुई कि यदि अंग्रेजी नहीं बल्कि हिंदी पुस्तक गुरु

पूर्णिमा पर रिलीज़ होगी, जो मेरी हार्दिक इच्छा थी क्योंकि गुरु पूर्णिमा सबसे शुभ हिंदू त्योहारों में से एक है और इस दिन, शिष्य अपने गुरु और भगवान को याद करते हैं और उनका आभार मानते हैं।

यहाँ तक कि अनुवाद (अंग्रेजी-हिंदी) सेवा करते समय, गजल आँटी को भी लगा कि गुरुजी उनकी हर कदम पर मदद कर रहे हैं। गुरूजी ने मानस अंकल, शिवांगी आँटी और रोहित अंकल के रूप में उनकी मदद करने के लिए भेजे। पिछले ३ वर्षों से वह गुरुजी से जुड़ी थी और गुरुजी को सत्संग में घर बुला रही थी। हर दिन अरदास करती कि गुरुजी उनके घर आएं और उनके घर पर भी सत्संग हो। हाल ही मे गुरुजी ने उन्हे उनकी सेवा और गुरुजी के प्रति प्यार के लिए आशीर्वाद दिया ॥ उनके घर सत्संग हुआ उनकी इस अनुवाद सेवा की यात्रा के दौरान गुरूजी उन्हें अपनी उपस्थिति दिखाते रहे । वह बहुत धन्य महसूस कर रही हैं। और वो बहुत खुश हैं ।

मैं हिंदी पुस्तक के लिए भी ऐसा कोइ फ़ॉन्ट उपयोग करना चाहती थी, जो गुरुजी से संबंधित हो जैसे कि 'यूनिवर्स लाइट' का इस्तेमाल अंग्रेजी पुस्तक (गुरुजी द्वारा निर्देशित) के लिए किया गया था। लेकिन मैंने यह सोचकर अपनी इच्छा को त्याग दिया कि यह हर बार मेरी इच्छा के अनुसार नहीं हो सकता। लेकिन गुरुजी ने मुझे निराश नहीं किया और मुझे 'निर्मला यूआई' नाम का एक फ़ॉन्ट मिला। मैं फॉन्ट का नाम पढ़कर उत्साहित थी, यह जानते हुए कि हमारे गुरुजी का नाम (श्री) निर्मल सिंह है।

अंग्रेजी पुस्तक से हिंदी पुस्तक के लिए अनुवाद करते हुए, मैं सोच रही थी कि हर कविता के अंत में हिंदी में कैसे लिखा जाए। अंग्रेजी संस्करण की तरह, मैं, बिना किसी घमंड या दिखावे के, यह बताना चाहती थी कि ये काव्य पंक्तियाँ गुरुजी के लिए मेरा प्यार हैं (मेरे द्वारा लिखित हैं लेकिन गुरुजी की प्रेरणा से. लिखवाने वाले वो हैं)), मैं कोई क्रेडिट नहीं लेना चाहती थी इसलिए सोच रही थी कि कैसे कहूँ कि मेरे हाथ ज़रूर चले लेकिन सब उन्होंनै ही किया है इसीलिए शुक्राना उनका और सारी सराहना भी गुरुजी की ही होनी चाहिए । मैं तब दंग रह गई जब गुरूजी ने मुझे भगवान के लिए 'ग्लोरीफाई गॉड' शब्दों का इस्तेमाल करने के लिए निर्देशित किया । अंग्रेजी पुस्तक के लिए गुरूजी ने मुझे इतना उत्तम वाक्यांश निर्देशित किया (आल द ग्लोरी गोज़ टू हिम) । लेकिन उस वाक्यांश का शाब्दिक हिंदी अनुवाद है 'सारी महिमा उनको जाती है' जो मुझे उतना अच्छा नहीं लगा। मैं सोच रही थी कि हिंदी संस्करण में कैसे लिखूं। मैं यह कहन चाहती थी कि हालांकि ये काव्य पंक्तियाँ मेरे द्वारा हैं लेकिन मेरे द्वारा कुछ भी नहीं है, सभी वास्तव में केवल उन्ही से प्रेरित और किए जाते हैं। सब करन करावण वही हैं, मेरा कुछ नहीं है। मैंने कुछ समय के लिए सोचा, गुरुजी से पूछा ओर मै हैरान थी कैसे गुरुजी ने मार्गदर्शन किया।

उन्होंने मुझे अपनी ही ब्लैस की हुई साइट 'गुरुजीमहाराज.कॉम' पर हिंदी सत्संग को पड़ने का विचार दिया। क्या आप सोच सकते हैं किस सत्संग ने मेरा ध्यान आकर्षित किया ? पहल ही हिंदी सत्संग जो गुरुजी ने मुझे दिखाया, उसका शीर्षक था 'मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा'।

कितना सही, गजब का है, वही जो मैं कहना चाहती थी और खोज रही थी? कितनी खूबसूरती से वह मार्गदर्शन करते हैं! शुकराना गुरुजी!

अब जब पुस्तक पूरी होने के कगार पर है, तो मैंने गुरुजी से पूछा कि आप यह हिंदी पुस्तक कैसे जारी कराएंगे। अगले दिन ही, एक प्रिय और विनम्र सेवादार संगत सोनिया कथूरिया आँटी ने मुझे अपना परिचय देते हुए कहा कि वह अपने फेसबुक पेज ‘ब्लैसिंग्स’ के माध्यम से और गुरूजी की कृपा से गुरु पूर्णिमा पर हिंदी पुस्तक ‘मेरे गुरुजी की महिमा’ का शुभारंभ कराएंगी। इतनी जल्दी मेरी अरदास सुनने के लिए गुरुजी को शुकराना।

हाँ, भगवान गुरुजी हैं और गुरुजी भगवान हैं। मुझे नहीं पता कि मै कैसे उनका धन्यवाद करूं। मैं हर साँस में उनको याद करती हूँ और गुरुजी द्वारा निर्देशित सही रास्ते पर चलने की कोशिश कर रही हूं। हर बार जब मैं प्रार्थना करती हूं, तो तो मैं उनसे गलतियों और अपराधों की क्षमा मांगती हूं । सदैव उनकी शरण में रहने की प्रार्थना करती हूँ ।

गुरुजी को बहुत प्यार और सत्कार, जय गुरूजी ।

वर्तनी त्रुटियों की जाँच करने के लिए सत्संग से अद्‌भुत मार्गदर्शन

यह हाल ही में हुआ क्योंकि हिंदी पुस्तक के विमोचन का समय निकट आ रहा है।

2 दिन पहले, मुझे इस पुस्तक को पूरा करने के लिए समय कम लग रहा था क्योंकि मेरे काम की परियोजनाओं की समय सीमा निकट आ गई थी और इस हिंदी पुस्तक की रिलीज़ की तारीख भी निकट थी।

मुझे लगभग 10-15 सत्संगों का त्रुटि सुधार करना बाकी था। मैंने अपने आप से कहा कि मैं जितना भी कर सकती हूं, उसे करने की कोशिश करूंगा और शेष को छोड़ दूंगी। इसका मतलब है कि कुछ त्रुटियां रह जाने की संभावना है। फिर कानो पर हेडफ़ोन लगाया और इस हिंदी पुस्तक के लिए काम करते समय ज़ूम पर लाइव सत्संग (बडे मंदिर सेवादारों द्वारा ज़ूम पर आयोजित लाइव सत्संग साझा सत्र) सुनना शुरू कर दिया।

क्या आप मानेगे? कि गुरुजी ने मुझे एक पुराने संगत का सत्संग सुनाया। उनका कहना था कि गुरुजी कभी कभी कुछ संगत को अपने सत्संगों को एक सीडी पर लाने के लिए कहते थे।इसी तरह, गुरुजी ने उन्हें भी बताया और गुरुजी ने उनके कानों में वर्तनी की त्रुटियों के लिए जाँच कर लेने को कहा। यह सुनते ही मैं सन्न रह गई। क्या यह इतना विचित्र नहीं है? गुरुजी ने मुझे निर्देशित किया कि मैं कोई त्रुटि न छोड़ूं। लगभग कुछ मिनट पहले मैं सोच रही थी कि मुझे कुछ त्रुटियां छोड़नी पड़ सकती हैं क्योंकि मेरे पास सभी सत्संगों के प्रूफ रीडिंग । एडिटिंग को पूरा करने का समय नहीं होगा।

गुरुजी: आप शब्दों से परे बहुत अच्छे और अद्‌भुत हैं।

🙏🕉 शुक्राना गुरूजी 🕉🙏

आभारव्यक्ति

इस पुस्तक सेवा के लिए गुरुजी को शुक्राना ।

उनके प्यार के लिए ओर इस पुस्तक की प्रेरणा स्रोत बनने के लिए हमारी सबसे प्यारी अविनाश आंटी जी को मेरा हार्दिक प्यार भरा धन्यवाद। वह मुझे गुरुजी द्वारा माँ के रूप में ब्लैस की गई हैं। प्यार ओर ईमानदार सेवा की देवी मेरी प्रिय अविनाश आंटी जी के प्रति मैँ बहुत आभारी हूं।

इस खूबसूरत यात्रा को संकलन करने की प्रोत्साहना के लिए दोस्तों और परिवार को मेरा हार्दिक आभार । मैं अपनी बहन मंजू भाटिया को धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने मुझे जीवन का सबसे बड़ा उपहार दिया और मुझे गुरुजी से जोड़ा। इस अद्‌भुत आध्यात्मिक यात्रा में मेरा समर्थन करने के लिए मेरी मां को मेरा प्यार।

गजल हंस आंटी को उनकी बहुमूल्य अनुवाद सेवा के लिए हार्दिक धन्यवाद और गहरा आभार। अनुवाद मे सेवा, सहयोग के लिए मानस अंकल, शिवांगी आँटी, रोहित अंकल को बहुत धन्यवाद।

इस पुस्तक में मेरी मदद करने के लिए मैं संज्योति आँटी की भी आभारी हूँ।

सोनिया कथूरिया आँटी के प्यार ओर समर्थन के लिए आभार व गहरी कृतज्ञता। इसके अलावा गौरव कुमार अंकल का योगदान भी सराहनीय है और मैं उनकी ईमानदार सेवा और सहयोग के लिए आभारी हूं।

मैं मेरे भाई सुनील अरोड़ा की सदा आभारी हूं, जिनके बिना, यह पुस्तक असम्भव थी । गुरुजी सुनील को असीम आशीर्वाद दें।

गुरुजी: आपकी असीम अनुकम्पा ओर अनेक आशीर्वाद प्रदान करने के लिए मैं एक बार फिर आपका धन्यवाद करती हूँ। गुरुजी आप सदैव मुझे अपने हृदय में और मन में रखना।

जय गुरुजी ।

मधु मदान

madhumadan2003@yahoo.co.in

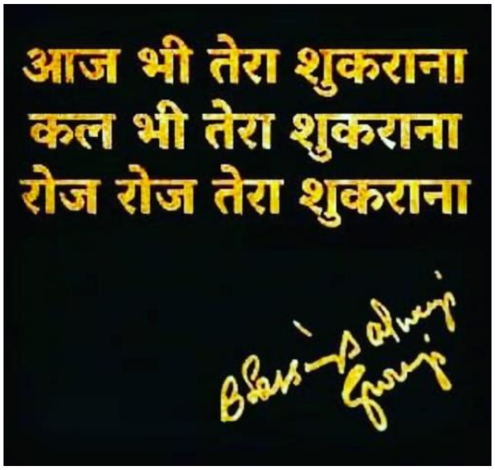

आज भी तेरा शुकराना
कल भी तेरा शुकराना
रोज रोज तेरा शुकराना

Blessings always Guruji

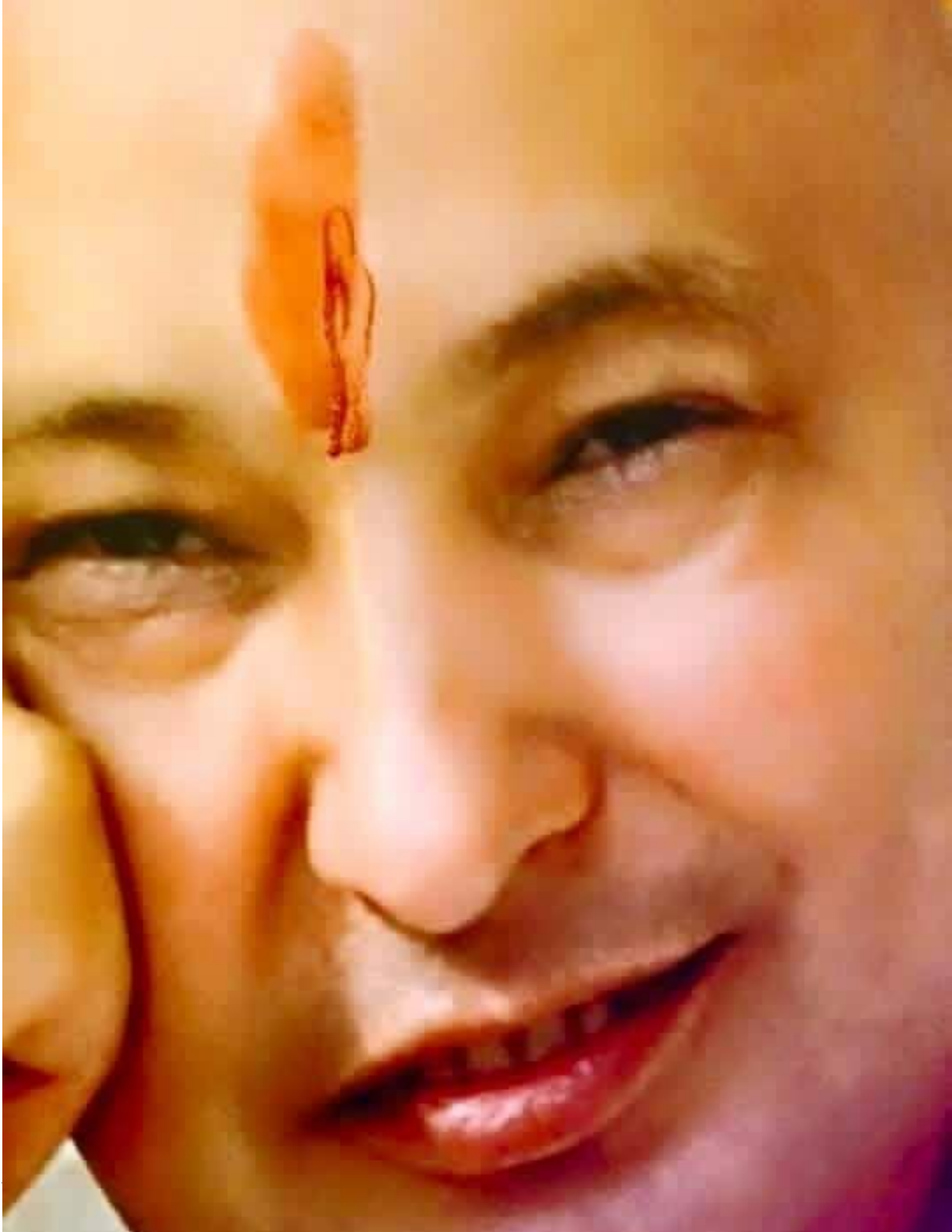ASHRAM